अर्थशास्त्र-शिक्षण
[TEACHING OF ECONOMICS]

(For B. Ed. Students)

तृतीय संशोधित एवं परिवर्द्धित संस्करण

लेखक
गुरुसरनदास त्यागी, एम.ए., एम.एड.
लेक्चरार इन एजूकेशन
आर० ई० आई० टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज,
दयालबाग, आगरा

विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

प्रकाशक
विनोद पुस्तक मन्दिर
रांगेय राघव मार्ग, आगरा–२

तृतीय संस्करण : १९६८

मूल्य : ४ ००

हिन्दी प्रिन्टिङ्ग प्रेस, आगरा
[१५१०६७]

परम आदरणीय पूज्य

पिताजी

को

सादर समर्पित

तृतीय संस्करण के प्रति दो शब्द

प्रस्तुत पुस्तक का तृतीय संस्करण पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे परम हर्ष हो रहा है। इस नवीन संस्करण को आगरा, मेरठ, कानपुर, राजस्थान तथा उदयपुर आदि विश्वविद्यालयों के बी० एड० के नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार परिवर्द्धित किया गया है। यदि प्रस्तुत संस्करण से छात्राध्यापकों को लाभ हो सकेगा तो मैं अपने प्रयास को सफल समझूंगा। आशा है, सुधीजन एवं विज्ञ-पाठक अपने ठोस सुझाव देकर अनुगृहीत करेंगे।

दीपावली सं० २०२४
१०२, स्वामी नगर
दयालबाग, आगरा

—गुरुसरनदास त्यागी

प्राक्कथन

स्वतन्त्र भारत मे आज हम जब राष्ट्र की सर्वाङ्गीण उन्नति के लिए सतत प्रयत्नशील हैं, देश के अभ्युत्थान के लिए, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विकास करने के लिए हम जुट गये हैं, ऐसे समय में भारतीय जनता के स्तर को उठाने और देश मे सच्चे 'लोकतन्त्रात्मक गणराज्य' की स्थापना करने लिए यह आवश्यक है कि देश के नागरिक अधिकाधिक शिक्षित हो, वे राजनीतिक दृष्टि से जागरूक हो तथा आर्थिक दृष्टि से सच्चे उपभोक्ता भी बन सकें। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए देश मे विद्यालयो की अधिकाधिक स्थापना होती जा रही है। जनता और सरकार दोनो ही इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बडे मनोयोग से जुट गये हैं। अतः इन विद्यालयो मे प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियो को सम्यक् शिक्षा देने के लिए, उन्हे आत्मनिर्भर बनाने के लिए तथा उनमे सच्ची आर्थिक, राजनीतिक नागरिकता का विकास करने के लिए प्रशिक्षित अध्यापको की नितान्त आवश्यकता है। आज के इस वैज्ञानिक युग मे जब प्रत्येक विषय में विशेषीकरण की आवश्यकता है उस समय अध्यापक को प्रशिक्षित करना राष्ट्रीय जीवन के लिए अनिवार्य एव हितकर है। इसीलिए हमारी सरकार अधिकाधिक प्रशिक्षित अध्यापको को तैयार करने के लिए बहुत से प्रशिक्षण महाविद्यालय खोल रही है।

इस बढते हुए प्रशिक्षण कार्य मे, जहाँ हम अध्यापको को अधिकाधिक प्रशिक्षित कर रहे हैं, वहाँ यह भी आवश्यकता है कि राष्ट्रभाषा हिन्दी मे ऐसे ग्रन्थ लिखे जायें जिनमे शिक्षा एवं विषय प्रतिपादन तथा शिक्षण के मूल-तत्त्वो और सिद्धान्तो का समावेश हो। शिक्षण अपने मे एक कला है और शिक्षा का महत्त्वपूर्ण अग भी। परन्तु आजकल हिन्दी मे 'शिक्षण कला' पर मौलिक पुस्तको का अभाव सा है। अर्थशास्त्र के शिक्षण के लिए भी हिन्दी मे प्राथमिक पुस्तकें दुर्लभ ही हैं। अत इस पुस्तक की रचना बी० एड०, एल० टी० तथा बी० टी० कक्षा के विद्यार्थियो की अर्थशास्त्र-शिक्षण की कठिनाइयो और आवश्यकताओ को ध्यान मे रखकर की गई है। यदि प्रस्तुत 'अर्थशास्त्र-शिक्षण' शिक्षको और छात्राध्यापको को एक नयी चेतना और अन्तर्दृष्टि प्रदान करने मे किञ्चित भी सहायता प्रदान करती है, तो लेखक अपने को कृतकार्य

समझेगा। मनोवैज्ञानिक पद्धतियों के आधार पर अर्थशास्त्र के शिक्षण में बहुत सहायता मिलती है। आशा है 'अर्थशास्त्र-शिक्षण' इस कार्य में कुछ सहायता प्रदान कर सकेगी।

इस कृति के वर्तमान स्वरूप के लिए लेखक अपने सुहृदय मित्र और सहयोगी अध्यापक श्री नारायनसिंह दुबे का हृदय से आभारी है जिन्होंने पाण्डुलिपि पढ़कर भाषा संशोधन और परिमार्जन कर महान् सहायता पहुँचाई है।

—गुरुसरनदास त्यागी

विषय-सूची

अध्याय ९

अध्याय १०

अध्याय ११

अध्याय १२

अध्याय १

अर्थशास्त्र का परिचय
(Introduction to Economics)

"Political Economy has to do with the relations of men living in society, so far as these relations tend to satisfy the wants of life and concern the efforts made to provide for all that is generally understood by material welfare." —*Charles Gide*

अर्थशास्त्र क्या है ? (What is Economics)

सामाजिक दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति दूसरे से सम्बन्धित है क्योकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अर्थशास्त्र इन्ही सामाजिक रूप से सम्बन्धित मनुष्यो की आर्थिक क्रियाओ (Economic activities) का अध्ययन करता है। प्रत्येक प्राणी की कुछ न कुछ आवश्यकताएँ होती हैं चाहे वह मनुष्य हो, कीडा-मकोडा हो या पशु-पक्षी। सभी अपनी भूख को शान्त करने के लिए प्रयास (Effort) करते हैं। सभी को आहार की आवश्यकता होती है। परन्तु इन सब मे मनुष्य ने अधिक मानसिक प्रगति (Mental development) की है। मनुष्य अपनी भौतिक, शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक आवश्यकताओ की पूर्ति विचारणा और चिन्तन द्वारा करता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि 'आर्थिक समस्या' क्या है ? मनुष्य के जीवन में समय-समय पर विभिन्न प्रकार की समस्याएँ आती हैं। उनमे कुछ आर्थिक होती हैं और कुछ अनार्थिक। आर्थिक समस्याओं की दो विशेषताएँ हैं :

(१) सर्वप्रथम यह है कि हम सब मनुष्यो की कुछ न कुछ आवश्यकताएँ होती हैं (All of us feel Wants)।

(२) दूसरी विशेषता यह है कि जिन साधनो से हम अपनी आवश्यकताएँ पूर्ण करते हैं, वे सीमित हैं (The resources in men, material, or time are limited or scarce)।

साधनो के सीमित होने के कारण मनुष्य अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए भिन्न-भिन्न कार्य करता है। इन विभिन्न कार्यों के सम्बन्ध मे जो विभिन्न प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं उन्हें आर्थिक समस्याएँ कहते हैं। इस से स्पष्ट है कि मनुष्य अपनी आवश्यकताओ को पूर्ति के लिए दो प्रकार के कार्य करता है :

(१) एक वह जो धन कमाने से सम्बन्ध रखते हैं, तथा

(२) दूसरे वह जो अर्जित हुए धन को आवश्यकताओ की पूर्ति पर व्यय करने से सम्बन्ध रखते हैं।

अर्थशास्त्र इन दोनो प्रकार की क्रियाओ का अध्ययन करता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि "अर्थशास्त्र उन कार्यों का अध्ययन है, जिनके द्वारा आवश्यकताओ की पूर्ति करना सम्भव होता है।" (Economics is, therefore, a study of action which make the satisfaction of wants possible)

अर्थशास्त्र की परिभाषाएँ (Definitions of Economics)

भिन्न-भिन्न अर्थ-शास्त्रियो ने अर्थशास्त्र की परिभाषा समय-समय पर भिन्न प्रकार से दी है। आधुनिक समय तक भी अर्थशास्त्र की कोई निश्चित परिभाषा नही है जो कि सर्वमान्य हो। रिचार्ड जोन्स (Richard Jones) और काम्टे (Comte) जैसे अर्थशास्त्री तो इस प्रकार की कोई आवश्यकता ही नही समझते। यह कहना भी अनुचित नही है कि जितने अर्थशास्त्री होगे उतनी परिभाषाएँ होगी। डा० जे० एन० कीन्स ने ठीक ही कहा है कि "राज्य की अर्थ व्यवस्था तो अपनी परिभाषाओ मे ही जकडी हुई है।"[1] परन्तु एक विद्यार्थी के लिए यह नितान्त आवश्यक है कि कोई न कोई परिभाषा उसके आधार के लिए हो। अर्थशास्त्र की परिभाषाओ का अध्ययन हम निम्नलिखित श्रेणियो मे कर सकते हैं.

(अ) प्राचीन अर्थ-शास्त्रियो का मत—प्रारम्भिक काल के अर्थ शास्त्रियो ने इसे 'धन का विज्ञान' (Science of wealth) बताया था। उनके अनुसार आर्थिक क्रियाएँ वे है जिनको मनुष्य मुख्यत: आत्महित (Self-interest) की प्रेरणा से रचना करता है। इन क्रियाओ का मुख्य उद्देश्य धन का सचय करना (Acquisition of wealth) है। कुछ प्रमुख प्राचीन अर्थ-शास्त्रियो की परिभाषाएँ इस प्रकार हैं

---

1. "Political Economy is said to have strangled itself with definitions."

—Dr. J. N. Keynes, *Scope and Method of Political Economy*, p. 153.

(१) एडम स्मिथ ने सबसे पहले अपनी पुस्तक 'वैल्थ ऑफ नेशन्स' मे अर्थशास्त्र के विषय मे इस प्रकार विचार प्रकट किया था कि "अर्थशास्त्र का सम्बन्ध राष्ट्रो के धन के स्वरूप तथा उसके कारणो की खोज से है।"[1]

(२) अमेरिकन अर्थशास्त्री प्रो० वाकर (Walker) का कथन है, "अर्थशास्त्र ज्ञान की वह शाखा है जिसका सम्बन्ध धन से है।"[2]

(३) जे० बी० से (J B. Say), जो कि एक फ्रासीसी अर्थ-शास्त्री हैं, ने कहा है, "अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो धन की चर्चा करता है।"[3]

आलोचना—उपर्युक्त परिभाषाओ से स्पष्ट है कि इन सब अर्थशास्त्रियो ने धन के ऊपर अधिक बल दिया है और 'धन' को अर्थशास्त्र का केन्द्र माना। परन्तु बाद मे विद्वानो ने, जिनमे कार्लाइल (Carlyle) तथा रस्किन (Ruskin) आदि मुख्य हैं, धन के इस प्रभाव की कडी आलोचना की और उन्होने इसे 'कुबेर का वेद' (Gospal of Mammon), दुखदायी या निकृष्ट विज्ञान (Dismal Science), रोटी-टुकडे का स्वार्थमयी विज्ञान (A bread and butter science with a selfish touch about it) इत्यादि नामो से पुकारा तथा प्राचीन अर्थ-शास्त्री जो कि 'कुबेर-पूजा' (Mammon worship) की नई पद्धति के अनुयायी थे, घृणा की दृष्टि से देखे जाने लगे।

(आ) भौतिक कल्याण का विज्ञान—प्राचीन अर्थ शास्त्रियो की परिभाषाओ की आलोचनाओ को सुलझाने के लिए मार्शल ने अपनी नई परिभाषा देकर अर्थशास्त्र को उन्नत किया। मार्शल ने कहा, अर्थशास्त्र केवल 'धन' से ही सम्बन्धित नही है अपितु मनुष्य द्वारा धन का प्रयोग किए जाने से भी है। अर्थात् 'धन' मनुष्य के लिए है न कि मनुष्य धन के लिए क्योकि अर्थशास्त्र का मुख्य उद्देश्य जनहित है। अथशास्त्र मे केवल हम धन का ही अध्ययन नही करते वरन् मनुष्य की उन धन सम्बन्धी क्रियाओ का भी अध्ययन करते हैं जिनका उपभोग, विनिमय तथा वितरण से सम्बन्ध है। हमारा तात्पर्य उन क्रियाओ मे है, जिनका उद्देश्य धन की प्राप्ति (Wealth getting) तथा धन का उपभोग (Wealth using) हो और जो धन की छडी से नापी जा सके (Measurable in terms of money)। मार्शल ने कहा, 'धन' तो केवल एक 'मात्र' है अर्थात् आदि है परन्तु अन्त तो जन साधारण का कल्याण है, अर्थात् धन तो मानव-

1. Economics concerned with "an enquiry into the nature and causes of wealth of Nations"
—Adam Smith, *Wealth of Nations.*
2. Economics is that body of knowledge which relates to wealth.
3. Economics is that science which treats of wealth.

कल्याण और उनकी आवश्यकताओ की पूर्ति का साधन है स्वय साध्य नही।

इस प्रकार मार्शल तथा उसके साथियो ने इस समस्या को सुलझाया और कहा कि अर्थशास्त्र धन का विज्ञान नही है वरन् मनुष्य का विज्ञान है। रोशर (Roscher) ने ठीक कहा है, "आर्थिक विज्ञान अर्थात् अर्थशास्त्र का प्रारम्भिक बिन्दु और उद्देश्य मनुष्य है।" (The starting point and goal of economic science is man)

मार्शल की परिभाषा—मार्शल ने अपनी 'Economics of Industry' नामक पुस्तक म अर्थशास्त्र की परिभाषा इस प्रकार से दी है :

"अर्थशास्त्र मनुष्य की साधारण जीवन सम्बन्ध क्रियाओ का अध्ययन करता है, यह पता लगाता है कि मनुष्य किस प्रकार धन कमाता है और किस प्रकार उसे व्यय करता है ....इस प्रकार यह एक ओर तो धन का अध्ययन करता है और दूसरी ओर 'मनुष्य' का जो कि अपेक्षाकृत प्रथम से अधिक महत्त्वपूर्ण है।[1]"

परन्तु अपनी दूसरी पुस्तक 'Principles of Economics' मे उन्होंने अर्थशास्त्र की परिभाषा इस प्रकार दी है

"जीवन की सामान्य दशाओ के बीच मनुष्य का अध्ययन करना ही अर्थशास्त्र है। यह उन व्यक्तिगत और सामाजिक कार्यों की छानबीन करता है जिनका भौतिक सुखो के साधना की प्राप्ति और उपभोग से अत्यन्त निकट सम्बन्ध है।"[2]

मार्शल की विचारधारा का समर्थन करने वाले कुछ आधुनिक अर्थ शास्त्रियो ने अर्थशास्त्र की परिभाषाएँ इस प्रकार दी हैं

(१) पीगू (Piguo) का मत है कि "अर्थशास्त्र भौतिक कल्याण का अध्ययन है, इससे हमारा अभिप्राय सामाजिक कल्याण के उस भाग से है जिसे

1. Economics or Political Economy is a study of man's action in the ordinary business of life It enquires how he gets his income and how he uses it Thus, it is on one side a study of wealth and on the other and more important side a study of man

—Marshall, *Economics of Industry*, p. 1

2 Economics is a study of mankind in the ordinary business of life, it examines that part of the individual and social action which is most closely connected with the attainment and with the use of the material requisites of well-being

—Marshall, *Principles of Economics*, p 1.

मुद्रा के मापदण्ड से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित किया जा सकता है।"[1]

(२) प्रो० पेंसन (Penson) का मत है कि "अर्थशास्त्र भौतिक कल्याण का शास्त्र है।"[2]

(३) प्रो० ऐली (Ely) के मतानुसार, "अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जिसमे *उन सामाजिक परिस्थितियो का अध्ययन किया जाता है जो मनुष्य के धन कमाने और धन का व्यय करने की क्रियाओ से पैदा होती हैं।*"[3]

(४) प्रो० चैपमैन (Chapman) ने अर्थशास्त्र की परिभाषा करते हुए लिखा है कि *"अर्थशास्त्र धन के उत्पादन, वितरण तथा उपभोग करने की विद्या है।"*[4]

(५) सर बेवरिज (Sir Beveridge) के शब्दो मे "अर्थशास्त्र उन साधारण विधियो का अध्ययन है जिनके द्वारा मनुष्य अपनी भौतिक आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए आपस मे सहयोग करते हैं।"[5]

मार्शल तथा उनके अनुयायियो की परिभाषाओ का अध्ययन करने के पश्चात् हम इस परिणाम पर आते हैं कि अर्थशास्त्र मुख्यत मनुष्य का अध्ययन करता है तथा यह एक सामजिक शास्त्र है। इसमे केवल उन्ही व्यक्तियो की आर्थिक क्रियाओ का अध्ययन किया जाता है जो सामाजिक, वास्तविक तथा सामान्य मनुष्य हैं।

आलोचना—पर्याप्त समय तक उपर्युक्त परिभाषाओ को उचित स्थान मिला परन्तु लन्दन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स (London School of Economics) के सुप्रसिद्ध अर्थ शास्त्री प्रो० लिओनल रोबिन्स (Lionel Robbins) की विचारधारा के प्रभाव से इनकी महत्ता कम होने लगी। रोबिन्स ने इन सभी की कड़ी आलोचना की—विशेष रूप से मार्शल की परिभाषा की। इन्होने कहा

---

1. "Economics is a study of material welfare, the range of enquiry becomes restricted to that part of social welfare that can be brought directly or indirectly into relation with the measuring rod of money."
2. "Economics is the science of material welfare "
3. "Economics is the science which treats of those social phenomena that are due to the wealth getting and wealth using activites of men."
4. "Economics is the science which studies of the wealth-earning and wealth-spending activities of human being "
5. "Economics is the study of general methods by which men co-operate to meet their material needs."

कि सर्वप्रथम तो ये परिभाषाएँ भौतिकता के जाल मे फँसी हुई हैं। संसार मे बहुत सी ऐसी वस्तुएं है जो हमारी आवश्यकताओ की पूर्ति करती हैं और जिनकी पूर्ति सीमित है परन्तु इनसे यह आशय नही है कि वे भौतिक हैं। भौतिकता और अभौतिकता के बीच मे किसी प्रकार की विभाजन रेखा खींचना कठिन है। उन्होने कहा कि, "वह व्यक्ति जो थियेटर मे नृत्य करता है उसका कार्य भी धन है और जो रसोइया खाना बनाता है उसका कार्य भी धन है। परन्तु अर्थशास्त्र इन विभिन्न कार्यों का मूल्याकन करता है।" अत. अर्थशास्त्र केवल भौतिकता से सम्बन्ध रखने वाले कारणो का ही अध्ययन नही है वरन् अभौतिकता से सम्बन्ध रखने वाले कारणो अथवा वस्तुओ का भी अध्ययन करता है।

दूसरे स्थान पर उन्होने कहा कि यह कहना कहाँ तक उचित है कि अर्थशास्त्र मे केवल आर्थिक क्रियाओ का ही अध्ययन किया जाता है, अपार्थिव क्रियाओ का नही। उन्होने कहा कि धन या सम्पत्ति से सम्बन्धित होने से किसी सामान्य व्यक्ति का प्रयत्न पार्थिव या अपार्थिव नही हो जाता। यह तो केवल कार्य करने के ढग पर निर्भर होता है। यह कहना अनुचित है कि केवल सामाजिक व्यक्तियो की क्रियाओ का अध्ययन किया जाता है क्योकि मानव कल्याण के कुछ ऐसे भी सिद्धान्त हैं जो समाज मे रहने वाले व्यक्तियो पर भी और जगल इत्यादि मे रहने वालो (isolated persons) पर भी लागू हो सकते हैं।

अन्त मे उन्होने कहा कि भौतिक कल्याण को पूर्ण रूप से मापा भी नही जा सकता है। उदाहरणार्थ, दो व्यक्ति किसी वस्तु को खरीदने के लिए एकसी कीमत देते हैं परन्तु उन्हे प्राप्त होने वाली उपयोगिता भिन्न-भिन्न प्रकार की हो सकती है अर्थात् एक को अधिक और एक को कम। अत: यह कहना अनुचित है कि धन के द्वारा भौतिकता को मापा जा सकता है।

(इ) सीमित साधनो का शास्त्र—इस विचारधारा का समर्थन करने वालो मे Lionel Robbins, Stigler, Cairncross इत्यादि प्रमुख हैं। इन्होने परम्परागत अर्थ-शास्त्रियो का खण्डन करके अपने नए मत प्रस्तुत किए।

प्रो० रोबिन्स के मतानुसार, "अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो मानव व्यवहार का अध्ययन सीमित साधनों और साध्यो के सम्बन्ध के रूप मे करता है जिनके वैकल्पिक प्रयोग भी हो सकते हैं।"[1]

यह परिभाषा निम्न विशेषताओ का उल्लेख करती है जो कि आर्थिक विज्ञान के ढांचे का प्रमुख ध्येय है.

---

1. "Economics is the science that studies human behaviour as a *relationship between ends and scarce means which have* alternative uses." —Lionel Robbins.

(१) सर्वप्रथम मनुष्यो को आवश्यकताओ का अनुभव होता है तथा इन की कोई सीमा नही है।

(२) द्वितोय यह है कि इन आवश्यकताओ को पूर्ण करने के साधन सीमित हैं।

(३) अन्तिम यह कि इन सीमित साधनो का अनेक प्रकार से उपयोग हो सकता है।

बहुत से आधुनिक अर्थशास्त्रियो ने रोबिन्स की विचारधारा का समर्थन किया। स्टिगलर के अनुसार "अर्थशास्त्र उन नियमो का अध्ययन है जो प्रतिस्पर्द्धी आवश्यकताओ की अधिकाधिक प्राप्ति के लिए सीमित साधनो और उनके वितरण को नियन्त्रित करता है।'[1]

प्रो० केयर्नक्रोस (Cairncross) के विचार भी रोबिन्स से मिलते-जुलते हैं। इनके अनुसार, "अर्थशास्त्र मानव व्यवहार पर अपूर्ण साधनो के प्रभाव का अध्ययन उन परिस्थितियो मे करता है जबकि मानव के पास अपने सीमित साधनो के द्वारा प्रतिस्पर्द्धी आवश्यकताओ को पूर्ण करने के लिए उनमे वितरण की स्वतन्त्रता होती है।"[2]

आलोचना—परन्तु प्रो० रोबिन्स और उनके साथी भी समालोचको की दृष्टि से न बच सके। डरबिन (Durbin), फ्रेजर (Fraser), वुटिन (Wooten) तथा बेवरिज (Beveridge) जैसे अर्थ-शास्त्रिया ने मार्शल के सिद्धान्तो की प्रबलता से रक्षा की। वुटिन (Wooten) का कथन है, "अर्थ-शास्त्रियो के लिए यह बहुत ही कठिन है कि वे अपने विवेचन से अर्थशास्त्र के आदर्श का पूर्ण अपहरण करें।"[3]

प्रो० फ्रेजर (Fraser) का मत है कि, "अर्थशास्त्र मूल्य-सिद्धान्त या साम्य-विश्लेषण से कही अधिक है।"[4]

---

1. Economics is the study of the principles governing the allocation of scarce means among competing ends when the objective of allocation is to maximise the attainment of the ends."
2. Economics is the study of the influence of scarcity on human conduct in circumstances where men have freedom of choice in allocating scarce and competing wants
3. "It is very difficult to divest their discussions completely of all normative significance "
4. "Economics is something more than a value theory or equilibrium analysis "

प्रो० पीगू (Piguo) का कथन है कि, "जब हम मनुष्य के उद्देश्यो की देखभाल करते हैं तो वे कभी-कभी नीचे और निराशाजनक प्रवृत्ति के प्रतीत होते हैं—उस समय हमारी मानसिक दशा एक दार्शनिक की सी नही होनी चाहिए। हम ज्ञान का अध्ययन केवल ज्ञान के ही लिए नही करते वरन् हमारी प्रवृत्ति एक शरीर विज्ञानशास्त्री की सी होनी चाहिए जिसका ज्ञान पीडाओ को दूर करने मे सहायता दे।"[1]

(ई) *आवश्यकता हीनता सम्बन्धी शास्त्र*—इस मत के समर्थक भारतीय अर्थशास्त्री प्रो० J K Mehta हैं। इन्होने अर्थशास्त्र की परिभाषा एक बिल्कुल नये ढङ्ग से दी है जो भारतीय विचारो और संस्कृति की द्योतक है। प्रो० मेहता के अनुसार मनुष्य अधिकतम सन्तोष तभी प्राप्त कर सकता है जबकि उसका अपनी आवश्यकताओ पर नियन्त्रण हो अर्थात् मनुष्य को सुख और शान्ति केवल आवश्यकता विहीनता की दशा मे (State of wantlessness) ही सम्भव है। इसी मत से सम्बन्धित उन्होने अर्थशास्त्र की परिभाषा दी। प्रो० जे० के० मेहता के अनुसार, "अर्थशास्त्र उन मानवीय क्रियाओ का विज्ञान है जिसके द्वारा आवश्यकता विहीनता की अवस्था को प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है।'[2] अपनी पुस्तक 'Advanced Economics Theory' मे उन्होने एक स्थान पर लिखा "इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि अर्थशास्त्र का सम्बन्ध इच्छाओ (Wants) की सतुष्टि से नही, वरन् आवश्यकताओ को कम से कम करने से है जिसमे मानव प्रसन्नता और सुख प्राप्त कर सके।"[3]

प्रो० जे० के० मेहता भी आलोचको के पात्र हैं। इनके अनुसार उनकी परिभाषा म अव्यावहारिकता है तथा मानव जाति की प्रगति मे बाधक है।

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र की परिभाषाओ मे पूर्णता की कमी है। आधुनिक समय म दो मत अधिक प्रचलित हैं। कुछ ऐसे अर्थशास्त्री हैं जो रोबिन्स के मत के *अनुयायी* हैं और कुछ मार्शल के। परन्तु

---

1. When we watch the play of human motives that are ordinary–sometimes mean and ignoble–our impulse is not that of philosopher impulse, knowledge for the sake of knowledge but *rather the physiologist impulse*, knowledge for the healing that knowledge may help to bring
   Piguo, *The Economics of Welfare*, p. 5.
2. "Economics must, therefore, be defined as a science of human activities considered as an endeavour to reach the state of wantlessness."
3. "It can, therefore, be maintained that elimination of wants is *one universal aim of all behaviour.*"

अधिकतर अर्थशास्त्री मार्शल के मत को ही मानते हैं और उसका अनुसरण करते है। उचित साराश प्राप्त करने के लिए हम दोना मतो को और भिन्न-भिन्न अथशास्त्रियों की परिभाषाओ से सारवस्तु को ग्रहण करना चाहिए। अत "अर्थशास्त्र स्वीकारात्मक और आदर्शात्मक दोनो ही रूप मे एक सामाजिक विज्ञान है।"[1]

अर्थशास्त्र का क्षेत्र (Scope of Economics)

पिछले अनुच्छेदो मे हम अर्थशास्त्र की परिभाषाओ पर विचार कर चुके हैं। अब हम उसके क्षत्र का अध्ययन करेगे। परिभाषा की तरह इसके क्षत्र पर भी अथशास्त्री एक मत नही हैं। प्रो० जे० एन० कीन्स (J N Keynes) ने कहा है कि अर्थशास्त्र के क्षत्र के विवेचन के लिए अधोलिखित बातें आवश्यक हैं

(१) अथशास्त्र की विषय सामग्री (Subject matter of economics)

(२) अर्थशास्त्र की सीमाएँ (Limitations of economics)

(३) अर्थशास्त्र विज्ञान है या कला अथवा दोनो (Economics is a science or art or both)।

अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री

सर्वप्रथम इसका उल्लेख हम परिभाषाओ मे कर चुके हैं, परन्तु यहाँ पर पृथक् रूप से इसका वर्णन करना उचित होगा। एडम स्मिथ तथा उसके समकालीन अर्थ-शास्त्रियो ने बताया कि अथशास्त्र म केवल धन का अध्ययन किया जाता है। परन्तु इसमे सुधार करते हुए मार्शल तथा इनके अनुयायियो ने इसे भौतिक कल्याण का विज्ञान कहा। इनके अनुसार मानव की उन्ही क्रियाओ का अध्ययन किया जाता है जो धन से सम्बन्ध रखती है अर्थात् जिन्हे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से धन के माप-दण्ड से मापा जा सकता है। यह मनुष्य द्वारा धन को अर्जित करने, विनिमय करने, वितरण करने और उपभोग करने से सम्बन्धित सभी आवश्यकताओ और उनकी पूर्ति से प्राप्त होने वाली सन्तुष्टि का अध्ययन करता है। दूसरे शब्दो मे अर्थशास्त्र समाज से सम्बन्ध रखने वाले सभी सामाजिक वास्तविक और सामान्य मनुष्यो की धन उपार्जन (Wealth getting) और धन व्यय (Wealth using) सम्बन्धी क्रियाओ का अध्ययन करता है।

---

1 "Economics, therefore, is a social science with both its positive and normative aspects"

परन्तु प्रो० रोबिन्स ने इन परिभाषाओ को दोषी ठहरा कर यह कहा कि अर्थशास्त्र सीमित साधनो का विज्ञान है। उनके अनुसार केवल उन्ही आर्थिक पहलुओ का अध्ययन किया जाता है जिनका सम्बन्ध मूल्याकन (Valuation) से है। दूसरे शब्दो मे अर्थशास्त्र मे मानव की क्रियाओ के केवल चयन करने के (Choice-making) पहलू का ही अध्ययन करते हैं।

परन्तु प्रश्न यह उठता है कि अर्थशास्त्र मानव का एकान्तवासी रूप का अध्ययन करता है या सामाजिक सदस्य के रूप मे। मार्शल के अनुसार अर्थशास्त्र सामाजिक व्यक्तियो की आर्थिक क्रियाओ का अध्ययन करता है। अत. अर्थशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है। इसमे कवल समाज मे रहने वाले व्यक्तियो की ही क्रियाओ का विवेचन किया जाता है, अन्य साधु सन्यासियों, जानवरो मे रहने वाला टाजन या टापू म अकेले रहने वाले रोबिन्सन क्रूसो (Robbinson Cruso) की क्रियाओ का नही।

परन्तु प्रो० रोबिन्स के अनुसार अर्थशास्त्र के अन्तगत उन सब व्यक्तियो की क्रियाओ का अध्ययन किया जाना है जो सामाजिक सदस्य है अथवा समाज से बाहर रहते हैं। अर्थात् अर्थशास्त्र तो सम्पूर्ण मानव-व्यवहार का अध्ययन करता है जिनका सम्बन्ध सीमित आवश्यकताओ के सीमित साधनो से है चाहे यह व्यवहार समाज के सदस्य के रूप म हो या समाज से बाहर। इसलिए यह एक केवल सामाजिक विज्ञान ही नही अपितु मानव विज्ञान भी है।

अर्थशास्त्र की सीमाएँ

इसस यह पता चल जाता है कि अर्थशास्त्र मे क्या-क्या सम्मिलित है और क्या-क्या नही है जिसके कारण विषय का अध्ययन प्रकाश मे आ जाता है।

मार्शल के मतानुसार अर्थशास्त्र का निम्न सीमाओ के अन्तर्गत अध्ययन किया जाता है

(१) अर्थशास्त्र म केवल मनुष्यो की ही क्रियाओ का अध्ययन किया जाता है अन्य पशु पक्षियो की क्रियाएँ इसके क्षेत्र से परे हैं।

(२) इनमे भी केवल उन्ही व्यक्तियो की क्रियाओ का अध्ययन किया जाता है जो सामाजिक हैं, वास्तविक हैं, सामान्य और औसतन हैं।

(३) इन सब सामाजिक, वास्तविक और सामान्यत: व्यक्तियो की केवल धन से सम्बन्ध रखने वाली क्रियाओ का अध्ययन किया जाता है अर्थात् जो धन से मापा जा सकें।

(४) केवल वास्तविक व्यक्तियो की क्रियाओ का अध्ययन किया जाता है, काल्पनिक इत्यादि का नही।

प्रो० रोबिन्स के मतानुसार—

(१) अर्थशास्त्र मे मार्शल की भांति केवल मानवीय क्रियाओ का अध्ययन किया जाता है।

(२) इन्होने दूसरे स्थान पर मार्शल के विपरीत यह कहा कि इसमे सामाजिक और असामाजिक दोनो की क्रियाओ का अध्ययन किया जाता है।

(३) इसमे धन से मापी जाने वाली और धन से न मापी जाने वाली दोनों प्रकार की क्रियाओ का अध्ययन किया जाता है।

अर्थशास्त्र विज्ञान और कला के रूप में
(Economics as a Science and Art)

विज्ञान या कला के रूप मे अर्थशास्त्र को समझने से पहले हमें इन दोनो शब्दो का अर्थ समझ लेना चाहिए।

विज्ञान का अर्थ—प्रकृति के किसी विभाग के सम्बन्ध मे ज्ञान के क्रमबद्ध सग्रह को विज्ञान कहते हैं। (Science is a systematised body of knowledge *concerning the relationship between cause and* effect of particular phenomena)

इस प्रकार विज्ञान ज्ञान का वह भडार हैं जिसमे निरीक्षण और प्रयोगों द्वारा प्रकृति की समानता का अध्ययन किया जाता है। परन्तु जानकारी प्राप्त करना ही आवश्यक नही है वरन् उसे क्रमबद्ध भी होना अत्यन्त आवश्यक है। इसीलिए Poincare ने कहा है कि "विज्ञान तथ्यों से इस प्रकार बना है जिस प्रकार पत्थरो से एक मकान बनाया जाता है, परन्तु केवल तथ्यो के एकत्रीकरण को उसी भांति विज्ञान नही कहा जा सकता जिस प्रकार पत्थरो के ढेर को मकान नही कहा जा सकता है।"[1]

विज्ञान को दो भागो मे विभाजित किया गया है जो इस प्रकार हैं.

(१) वास्तविक विज्ञान (Positive Science)

(२) आदर्शात्मक विज्ञान (Normative Science)

वास्तविक विज्ञान—यह वर्तमान या वास्तविक बातो का या वस्तुस्थिति का अध्ययन करता है। इसका क्षेत्र केवल 'क्या स्थित है' (What is) प्रश्न के उत्तर तक सीमित है। इसमे किन्ही दो कारणो को और उनसे प्राप्त परिणामो के सम्बन्ध को प्रकट किया जाता है जैसे गेंद को ऊपर उछालना

---

1. "Science is built up of facts as a house is built of stones but an accumulation of facts is no more a science than a heap of stones is a house"

—M Poincare, *Science and Hypothesis*, p 141.

इसका कारण है और उसका नीचे आ गिरना इसका परिणाम है। इससे स्पष्ट है कि यह केवल वर्तमान की स्थिति का अध्ययन करता है, भविष्य की नहीं।

आदर्श विज्ञान—यह केवल वास्तविक स्थिति का ही अध्ययन नहीं करता वरन् अपना आदर्श भी प्राप्त करने की चेष्टा करता है। यह बताता है कि कौनसा आदर्श उचित है और कौनसा नहीं। यह 'क्या होना चाहिए ?' (What ought to be ?) प्रश्न के उत्तर से सम्बन्ध रखता है।

अर्थशास्त्र विज्ञान के रूप में—विज्ञान की दोनों शाखाओं का अर्थ समझ लेने के पश्चात् प्रश्न यह उठता है कि अर्थशास्त्र कहाँ तक एक विज्ञान के रूप में है। अर्थशास्त्र एक वास्तविक विज्ञान भी है और आदर्श विज्ञान भी। वास्तविक विज्ञान के रूप में यह हमें आर्थिक क्रियाओं के कारण और उनसे प्राप्त होने वाले परिणामों के सम्बन्ध को बताता है। यह हमें अर्थशास्त्र के विभिन्न भागों जैसे उत्पादन, उपभोग, विनिमय, वितरण के अध्ययन में आने वाले भिन्न भिन्न नियमों के कारण और परिणाम को प्रकट करता है। उपभोग के क्षेत्र में हमें यह बताता है कि प्रत्येक बढ़ती हुई इकाई से प्राप्त उपयोगिता क्रमशः कम होती जाती है। उत्पत्ति के क्षेत्र में यह बताता है कि श्रम और पूँजी की अधिकाधिक इकाइयों का उपयोग करने पर उत्पत्ति क्रमशः अनुपात में कम होती है। इसी प्रकार विनिमय और वितरण के क्षेत्र में बताता है कि मूल्य घटने पर माँग बढ़ जाती है और यदि पूँजी की पूर्ति बढ़ जाती है तो ब्याज की दर कम हो जाती है। इससे स्पष्ट है कि अर्थशास्त्र में भिन्न भिन्न प्रकार के नियम पाए जाते हैं जो एक वास्तविक रूप ले लेता है।

अर्थशास्त्र एक आदर्श विज्ञान भी है। आदर्श विज्ञान के नाते यह हमें अधिकतम कल्याण करने की चेष्टा को सिखाता है। यह बताता है कि भिन्न-भिन्न आदर्शों को सामने रख कर हम समाज का कल्याण कर सकते हैं। किन-किन आवश्यकताओं पर अधिक व्यय करना चाहिए और किन-किन पर कम, जनसंख्या किस सीमा तक बढ़नी चाहिए तथा मजदूरी तथा ब्याज की क्या उचित दरें होनी चाहिए, आदि।

कला का अर्थ—कला से हमारा अभिप्राय यह है कि अमुक लक्ष्य कैसे प्राप्त हो सकता है। अर्थात् यह "कैसे होना चाहिए" प्रश्न का उत्तर देती है। इस प्रकार कला हमें वास्तविक विज्ञान से आदर्श विज्ञान तक ले जाने के मार्ग को बताती है। विज्ञान हमारे सामने आदर्शों को रखता है और कला इन आदर्शों को प्राप्त करने के ढंग को बताती है।

अर्थशास्त्र कला के रूप में—यह एक कला भी है। इस रूप में यह बताती है कि धन की अधिकतम उत्पत्ति एवं व्यय करने से समाज का अधिकतम कल्याण हो सकता है। यह अनेक व्यावहारिक समस्याओं को सुलझाने के लिए

भिन्न-भिन्न प्रकार के सुझाव देता है, जैसे खेती मे कैसे वृद्धि की जा सकती है, किसानो की दशा कैसे सुधारी जा सकती है, सिंचाई के साधनो मे कैसे विकास हो सकता है, आदि ।

अर्थशास्त्र विज्ञान है या कला अथवा दोनो

अब यह प्रश्न उठता है कि अर्थशास्त्र विज्ञान है या कला अथवा दोनो । इस सम्बन्ध मे यह कहा जा सकता है कि अर्थशास्त्र एक विज्ञान है क्योकि अन्य शास्त्रो की तरह इसमे भी नियम पाये जाते हैं । दूसरे शब्दो मे कह सकते हैं कि अर्थशास्त्र मे मानव के उस व्यवहार का अध्ययन किया जाता है जिसका सम्बन्ध 'Choice making' या 'Valuation' से है और इसके नियमो मे क्रमबद्धता भी पाई जाती है परन्तु इसके साथ ही यह कला भी है क्योकि यह शास्त्र हमको अनेक व्यावहारिक समस्याओ को सुलझाने की विधि भी बताता है । प्रो० पीगू ने कहा है कि 'प्रत्येक शास्त्र प्रकाश एव फल दोनो ही देने वाला होता है परन्तु किसी मे प्रकाश देने वाला तत्त्व अधिक होता है और अर्थशास्त्र मे फल देने वाला तत्त्व अधिक महत्त्वपूर्ण है ।"[1] इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अर्थशास्त्र विज्ञान एव कला दोनो ही है ।

प्रश्न

1 Define Economics and give its scope and limitations.
अर्थशास्त्र की परिभाषा, क्षेत्र तथा सीमाओ की विवेचना कीजिए ।

2 'Economics is both a Science and Art ' Comment.
'अर्थशास्त्र विज्ञान तथा कला दोनो हैं ।' इस कथन की व्याख्या कीजिए ।

3 Comment on the following
(a) Economics is the Science of wealth
(b) Economics is the Science of material welfare
(c) Economics is the Science of scarce means
निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए
(अ) अर्थशास्त्र धन का विज्ञान है ।
(ब) अर्थशास्त्र भौतिक कल्याण का शास्त्र है ।
(स) अर्थशास्त्र सीमित साधनो का विज्ञान है ।

---

1. Every science is both light bearing and fruit bearing but in some the light-giving aspect is more important, and in economics latter is the case

—Piguo, *The Economics of Welfare*, p. 1.

अध्याय २

अर्थशास्त्र-शिक्षण के लक्ष्य तथा महत्त्व
(Aims and Values of Teaching Economics)

"Every art is thought to aim at some good"

—*Aristotle*

जैसा कि हम गत अध्याय मे देख चुके हैं, अर्थशास्त्र एक कला भी है। यह कला के रूप मे इस प्रश्न का उत्तर देता है कि 'अमुक लक्ष्य कैसे प्राप्त हो सकता है। इस प्रकार यह शास्त्र हमे अनेक व्यावहारिक समस्याओ को हल करने की विधि बताता है और वास्तविक विज्ञान से आदर्श विज्ञान तक ले जाने के मार्ग को प्रशस्त करता है। जब अर्थशास्त्र एक कला है तो यह प्रश्न स्वत उठ खड़ा होता है कि इसके द्वारा क्या अच्छाई प्राप्त होती है? दूसरे शब्दो मे कह सकते हैं कि इस शास्त्र का किस अच्छाई को प्राप्त करने का लक्ष्य है? इसके उत्तर मे कहा जा सकता है कि इस शास्त्र के अध्ययन का ध्येय मानवीय हित है। क्योकि व्यक्ति तथा समाज की उन्नति के लिए धन की नितान्त आवश्यकता होती है, इसके द्वारा व्यक्ति को उत्पत्ति के साधनो एव वितरण सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त होता है जिससे वह अपने नागरिक धर्म को बनाये रखता है, क्योकि गरीबी नागरिक धर्म का नाश करती है, अर्थात् दूसरे शब्दो मे कहा जा सकता है कि गरीबी मानव को कर्त्तव्य विमुख कर देती है। जब नागरिको की भौतिक आवश्यकताएँ पूर्ण नही की जायेंगी तो उनके कर्त्तव्य-विमुख होने की सम्भावना बनी रहेगी। अर्थशास्त्र यह बताता है कि नागरिकता की सफलता के लिए समाज मे उत्पादन के साधनो पर किसी एक वर्ग विशेष अथवा थोडे से व्यक्तियो का अधिकार नही होना चाहिए बल्कि उनका उपयोग समस्त जनता के कल्याण के लिए एव जनता द्वारा होना चाहिए। तीसरे, किसी भी राष्ट्र की उन्नति एव विकास के लिए यह अनिवार्य है कि भावी नागरिको का सर्वाङ्गीण विकास हो। सर्वाङ्गीण विकास का अर्थ यह है

कि व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, बौद्धिक, शारीरिक आदि सभी पक्षों का पूर्ण विकास हो। व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक एवं बौद्धिक विकास के लिए अर्थशास्त्र की शिक्षा का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। आज जिन राष्ट्रों मे इस शिक्षा का पर्याप्त प्रचार एवं प्रसार है वे देश उतने ही उत्पन्न एवं समृद्ध हैं। इतिहास इस बात का साक्षी है कि इस शिक्षा के आधार पर इंगलैण्ड ने विश्व के एक बड़े भूभाग पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था। अमरीका तथा रूस ने इस शिक्षा का आश्रय लेकर विश्व के अन्य राष्ट्रों की अपेक्षा अपने को अधिक उन्नतिशील एवं समृद्धिशाली बनाया। इस प्रकार के विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि किसी राष्ट्र की उन्नति एवं विकास के लिए इस प्रकार की शिक्षा की अपेक्षा है।

समस्त ज्ञान अखण्ड है। वह पृथक्-पृथक् भागों मे विभक्त नही किया जा सकता है, परन्तु पठन-पाठन की सुविधा के लिए मानव ने उसका वर्गीकरण कर लिया है और प्रत्येक वर्ग को एक विषय कहते हैं। परन्तु विषय, ज्ञान का विभाजन नही है, वरन् ज्ञान के अध्ययन के दृष्टिकोण का एक अन्तर मात्र है। फिर भी विषय का अपना एक उद्देश्य तथा एक विशिष्ट दृष्टिकोण होता है। उसके उच्च आदर्श हैं, जिनको प्राप्त करने के लिए वह प्रयत्नशील रहता है तथा उसकी एक श्रेष्ठ परम्परा है जिसका वह आदर करता है। अतएव किसी विषय को पढाने मे ज्ञान के अतिरिक्त जब तक छात्र इन बातो को ग्रहण नही करता तब तक उस विषय का अध्यापन अपूर्ण रहता है। जब प्रत्येक विषय अपने शिक्षण के कुछ विशिष्ट लक्ष्य रखता है तो यह प्रश्न स्वत: उठता है कि अर्थशास्त्र-शिक्षण के क्या लक्ष्य हैं ?

अर्थशास्त्र-शिक्षण के लक्ष्य (Aims of Teaching Economics)

हम जब किसी विषय का अध्ययन करते हैं तो इससे पहले उसके लक्ष्यो एवं महत्त्वो को जान लेना आवश्यक है क्योकि लक्ष्य एक चेतनाप्रूत एवं क्रियाशील अभिप्राय होता है जिसको प्राप्त करना हमारे उस विषय के अध्ययन का प्रमुख ध्येय होता है। इस प्राप्ति के मार्ग मे वह सदैव हमारे समक्ष बना रहता है। इन लक्ष्यो तथा महत्त्वो के अभाव मे उस विषय का अध्ययन सार्थक नही होगा। यही बात अर्थशास्त्र के विषय मे भी है। यदि हम लक्ष्यों को निर्धारित नही करेंगे, तो उन्हे प्राप्त करने की योजना क्रियान्वित करना सम्भव नही होगा। दूसरे शब्दो मे कहा जा सकता है कि बिना लक्ष्य के कोई कार्य नही किया जा सकता। शिक्षा के लक्ष्यो के लिए हमे समाज की ओर ध्यान देना पडता है, अर्थात् शिक्षा के उद्देश्य समाज की व्यवस्था के अनुसार निर्धारित किये जाते हैं। जैसा समाज होगा उसके वैसे ही होंगे। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रत्येक

के उद्देश्यों के आधार पर निर्धारित किये जाते हैं। प्रो० सी० ई० एम० जोड् ने अपनी पुस्तक 'About Education' मे शिक्षा के अधोलिखित उद्देश्य बताये हैं :

(१) प्रत्येक लड़का या लडकी को अपनी जीविका कमाने के लिए योग्य बनाना। (To Equip a boy or girl to earn his or her living.)

(२) उसको लोकतन्त्र मे एक सफल नागरिक का कार्य करने के लिए योग्य बनाना। (To equip him to play his part as the citizen of a democracy)

(३) उसको इस योगग्य बनाया जिससे वह अपनी प्राकृतिक एव अन्तर्हित शक्तियो एव सामर्थ्यों का विकास एव अच्छा जीवन व्यतीत कर सके। (To enable him to develop all the latent powers and faculties of his nature and so to enjoy a good life,)

शिक्षाशास्त्रियो का मत है कि शिक्षा का मुख्य लक्ष्य बालक के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास करना है। यदि शिक्षा के उपर्युक्त लक्ष्यो को ध्यानपूर्वक देखा जाय तो प्रतीत होगा कि ये लक्ष्य किसी एक विशिष्ट विषय के अध्यापन से प्राप्त नही किये जा सकते वरन् इनकी प्राप्ति के लिए विभिन्न विषयो का प्रतिपादन आवश्यक है। परन्तु इन लक्ष्यो की प्राप्ति मे अर्थशास्त्र बहुत ही सहायक है। अपनी जीविका कमाने के योग्य बनाने म अर्थशास्त्र बहुत ही सहायक है क्योंकि इस शास्त्र का सम्बन्ध वस्तुओ और अवसर के चयन से है। नागरिक अपने धर्म को सफलतापूर्वक तभी निभा सकता है जब उसकी मौलिक आवश्यकताओ की पूर्ति हो जायगी। मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति मे इस शास्त्र का ज्ञान बडा लाभप्रद है। यहाँ तक कि बच्चे को अन्तर्हित शक्तियो के विकास में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। बालक के व्यक्तित्व का तब तक सम्पूर्ण विकास नही हो सकेगा तब तक उसका आर्थिक पक्ष ठीक प्रकार से विकसित न हो जायगा। इस प्रकार के विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि प्रत्येक विषय के लक्ष्य शिक्षा के लक्ष्यो के आधार पर निर्धारित होते हैं।

प्रो० पीगू (Piguo) ने अपनी पुस्तक 'The Economics of Welfare' मे बताया है कि किसी विषय के अध्ययन के दो प्रमुख ध्येय हुआ करते हैं जो इस प्रकार हैं.

(१) ज्ञान प्राप्त करना, तथा

(२) व्यावहारिक जीवन की समस्याओ को सुलझाना।

उन्होने बताया कि यदि किसी विषय मे एक ध्येय का महत्त्व अधिक है तो दूसरे विषय मे दूसरे ध्येय का महत्त्व अधिक होता है। परन्तु अर्थशास्त्र मे इन दोनो उद्देश्यो का समन्वय है, अर्थात् दूसरे शब्दो मे हम कह सकते हैं कि यह शास्त्र हमें प्रकाश देता है तथा फल भी। प्रो० मार्शल (Marshall) ने

बताया है कि ' अथशास्त्र के अध्ययन का ध्येय प्रथमत तो केवल ज्ञान के लिए ज्ञान प्राप्त करना है और दूसरे व्यावहारिक जीवन, विशेषत सामाजिक जीवन, मे मनुष्य के पथ को प्रशस्त करना है ।"[1]

प्रो० बाइनिंग तथा बाइनिंग (A C Bining and D C Bining) ने अ शास्त्र के अधोलिखित लक्ष्य निर्धारित किये हैं

(१) सेकण्डरी स्कूल के अथशास्त्र का ध्येय, आधुनिक अथशास्त्र के सिद्धान्तो का निरीक्षण एव व्यावहारिक रीतियो के द्वारा अध्यापन करना होना चाहिए।

(२) छात्रो को दिन प्रतिदिन के जीवन के लिए अथशास्त्र के सिद्धान्तो को व्यवहार रूप मे लाने के लिए शिक्षित करना, अर्थात दूसरे शब्दो मे कह सकते हैं कि छात्रों को अथशास्त्र के सिद्धान्तो का व्यावहारिक जीवन मे प्रयोग करने के लए प्रशिक्षित करना ।

(३) छात्रो को व्यावहारिक जीवन की समस्याओ को सुलझाने के योग्य बनाना ।

(४) छात्रो मे सामाजिक तथा आर्थिक वातावरण को समझने के प्रति स्पष्ट सूझ उत्पन्न करना ।[2]

एम० पी० मुफात (M P Moffatt) ने अपनी पुस्तक 'Social Studies Instruction' मे अर्थशास्त्र के निम्नलिखित लक्ष्य बताये हैं

(१) छात्रो को उन आर्थिक स्थितिया तथा लाभ के सम्भाव्य साधनो से परिचित कराना जिससे वे अपने व्यवसाय का चयन कर सकें ।

---

1 The aims of study of Economics are to gain Knowledge for its own sake and to obtain guidance in the practical conduct of life and especially social life "—*Marshall*

2 ' The aim of secondary school economics should be to teach modern economic principles by observation and *through an understanding of current practices Pupils* should be trained to apply sound economic theory to everyday life Of the economic problems of the present day those connected with industry, the tariff, taxation, the expense of government, and the cost of living are *but a few of the many that citizen has to face continually* A thorough appreciation of these problems and a clear insight by the pupil into the social and economic environment are aims that, when achieved, are worthwhile and contribute largely to the main aims of education "
—Bining and Bining, *Teaching the Social Studies in Secondary Schools*, p 41

(२) छात्रो मे कुशल उपभोक्ता की भावना का विकास करना।

(३) राष्ट्रीय आय मे वृद्धि करने की क्षमता प्रदान करना।

(४) छात्रो म बजट के व्यावहारिक महत्त्व को समझने की क्षमता प्रदान करना।

(५) राष्ट्रीय रहन सहन के स्तर को उच्च बनाने के लिए योग्यता प्रदान करना।

Lipstren[1] ने अर्थशास्त्र शिक्षण के अधोलिखित उद्देश्यो का प्रतिपादन किया है

(१) भोजन वस्त्र निवास तथा स्वास्थ्य के उपयोग एव क्रयशक्ति मे वृद्धि करना। (To promote wiser purchasing and consumption of food clothing shelter and health)

(२) छात्रो को उन अनुभवो को प्रदान करना जिनसे उनमे तर्क-सगत चयन करने की शक्ति का विकास हो। (To provide experiences that will improve the ability of students to make rational choices)

(३) नागरिकता क उन गुणो का विकास करना जिससे वह कुशल उपभोक्ता बन सके। (To develop intelligent consumer citizenship)

(४) छात्रो को उन साधनो एव सूचनाओ के स्रोतो से परिचित कराना जो एक उपभोक्ता क लिए लाभदायक होते हैं। (To aquaint the student with agencies and sources of information that are helpful to the consumer)

(५) छात्रो मे आर्थिक समस्याओ के लिए व्यापक सामाजिक विवेक उत्पन्न करना। (To develop a broad social intelligence in economic problems)

(६) उच्च स्तरीय मूल्यो एव रुचियों को विकसित करना। (To develop high standards of values and taste)

(७) लाभ की अथ व्यवस्था म उपभोक्ता के कार्यो की सराहना करने की शक्ति विकसित करना। (To cultivate an appreciation of the role of consumer in a profit economy)

---

1 O Lipstre, Experts Book at Consumer Education in the Secondary School *The School Review*, LVII (March 1946), pp 155 57
—Quoted by Moffatt in *Social Studies Instruction*, pp 316 17,

(८) सहयोगी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करना जिससे आर्थिक कल्याण में वृद्धि हो। (To promote co operative attitudes that tend to increase the economic well-being)

(६) प्रचार की रीतियो के मूल्याकन के साधनो को प्रदान करना। (To provide means of evaluating the techniques of advertising)

(१०) राजकीय व्ययो के महत्त्व को समझने की शक्ति उत्पन्न करना। (To develop an understanding of the significance of public expenditures)

(११) उपभोक्ता मे अपने अवकाश के समय का सदुपयोग करने के लिए एक दर्शन उत्पन्न करना तथा इसके साथ ही साथ अच्छी क्रियाशीलता की भावना का विकास करना जिससे वह अपनी व्यावसायिक रुचिया को सतुष्टि कर सके। (To develop in the consumer a philosophy about his use of leisure time, as well as good "buymanship" in satisfying his avocational interests)

भारतीय स्थितियो के अनुसार अर्थशास्त्र-शिक्षण के लक्ष्य
(Aims of Teaching Economics According to Indian Conditions)

भारत मे अर्थशास्त्र की शिक्षा की आवश्यकता—भारत एक नवोदित राष्ट्र (Rising Nation) है। शताब्दियो की परतन्त्रता के उपरान्त हमारा देश सन् १६४७ मे स्वतन्त्र हुआ और उसने अपने जीवन मे एक नवीन चरण मे पदार्पण किया। भारत ने लोकतन्त्र को राजनीतिक क्षेत्र मे अपनाया। परन्तु लोकतन्त्र का अर्थ राजनीतिक क्षेत्र तक ही सीमित नही है वरन् वह जीवन-यापन करने का एक ढङ्ग (Mode of life) भी है। लोकतन्त्र प्रणाली को जीवन के समस्त क्षेत्रो मे अपनाया जाना चाहिए। उदाहरणार्थ—सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और नैतिक आदि। क्योकि लोकतन्त्र शासन का एक स्वरूप है, यह एक प्रकार की अर्थ-व्यवस्था (Enonomy) है, समाज की एक व्यवस्था, जीवन का एक पथ एव इन समस्त वस्तुओ की एक मिश्रित व्यवस्था है। जब लोकतन्त्र एक प्रकार की अर्थ-व्यवस्था है तो भारत के लिए अर्थशास्त्र की शिक्षा की नितान्त आवश्यकता है क्योकि राजनीतिक लोकतन्त्र आर्थिक लोकतन्त्र के अभाव मे सफल नही हो सकता। परन्तु आर्थिक लोकतन्त्र तभी स्थापित किया जा सकता है जब वहाँ के नागरिको को अर्थशास्त्र का ज्ञान हो। यद्यपि हमारे देश मे अर्थशास्त्र का अध्ययन कराया जाता है

परन्तु उन्हे जो आर्थिक नियम एव सिद्धान्त बनाये जाते हैं वे भारतीय स्थितियो के अनुकूल नही हैं वरन् विदेशी वातावरण की सृष्टि हैं। ऐसी स्थिति मे हमारे राष्ट्र को भारतीय अर्थशास्त्र एव अर्थशास्त्रियो की नितान्त आवश्यकता है।

आज का भारत निर्धन है। प्राचीन काल मे यह चाहे कितना ही सम्पन्न एव समुन्नत था, परन्तु मध्यकाल मे इसकी प्रगति अवरुद्ध ही नही हो गई वरन् यह बहुत पिछड गया। अब पुन भारत आर्थिक विकास की ओर अग्रसर हो रहा है। इस समय उसके सामने दरिद्रता, शोषण, बेकारी, उद्योग-धन्धो की हीन दशा, कृषि की अवनति, जनाधिक्य (Over Population) राष्ट्रीय चरित्र का अभाव आदि अनेक जटिल समस्याएँ हैं। भारत की अधिकाश जनता कठिन परिश्रम करने के उपरान्त भी भरपेट भोजन प्राप्त नही कर पाती। देश मे कभी अनावृष्टि, कभी अतिवृष्टि, कभी उपलवृष्टि के कारण और सिंचाई के अपर्याप्त साधनो के कारण पर्याप्त अन्न का उत्पादन नही होता है। भारत एक कृषि-प्रधान देश होते हुए भी यहाँ कृषि-उद्योग बडी दयनीय अवस्था मे है। यह उद्योग वर्षा का जुआ बन गया है। औद्योगिक दृष्टि से भी भारत का स्थान बहुत ही निम्न है। अत देश की इन जटिल समस्याओ के सुलझाने, राष्ट्र की निर्धनता के निवारण तथा देश के आर्थिक विकास के लिए अर्थशास्त्र का ज्ञान परमावश्यक है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि भारत के लिए अर्थशास्त्र की सम्यक् शिक्षा की नितान्त आवश्यकता है। जब भारत के लिए इस शिक्षा की आवश्यकता है तो स्वत· यह प्रश्न उठता है कि भारत की स्थितियो के अनुसार अर्थशास्त्र-शिक्षण के क्या ध्येय होने चाहिए? इसके उत्तर मे अधोलिखित उद्देश्यो को निर्धारित किया जा सकता है—

(१) अर्थशास्त्र के अध्ययन से छात्रो को देश की आर्थिक स्थिति एव समस्याओ से परिचित कराना, जिससे वे उनको हल करने मे तथा राष्ट्र के आर्थिक विकास मे सहयोग प्रदान कर सकें।

(२) छात्रो को अर्थशास्त्र के सामान्य नियमो का ज्ञान कराना जिससे वे आर्थिक समस्याओ के सुलझाने मे उनका उपयोग कर सकें तथा आवश्यकतानुसार नवीन नियमो के प्रतिपादन मे सहयोग दे सकें। दूसरे शब्दो मे, कहा जा सकता है कि समस्याओ के विश्लेषण के पश्चात् वे सामान्यीकरण कर सकें।

(३) छात्रो मे आर्थिक नागरिकता (Economic Citizenship) का विकास करना, जिससे वे उत्तरदायित्व की भावना से कार्य कर सकें। यदि वे आर्थिक क्षेत्र मे नागरिक के कर्त्तव्यो एव अधिकारो से परिचित हो जायँगे तो देश मे आर्थिक विषमताओ का निवारण हो जायगा।

(४) छात्रो को राष्ट्र की औद्योगिक एव व्यापारिक उन्नति के हेतु अभीष्ट उपायो से अवगत कराना।

(५) छात्रो को राज्य के कर-विषयक नियमो से पूर्णतः अवगत कराना तथा उनकी समीक्षा करने की क्षमता विकसित करना।

(६) छात्रो मे मितव्ययता की भावना उत्पन्न करना जिससे वे व्यावहारिक जीवन मे बजट के महत्त्व को समझ सकें।

(७) दूसरे राष्ट्रो की आर्थिक समस्याओ से अवगत कराकर उनके प्रति उदारता एव सहानुभूतिपूर्वक विचार करने की शक्ति उत्पन्न करना जिससे उनका दृष्टिकोण व्यापक बन सके।

(८) छात्रो मे वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific outlook) उत्पन्न करना जिससे व प्रत्येक तथ्य का अन्धानुसरण न कर सकें वरन् उसको विचार एव विश्लेषण करने के पश्चात् ही अपना सके।

(९) सरकार द्वारा प्रदान किये गये आर्थिक आँकडो एव घटनाओ को समीक्षात्मक दृष्टि से विश्वसनीयता की कसौटी पर जाँचने की क्षमता प्रदान करना।

(१०) छात्रो मे आर्थिक जागरूकता उत्पन्न करना।

(११) देश की विभिन्न वस्तुओ के उत्पादन, वितरण, विनिमय एव उपभोग के नियमो से छात्रो को अवगत करा ।

(१२) देश के रहन-सहन के स्तर एव राष्ट्रीय आय की वृद्धि करने मे छात्रो को सहयोगी नागरिक बनाना।

(१३) छात्रो को देश की सम्पत्तियो से परिचित कराकर उनके द्वारा अधिकतम लाभ उठाने की क्षमता उत्पन्न करना।

(१४) छात्रो मे सहयोग, सहिष्णुता, उदारता, मितव्ययता, सदाचारिता, एकता आदि गुणो का विकास करना जिससे व सामाजिक उन्नति मे सहयोग दे सकें तथा इन गुणो के विकास के द्वारा उनमे सामाजिक चेतना उत्पन्न करना।

(१५) अर्थशास्त्र के शिक्षण द्वारा छात्रो के ज्ञान मे अभिवृद्धि करना जिससे वे आर्थिक पदो, उदाहरणार्थ व्यय, भूमि, लगान, पूँजी, धन, श्रम, उत्पत्ति, आवश्यकता, आदि का ज्ञान प्राप्त कर सकें तथा उनके प्रति अपनी धारणाएँ स्थिर कर सकें। इसके अतिरिक्त उन्हें आर्थिक नियमो एव प्रक्रियाओ से अवगत कराना। उदाहरणार्थ—समसीमान्त उपयोगिता नियम (Law of Equi-marginal Utility), क्रमागत उपयोगिता ह्रास नियम (Law of Diminishing Utility), मांग तथा पूर्ति का नियम (Law of Demand and Supply), ग्रेशम का नियम (Gresham's Law), ..

(Standard of Living), पारिवारिक बजट (Family Budget), सहकारिता (Co-operation) आदि।

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र-शिक्षण के उद्देश्य

इस स्तर पर अथशास्त्र शिक्षण के अधोलिखित उद्देश्य होने चाहिए

(१) आर्थिक नागरिकता (Economic Citizenship)—उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो मे अथशास्त्र शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य आर्थिक नागरिकता का विकास करना होना चाहिए। स्वत प्रश्न उठता है कि आर्थिक नागरिकता का क्या अथ है ? इस सम्बन्ध मे कहा जा सकता है कि यह वह भाव है जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति आर्थिक मामलो मे अपने दायित्वो को समझने एव उनका उपयुक्त ढग से निर्वाह करने की क्षमता रखता है। आर्थिक नागरिकता का अथ देखन के पश्चात प्रश्न यह उठता है कि इसके विकास के लिए छात्रो मे किन किन गुणो को विकसित किया जाय। इसके लिए अग्रलिखित गुणो अब आदतो के विकास पर बल दिया जाना चाहिए

(i) आर्थिक कुशलता (Economic Efficiency)—यह वह क्षमता है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने भार को स्वय उठाने म समथ होता है अर्थात वह समाज या दूसरे व्यक्तियों पर भारस्वरूप नही होता है। वह अपनी जाविका कमाने के योग्य होता है।

(ii) आर्थिक समस्याओं की समझदारी (Understanding of Economic Problems)—व्यक्ति को देश तथा उसके निवासियो की जो आर्थिक समस्याएँ है उनसे अवगत होना आवश्यक है। यदि वह इनसे अनभिज्ञ रहेगा तो वह अपने जीवन को सफलतापूवक व्यतीत नही कर सकेगा। अत माध्यमिक स्तर पर छात्रो का देश की आर्थिक समस्याओ से अवगत कराया जाना चाहिए। परन्तु उनको इनस अवगत कराना ही पर्याप्त नही है वरन् उनके समाधान के लिए तत्पर बनाना भी आवश्यक है। उदाहरणाथ आज हमारे देश के समक्ष सबसे बडी समस्या खाद्यान्न की है। अत बालको को इसका जानकारी देना आवश्यक है और उनको यह भी बताना चाहिये कि इस सम्बन्ध मे उनके क्या कर्त्तव्य हैं और वे इसके समाधान म क्या योग दे सकते है।

(iii) उत्तरदायित्व की भावना (Sense of Responsibility)—इस स्तर पर छात्रा म उत्तरदायित्व की भावना का विकास किया जाना चाहिए। इसके लिए उन्हे विभिन्न आर्थिक क्रियाओ, योजनाओ, समुदायो आदि मे सक्रिय भाग लेने के लिए अवसर प्रदान किए जाना चाहिए। उदाहरणार्थ—विद्यालय मे सहकारी बैंक, भण्डार कण्टीन आदि का सचालन किया जाय। उनमे छात्रो को अपने दायित्वो को पूण करने के लिए काय भार दिया जाय।

(iv) कुशल उपभोक्ता (Efficient Consumer)—छात्रो को कुशल उपभोक्ता बनाया जाय। इसके लिए उन्हे विभिन्न वस्तुओ के क्रय-विक्रय, बजट-निर्माण आदि मे प्रशिक्षण प्रदान किया जाय। प्रत्येक छात्र को अपना बजट बनाने के लिए कहा जाय और मितव्ययी जीवन व्यतीत करने पर बल दिया जाय।

(v) अनुशासित जीवन व्यतीत करने पर बल (Emphasis on Disciplined life)—छात्रो मे अनुशासित जीवन व्यतीत करने के लिए विभिन्न आदतो एव व्यवहारो का विकास किया जाय। यदि इस प्रकार के जीवन की नीव यही डाल दी जायेगी तो वे अपने भावी जीवन मे सफलतापूर्वक कार्य कर सकेंगे और राष्ट्रीय चरित्र को उच्च बनाने मे समर्थ होगे। इसके लिए ऐसी सामाजिक तथा आर्थिक क्रियाओ पर बल दिया जाय जिनको पूर्ण करने मे उन्हे अनुशासित ढग से कार्य करना पडे। इस स्तर के पाठ्य-क्रम मे श्रमदान, विभिन्न प्रकार के समाज-सेवा कार्य प्रायोगिक कार्य—सिंचाई के साधनो की वृद्धि मे सहयोग देने के लिए नालियाँ बनवाना, कच्चे कुएँ खुदवाना आदि—को स्थान प्रदान किया जाय।

(२) आर्थिक जीवन के सिद्धान्तो का ज्ञान (Knowledge of the Principles of Economic Life)—इस स्तर पर अर्थशास्त्र-शिक्षण का उद्देश्य छात्रो को आर्थिक जीवन के सिद्धान्तो का ज्ञान प्रदान करना है। इसके लिए छात्रो के समक्ष आर्थिक व्यवस्था के स्वरूप को स्पष्ट किया जाय। इनको केवल सैद्धान्तिक ज्ञान देना ही पर्याप्त नही है वरन् इन सिद्धान्तो को दिन प्रतिदिन के जीवन मे प्रयोग मे लाने के लिए भी बल दिया जाय।

(३) राष्ट्रीय एव अन्तरराष्ट्रीय आर्थिक समस्याओ का ज्ञान (Knowledge of the National and International Economic Problems)—छात्रो को राष्ट्र की आर्थिक समस्याओ से अवगत कराया जाय। जब तक बालको को इन आर्थिक समस्याओ एव विभिन्न वर्गों के आर्थिक सम्बन्धो से अवगत नही कराया जायेगा तब तक वे आर्थिक नागरिकता को प्राप्त करने मे असमर्थ रहेगे। अत इनकी समझदारी एव ज्ञान प्रदान करना आवश्यक है।

वैज्ञानिक आविष्कारो ने सम्पूर्ण विश्व को एक बनाने मे बहुत योग दिया है। आज कोई भी राष्ट्र आत्मनिर्भर नही है। उसे किसी न किसी वस्तु के लिए पूर्णतया या अशत- दूसरे राष्ट्रो पर निर्भर रहना पडता है, विभिन्न प्रकार के आर्थिक सम्बन्ध एव हित विभिन्न अन्तरराष्ट्रीय समस्याओ को जन्म देते हैं। इन अन्तरराष्ट्रीय समस्याओ की जानकारी प्रदान करना बहुत आवश्यक है क्योकि इनके अभाव मे व्यक्ति मानवता के प्रति अपने दायित्वो को पूर्ण नही कर सकता है।

(४) वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास (Development of Scientific

Attitude)—माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र-शिक्षण का उद्देश्य छात्रो मे वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना होना चाहिए। आज के लोकतन्त्रीय युग मे इस प्रकार के दृष्टिकोण का विकास करना परमावश्यक है। इसके लिए छात्रो मे स्वतन्त्र चिन्तन एव निर्णय करने की आदतो का विकास किया जाय।

अर्थशास्त्र-शिक्षण के महत्त्व
(Values of Teaching Economics)

जे० एच० डॉड[1] (J H Dodd) ने अर्थशास्त्र-शिक्षण के अधोलिखित महत्त्व बताये हैं

(१) अर्थशास्त्र-शिक्षण व्यवसाय या पेशे के चयन मे सहायता प्रदान करता है।

(२) इसके द्वारा छात्र वैयक्तिक एव पारिवारिक वित्तीय मामलो की व्यवस्था करना सीख जाते हैं।

(३) धन का सदुपयोग करना सिखाता है।

(४) उद्योग एव व्यवसाय के सगठन मे सहायता प्रदान करता है।

(५) मताधिकार के अधिकारो एव उत्तरदायित्वो को कार्यान्वित करना सिखाता है।

(६) अर्थशास्त्र-शिक्षण तत्कालीन (औद्योगिक) सभ्यता के समझने में सहायता प्रदान करता है।

अर्थशास्त्र-शिक्षण के महत्त्वो को अधोलिखित दो भागो मे विभक्त किया जा सकता है.

(१) सैद्धान्तिक महत्त्व (Theoretical Value)

(२) व्यावहारिक महत्त्व (Practical Value)

(१) सैद्धान्तिक महत्त्व—अर्थशास्त्र शिक्षण के सैद्धान्तिक महत्त्वो को निम्नलिखित भागो मे विभक्त कर सकते हैं

(अ) सैद्धान्तिक ज्ञान वर्द्धन (Expansion of Theoretical Knowledge)

(ब) मानसिक शक्तियो का विकास (Development of Mental Powers)

(स) व्यापक दृष्टिकोण (Broad mindedness)

---

1. J H Dodd, *Economics in the Secondary Schools*, pp 7–8 —Quoted by M P. Moffatt in '*Social Studies Instruction*,' p. 311.

(द) विभिन्न तथ्यो के सापेक्षिक महत्त्व को समझने की शक्ति (Power of understanding of relative importance of different facts)

(य) विविध जटिलताओ का निराकरण (Solution of various complexites)

(अ) सैद्धान्तिक ज्ञान-वर्द्धन—अर्थशास्त्र-शिक्षण से छात्रो को विभिन्न आर्थिक पदो, नियमो तथा धारणाओ का ज्ञान प्राप्त होता है। इनके अध्ययन से वह इस बात के जानने मे समर्थ होता है कि हमारे देश मे किस प्रकार की आर्थिक व्यवस्था है ? उत्पादन किन-किन साधनो के द्वारा होता है ? समाज मे धन का वितरण किस प्रकार होता है ? इन सबके ज्ञान से वह इस बात का अनुभव करने लगता है कि राष्ट्र की आर्थिक व्यवस्था मे उसका क्या स्थान एव दायित्व है। इसके अतिरिक्त वह देश की आर्थिक समस्याओ को वास्तविक रूप से जानने म समर्थ होता है। विभिन्न राजनीतिक विचारधाराओ, उदाहरणार्थ—*समाजवाद, श्रेणी समाजवाद, श्रमिक सघवाद, पूँजीवाद, साम्यवाद* आदि, को समझने मे इस शास्त्र के ज्ञान से सहायता प्राप्त करता है। उपर्युक्त विवेचन क आधार पर हम कह सकते हैं कि इस प्रकार छात्रो के सैद्धान्तिक ज्ञान मे पर्याप्त रूप से वृद्धि हो जाती है।

(ब) मानसिक शक्तियों का विकास समूह-मनोविज्ञान (Faculty Psychology) के समर्थको के अनुसार मस्तिष्क विभिन्न विभागो का, अर्थात्—तर्क शक्ति, चिन्तन शक्ति, स्मरण शक्ति, विवेक शक्ति (Power of Discrimination), निर्णय शक्ति, अवलोकन शक्ति (Power of Observation) आदि का समूह है। अर्थशास्त्र के शिक्षण से इन शक्तियो का विकास होता है। जैसा कि हम गत अध्याय मे देख चुके हैं, अर्थशास्त्र एक विज्ञान है। यद्यपि यह प्राकृतिक विज्ञानो की भाँति विज्ञान नही है जिनमे सिद्धान्तो की सर्जना प्रयोगशाला मे किये गय अवलोकन एव परीक्षण द्वारा की जाती है। इस शास्त्र की प्रयोगशाला समाज और इसकी विषय-सामग्री मानव है जिसकी इच्छाओ, आचरणो, विचारो आदि मे सदैव परिवर्तन होता रहता है। परन्तु इसम 'आगमन तथा निगमन' विधिया का प्रयोग होता है। आगमन विधि के द्वारा छात्रो की अवलोकन-शक्ति का विकास होता है और निगमन विधि तर्क शक्ति के विकास मे सहायता प्रदान करती है। अर्थशास्त्र के अध्ययन मे छात्रो को विभिन्न समस्याओ के विभिन्न पक्षो पर विचार करना पडता है तथा उनके औचित्य एव अनौचित्य का भी पता लगाना पड़ता है। इससे उनका विचार एव विवेक शक्तियो का विकास होता है। इसके अध्ययन म बालको को तथ्यो का सकलन एव उनका सम्बद्ध करना पडता है। जब उनको इस एकत्रित सामग्री मे उपयोगी तत्त्वो का चयन करना पडता है तब उन्हे अपनी निर्णय

शक्ति का प्रयोग करना पडता है। इससे उनकी निर्णय शक्ति विकसित होती है। इस प्रकार अर्थशास्त्र के शिक्षण से छात्रो की मानसिक शक्तियो का पर्याप्त विकास होता है।

(स) व्यापक दृष्टिकोण—जैसा कि हम पिछले अनुच्छेदो मे अध्ययन कर चुके हैं अर्थशास्त्र के द्वारा छात्रो के ज्ञान की वृद्धि होती है। इस ज्ञान के सहारे वह अपनी आर्थिक व्यवस्था को भली भाँति समझ जाता है जिसमे वह अपना जीवन व्यतीत कर रहा है। इसके साथ साथ विभिन्न देशो की आर्थिक व्यवस्थाओ का तुलनात्मक अध्ययन करके इस निष्कर्ष पर पहुँचने मे समर्थ हो जाता है कि मानव कल्याण के लिए कौनसी आर्थिक व्यवस्था उपयुक्त होगी। इसके अतिरिक्त वह जान जाता है कि धन मनुष्य के लिए है न कि मनुष्य धन के लिए। वह व्यावहारिक समस्याओं का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से हल करना सीख जाता है जिससे मानव दृष्टिकोण व्यापक हो जाता है।

(द) विभिन्न तथ्यो के सापेक्षिक महत्त्व को समझने की शक्ति—अर्थशास्त्र शिक्षण से छात्र की बुद्धि तीक्ष्ण हो जाती है। इसके आधार पर वह अनेक घटनाओ एव वस्तुओ म स उपयुक्त एव उचित को निकाल कर ग्रहण कर लेता है और अनावश्यक घटनाओ का परित्याग कर देता है। छात्र आर्थिक परिणामो क निकालने मे विश्लेषण पद्धति का उपयोग करते हैं। जिस समय वे विश्लेषण करते हैं उनके समक्ष अनेक आवश्यक तथा अनावश्यक बातें उपस्थित रहती हैं। वे बिना चयन के किसी परिणाम पर नही पहुँच सकते। अत उन्हें इस सामग्री मे अनुपयोगी को निकालना पडता है। इस प्रकार छात्र इस क्रिया मे इतने पटु हो जाते हैं कि मानवीय आचरण एव व्यवहार को देखते ही यह बता देते हैं कि कौनसा उपयुक्त है और कौनसा अनुपयुक्त है। इस प्रकार छात्रो मे अनेक तथ्यो के सापेक्षिक महत्त्व को पहचानने की शक्ति विकसित हो जाती है।

(य) विविध जटिलताओं का निराकरण—छात्र अर्थशास्त्र मे विभिन्न समस्याओ का अध्ययन करते हैं तथा उनका सुगमतापूर्वक हल करने की विधियां खोजते हैं। इन समस्याओ के हल करने से उनमे समस्या हल करने की कला उत्पन्न हो जाती है। छात्र इसके सहारे अपने जीवन की विभिन्न जटिलताओं एव समस्याओ का निराकरण करते हैं। आधुनिक युग विविधताओ तथा जटिलताओ से भरा हुआ है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे हमे इन जटिलताओं तथा समस्याओ का सामना करना पडता है। अर्थशास्त्र के अध्ययन से हम इन जटिलताओ को सफलतापूर्वक हल करने मे सफल होते हैं। इन समस्याओ को सुलझाने से छात्रो में विवेक एव नागरिकता की भावना उत्पन्न होती है।

(२) व्यावहारिक महत्त्व—प्रो॰ पीगू (Pigou) के अनुसार "अर्थशास्त्र का प्रमुख महत्त्व मस्तिष्क सम्बन्धी अठखेलियाँ करना नहीं है और न यह कि उसके द्वारा हमें ज्ञान केवल ज्ञान के लिए प्राप्त होता है बल्कि यह आचार-शास्त्र का साथी एवं व्यवहार का दास है।" इस प्रकार पीगू ने अर्थशास्त्र के व्यावहारिक महत्त्व पर बल दिया है। अर्थशास्त्र शिक्षण से प्राप्त व्यावहारिक महत्त्वों को अधोलिखित दो भागों में विभक्त किया जा सकता है।

(१) व्यक्तिगत महत्त्व।

(२) सामाजिक महत्त्व।

(१) व्यक्तिगत महत्त्व—व्यक्तिगत क्षेत्र में गृहस्वामी, व्यापारी, श्रमिक, राजनीतिज्ञ, समाजसुधारक आदि आते हैं। गृहस्वामी अर्थशास्त्र के ज्ञान से अपने आय-व्यय को सतुलित करने का ढंग सीख जाता है। इस कार्य में उसको पारिवारिक बजट सम्बन्धी एन्जिल के नियम (Engel's Law) से पर्याप्त सहायता प्राप्त होती है। 'समसीमान्त उपयोगिता नियम' (Law of Equimarginal Utility) के ज्ञान से व्यक्ति कम से कम व्यय द्वारा अधिक से अधिक सतुष्टि प्राप्त करना सीख जाता है। इसके अतिरिक्त व्यक्ति 'उपभोक्ता की बचत' के सिद्धान्त से यह जान जाता है कि किन वस्तुओं पर धन का व्यय करने से उसको अधिक से अधिक सतुष्टि प्राप्त हो सकती है? इस प्रकार अर्थशास्त्र के ज्ञान से व्यक्ति को निम्नलिखित व्यावहारिक महत्त्व प्राप्त होते हैं

(१) सीमित आय के व्यय से अधिकतम सतुष्टि प्राप्त करने के साधनों का ज्ञान प्राप्त करता है।

(२) व्यक्तिगत बजट के आधार पर व्यय करके अपनी आय का सदुपयोग करना सीखता है।

(३) वस्तुओं के क्रय-विक्रय के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त कर लेता है।

(४) आय को वर्तमान तथा भविष्य की आवश्यकताओं पर व्यय करने के साधनों का ज्ञान प्राप्त करता है।

(५) व्यक्ति अपनी बचत के विनियोजन (Investment) के विभिन्न ढंगों की जानकारी प्राप्त करता है।

(६) व्यापारी मुद्रा प्रसार (Inflation) और सकुचन (Deflation) में प्राप्त होने वाले लाभों का ज्ञान प्राप्त करते हैं।

(७) व्यापारी लोग अर्थशास्त्र से उन ढंगों का प्राप्त करते हैं जिनके प्रयोग से वे व्यवसाय में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

(८) उत्पादक अर्थशास्त्र के ज्ञान से अपने उत्पादन-कार्य में बहुत सहायता

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि अर्थशास्त्र का हमारे व्यक्तिगत, राष्ट्रीय एव सामाजिक जीवन मे बहुत महत्त्व है। अत. अर्थशास्त्र के शिक्षण का ध्येय वैयक्तिक तथा सामाजिक जीवन को सुविकसित करना है।

प्रश्न

1. What are the aims of teaching Economics in Higher Secondary School ? (A U, B T, 1960)
उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र शिक्षण के क्या उद्देश्य हैं ?

2. Discuss the aims of teaching Economics at the Higher Secondary School Stage (A U, B T, 1961, 65)
उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र-शिक्षण के उद्देश्यो की विवेचना कीजिए।

3 Mention some of the important objectives of teaching Economics at the High School Stage Against each objective, list a few topics from the High School Syllabus which are calculated to achieve that objective and also describe how exactly this may be done (A U, B T, 1962)
माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र शिक्षण के कुछ प्रमुख उद्देश्यो का उल्लेख कीजिए। प्रत्येक उद्देश्य की प्राप्ति के लिए माध्यमिक स्तर के पाठ्य-क्रम से कुछ प्रकरणो की सूची दीजिए और यह भी बताइए कि उनको किस प्रकार पूणतया प्राप्त किया जा सकता है।

4 What should be the main functional objectives of teaching Economics in Higher Secondary Schools ? In what order of priority would you place the different objectives ? Give reasons (A U, B T, 1963)
उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो मे अर्थशास्त्र शिक्षण के क्या उद्देश्य होने चाहिए ? आप इन विभिन्न उद्देश्यो म किनको प्राथमिकता प्रदान करेंगे ? तर्क सहित समझाइए।

5 'The aim of teaching Economics is to aid the pupil in acquiring Knowledge and understanding of the principles of economic life of the country and its people' Explain, giving examples where necessary (A U, B Ed, 1966)

"अर्थशास्त्र-शिक्षण का उद्देश्य छात्र को देश तथा उसके निवासियो के आर्थिक जीवन के सिद्धान्तो का ज्ञान एव समझदारी प्राप्त करने मे सहायता देना है।' आवश्यकतानुसार उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिए।

6 Discuss fully the aims of teaching Economics at the High School level and make a list of important topics to be included in the Syllabus (A U, B Ed, 1967)
अर्थशास्त्र को हाई स्कूल स्तर पर शिक्षण देने के लक्ष्यो पर पूर्ण प्रकाश डालते हुए उन विषयो की सूची तैयार कीजिए जो आप पाठ्य-क्रम के लिए उपयुक्त समझते हो।

7 Discuss the significant objectives of teaching Economics at *Higher Secondary Stage* *(Udaipur, B Ed, 1967)*
उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र को पढाने के प्रमुख उद्देश्यो की विवेचना कीजिए।

8 Write short note on 'Economic Citizenship'
(Udaipur, B Ed 1967)
'आर्थिक नागरिकता' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

अध्याय ३

अर्थशास्त्र की पाठ्य-वस्तु के चयन एवं संगठन के सिद्धान्त

(Principles of the Selection and Organisation of the Subject-matter of Economics)

"Curiculum consists of all situations that the school *may select and consciously organise for the purpose of* developing the personality of its pupils, for making behavior changes in them" —*Payne*

गत अध्याय मे हमने अर्थशास्त्र के लक्ष्यो का विवेचन किया है। इन लक्ष्यो की प्राप्ति के लिए एक उपयुक्त पाठ्य-क्रम का होना परम आवश्यक है। इसके अभाव मे अर्थशास्त्र के निर्धारित लक्ष्यो की प्राप्ति नही की जा सकती। अतः यह देखना आवश्यक है कि अर्थशास्त्र के पाठ्य-क्रम मे किन-किन सूचनाओ, क्रियाओ, विषयो (Contents) आदि को रखा जाय जिनके अध्ययन से अर्थशास्त्र के लक्ष्यो को प्राप्त किया जाय। परन्तु स्वतः यह प्रश्न उठता है कि इस पाठ्य-सामग्री का चयन किन आधारो पर किया जाना चाहिए। इस सम्बन्ध मे नीचे कुछ सिद्धान्तो का प्रतिपादन किया गया है, जिनके आधार पर अर्थशास्त्र की पाठ्य-सामग्री का चयन होना चाहिए :

(१) क्रिया का सिद्धान्त (Principle of Activity)—अर्थशास्त्र की पाठ्य-वस्तु का चयन क्रिया के सिद्धान्त के अनुसार करना चाहिए क्योंकि यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि बालक स्वक्रिया द्वारा बहुत कुछ सीखते हैं तथा स्वक्रिया द्वारा प्राप्त किया हुआ ज्ञान स्थायी होता है। दूसरे शिक्षा-शास्त्रियो का मत है कि शिक्षा के पाठ्य-क्रम मे चार एच (Four H) अर्थात् स्वास्थ्य (Health), मस्तिष्क (Head), हाथ (Hand) तथा हृदय (Heart) को स्थान मिलना चाहिए। दूसरे शब्दो मे, हम कह सकते हैं कि बालक को इन चारों

'एच' की शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। तीसरे, प्रयोजनवाद के अनुसार बालक अपने मूल्यो का निर्माण स्वयं करता है। इसलिए उसे क्रिया-प्रधान पाठ्य-क्रम प्रदान करना चाहिए। चौथे, बालक स्वभावत सक्रिय होता है, इस कारण यह आवश्यक है कि उसको क्रियाशील बनाए रखने के लिए पाठ्य-क्रम मे विभिन्न क्रियाओ को स्थान मिलना चाहिए। अर्थशास्त्र मे बहुत से ऐसे विषय हैं जिनको बालक सूक्ष्म-निरीक्षण के अभाव मे ग्रहण नहीं कर सकता, उदाहरणार्थ—उद्योगो की दशाएँ एव कार्य-प्रणाली, बाजारो की दशा, नगर तथा ग्राम्य जीवन के रहन-सहन की दशाएँ आदि। इसलिए अर्थशास्त्र के पाठ्य-क्रम मे विभिन्न क्रियाओ का चयन किया जाय जिससे वे इन विषयो का ज्ञान सुगमता एव पूर्णता के साथ प्राप्त कर सकें। हैडो रिपोर्ट का भी यही मत है कि शिक्षा को क्रिया तथा अनुभव के रूप मे देखना चाहिए। इस प्रकार पाठ्य क्रम अनुभव के पदो के रूप मे संयोजित किया जाय।

(२) रुचि का सिद्धान्त (Principle of Interest) —इस सिद्धान्त के अनुसार उन्हीं तथ्यो को चुना जाना चाहिए जो बालक की रुचि के अनुकूल हो। दूसरे शब्दो मे कहा जा सकता है कि बालक की रुचियो, वृत्तियो, योग्यताओ तथा कुशलताओ के अनुकूल पाठ्य-वस्तु का चयन किया जाना चाहिए। शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार के अनुकूल पाठ्य-क्रम बाल-केन्द्रित होना चाहिए तथा पाठ्य-वस्तु का चयन बच्चा की प्रकृति के अनुकूल होना चाहिए। इसके विपरीत जो भी पाठ्य-वस्तु निर्धारित की जायगी वह लदी हुई हो जायगी जो कि लाभप्रद होने के स्थान पर हानिकारक सिद्ध होगी।

(३) लचीलेपन तथा विविधता का सिद्धान्त (Principle of Flexibility and Variety)—प्रकृति के समान मानव भी प्रगतिशील है। वह अपने अस्तित्व के लिए जन्म से ही अनेक प्राकृतिक शक्तियो से सघर्ष करता है और उन पर विजय प्राप्त करके अपने चारो तरफ के वातावरण को अपने अनुकूल बनाने का प्रयास करता है। इस सघर्ष मे वह जिन अनुभवो तथा तथ्यो का प्राप्ति करता है उनको पाठ्य-क्रम म स्थान मिलना चाहिए। ऐसा करने से शिक्षा का स्वरूप अधिक व्यावहारिक और जीवन से सम्बन्धित होगा। पाठ्य-क्रम मे लचीलापन अवश्य होना चाहिए। यदि पाठ्य-क्रम मे लोच नहीं होगा तो उसमे मानवीय अनुभवो को स्थान नहीं मिल सकेगा और शिक्षा के मुख्य लक्ष्यो की भी प्राप्ति नहीं हो सकेगी। शिक्षा का एक प्रधान उद्देश्य है मानवीय अनुभवो को संगृहीत करके उन्हे सुरक्षित रखना तथा आने वाली सन्तति को उन्हे प्रदान करना। यदि पाठ्य-क्रम मे नवीन अनुभवो को स्थान प्रदान करने के लिए व्यवस्था होगी तो शिक्षा अपने उपर्युक्त कार्य को पूर्ण करने मे सफल हो सकेगी। प्रयोजनवाद के अनुसार बालक अपने मूल्यो का स्वय निर्माण करता है। इस कारण भी पाठ्य क्रम मे इन अनुभवो या

मूल्यो को स्थान प्रदान करना चाहिए। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि पाठ्य-क्रम मे वातावरण, आवश्यकता, समय एव परिस्थिति तथा अनुभवो को उचित स्थान मिलना चाहिए। शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार के अनुसार पाठ्य-क्रम मे विविधता भी होनी चाहिए क्योकि समस्त बालक समान नही होते वरन् उनमे वैयक्तिक भेद पाये जाते हैं। इसलिए पाठ्य-वस्तु का चयन करते समय इस सिद्धान्त का सदैव ध्यान रखना चाहिए, जिससे बालक अपनी वैयक्तिक विभिन्नताओ के अनुसार अपने व्यक्तित्व का विकास कर सके।

(४) चयन का सिद्धान्त (Principle of Selectivity)—इस सिद्धान्त के अनुसार आर्थिक जीवन के उन्ही तथ्यो का चयन किया जाना चाहिए जो प्रत्यक्ष रूप से बालक को आर्थिक एव सामाजिक जीवन को समझने एवं उसमे व्यवस्थित होने मे सहायता प्रदान करें। दूसरे शब्दो मे कहा जा सकता है कि अर्थशास्त्र के पाठ्य-क्रम के लिए उन विषयो, पदो, सूचनाओ आदि को चुना जाना चाहिए जो आर्थिक जीवन की व्याख्या एव स्पष्टीकरण करते हैं।

(५) शिक्षा के प्रारम्भिक स्तर पर पाठ्य-क्रम सूचनात्मक एव वर्णनात्मक होना चाहिए।

(६) उच्च स्तर पर अर्थशास्त्र का पाठ्य-क्रम आलोचनात्मक तथा प्रतिबिम्बात्मक होना चाहिए।

(७) पाठ्य-क्रम चारित्रिक रूप से व्यावहारिक होना चाहिए जिसमे छात्रो को आर्थिक आचरण का शिक्षण प्राप्त हो सके। इसके लिए पाठ्य-क्रम मे विभिन्न आर्थिक क्रियाओ को स्थान दिया जाना चाहिए जिससे छात्र उनमे उत्साहपूर्वक भाग ले सकें।

तथ्यों का संगठन
(Organization of Facts)

अर्थशास्त्र की पाठ्य-वस्तु के चयन के पश्चात् उसको इस भाँति सकलित किया जाय जिससे बालको को उसे आत्मसात् करने मे किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव न हो। स्वतः यह प्रश्न उठता है कि इस सामग्री को किन सिद्धान्तो के अनुकूल संगठित लिया जाय जिससे बालक उसको सरलता एव सुगमता से आत्मसात् कर सकें। इसके उत्तर मे अधोलिखित सिद्धान्तो को प्रस्तुत किया जा सकता है :

(१) अर्थशास्त्र की पाठ्य-वस्तु को इस प्रकार सगठित किया जाय जिससे उस सामग्री का नागरिक शास्त्र, भूगोल, इतिहास तथा दूसरे सामाजिक विज्ञानो एव विद्यालय के पाठ्य क्रम के अन्य विषयो से सम्बन्ध स्थापित किया जा सके। यह सम्बन्ध शीर्षात्मक एवं अनुप्रस्थीय दोनो प्रकार से स्थापित होना चाहिए।

विषय के विभिन्न अंगो का परस्पर सम्बन्ध शीर्षात्मक समन्वय कहलाता है। इस प्रकार का समन्वय दूसरे प्रकार से भी स्थापित किया जा सकता है, जैसे एक कक्षा मे प्राप्त की हुई सामग्री दूसरी कक्षा की सामग्री को प्राप्त करने मे सहायता प्रदान करती है। जब एक पाठ्य-वस्तु दूसरे विषयो की पाठ्य-वस्तुओ मे पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित करती है तब वह अनुप्रस्थीय सम्बन्ध कहलाता है। अर्थशास्त्र की पाठ्य-वस्तु का इस प्रकार सकलन करना चाहिए जिससे बालक दोनो प्रकार के सम्बन्धो का लाभ प्राप्त कर सकें तथा पाठ्य-वस्तु को सरलता एवं सुगमता से ग्रहण कर सकें।

(२) अर्थशास्त्र की पाठ्य-वस्तु के सगठन का एक अन्य आधार परिस्थिति है। इसका तात्पर्य यह है कि उसके सगठन मे उन ठोस परिस्थितियो को आधार बनाया जाय जिनके सम्पर्क मे बालक रहता है। इस प्रकार उसका अध्ययन जीवन की परिस्थितियो मे प्रारम्भ किया जाना चाहिए। उसका अध्ययन राष्ट्र तथा अन्तरराष्ट्र से प्रारम्भ न किया जाय अपितु स्थानीय परिस्थितियो को आधार बना कर प्रारम्भ करना चाहिए।

(३) अर्थशास्त्र की पाठ्य-वस्तु का सकलन इस प्रकार किया जाय जिससे बालक शिक्षा के स्थानान्तरण के लाभो से वचित न रह सकें।

(४) अर्थशास्त्र के पाठ्य-क्रम मे पुनरावृत्ति के लिए भी स्थान होना चाहिए। यह इसलिए आवश्यक है कि इसकी पाठ्य-सामग्री मे बहुत सी ऐसी बातें हैं जिनका अध्यापन प्रारम्भ मे अनिवार्य है परन्तु उस समय उनके विषय मे विशिष्ट ज्ञान नही दिया जा सकता क्योकि वह बालको के मानसिक स्तर से बहुत उच्च होगा।

हाई स्कूल कक्षाओ के अर्थशास्त्र के पाठ्य-क्रम का आलोचनात्मक अध्ययन
(A Critical Estimate of Economics Syllabus of High School Classes)

(१) आजकल की हाई स्कूल कक्षाओ के अर्थशास्त्र के पाठ्य-क्रम मे सैद्धान्तिक तत्त्व अधिक निहित हैं। इसमे सैद्धान्तिकता पर बल दिया गया है। वस्तुत इसमे सैद्धान्तिकता की अपेक्षा व्यावहारिकता को अधिक स्थान दिया जाना चाहिए। इसके लिए पाठ्य-क्रम मे प्रयोगात्मक कार्य को स्थान दिया जाय। उदाहरणार्थ—उद्योगो, बाजारो आदि का निरीक्षण कराकर छात्रो को आर्थिक सिद्धान्तो को समझाया जाय। छात्रो से श्रमिक, किसान तथा छात्र-बजट तैयार करवाये जायें। छात्रो से विभिन्न रेखाचित्र, मानचित्र बनवाये जाने चाहिए।

(२) यह पाठ्य-क्रम क्रिया-प्रधान नही है। यदि क्रियाओ को स्थान भी दिया गया है तो केवल सैद्धान्तिक रूप मे। उदाहरणार्थ—घरेलू उद्योग धन्धे, सहकारी बैंक, सहकारी दुकान आदि क्रियाओ का सयोजन किया जाय।

(३) इसमे रुचि तथा विविधता के सिद्धान्त को नही अपनाया गया है।

(४) अर्थशास्त्र के पाठ्य-क्रम मे आत्मिक (Subjective) तत्त्व की प्रधानता है।

(५) अर्थशास्त्र का वर्तमान पाठ्य-क्रम बहुत सकुचित है।

(६) इसके द्वारा शैक्षिक जीवन के 'उपयोगिता' (Precise) नामक विभाग की पूर्ति नही होती। इसके द्वारा किशोर अवस्था के छात्रो को विभिन्न आवश्यकताओ तथा योग्यताओ की सतुष्टि नही होती।

(७) अर्थशास्त्र का पाठ्य-क्रम परीक्षा रूपी भयकर सर्प से ग्रसित है।

विभिन्न स्तरों पर अर्थशास्त्र के पाठ्य-क्रम की रूपरेखा
(Outline Syllabus of Economics at different Stages)

जूनियर स्तर—इस स्तर पर अर्थशास्त्र एक पृथक् विषय नहीं होना चाहिए वरन् इसके आधारभूत सिद्धान्त सामाजिक अध्ययन नामक विषय के अन्तर्गत पढाए जाने चाहिए। इन आधारभूत सिद्धान्तो के ज्ञान के अभाव मे बालक उच्च स्तर पर इनको नही समझ पायेगा। इस स्तर के अन्तर्गत कक्षा ६, ७ तथा ८ आती हैं। इनके लिए निम्नलिखित विषय-सूची निर्धारित की जा सकती है :

(१) स्थानीय आर्थिक समस्याओ का व्यावहारिक ज्ञान।

(२) प्रदेशीय एव राष्ट्रीय आर्थिक समस्याओ का सक्षिप्त परिचय।

(३) कृषि—कृषि मे मशीनो के प्रयोग, खाद तथा विभिन्न फसलो का ज्ञान।

(४) घरेलू-उद्योग धन्धे—उनका सैद्धान्तिक एव व्यावहारिक ज्ञान।

(५) श्रमिकों की समस्याओ का प्रारम्भिक ज्ञान।

(६) सहकारी क्रियायें—सहकारी दुकान, बैंक आदि का सचालन।

(७) डाक-व्यवस्था का ज्ञान।

(८) मनोरंजन के साधनो का महत्त्व।

(९) प्रायोगिक कार्य—वन महोत्सव, कृषि कार्य आदि।

(१०) आवागमन के साधनो की जानकारी।

हाई स्कूल स्तर—इस स्तर पर पाठ्य-क्रम को दो प्रश्न पत्रो मे बांटा जा सकता है। उनके अन्तर्गत अग्रलिखित विषय-सूची (Contents) को रखा जा सकता है :

प्रथम प्रश्न-पत्र :

(१) अर्थशास्त्र—अर्थ, विभाग, विषय-विस्तार तथा महत्त्व ।

(२) अर्थशास्त्र के महत्त्वपूर्ण पदो (Terms) की परिभाषाएँ—उपयोगिता, अर्घ (Value), मूल्य (Price) धन, आय, आदि ।

(३) उत्पत्ति के साधन—भूमि, श्रम, पूँजी, सगठन तथा साहस । इन साधनो का कृषि एव उद्योग मे महत्त्व ।

(४) अदल-बदल (Barter)—क्रय विक्रय, बाजार ।

(५) आवश्यकताएँ—अर्थ, वर्गीकरण ।

(६) पारिवारिक बजट ।

(७) घरेलू उद्योग-धन्धे ।

(८) श्रम तथा श्रमिको की समस्याएँ ।

(९) कृषि की आय का वितरण ।

(१०) बटाई तथा उसके दोष ।

(११) ग्रामीण समस्याएँ—भूमि, भोजन, आवागमन, स्वास्थ्य, सफाई, शिक्षा, मनोरजन, पशुपालन, ऋण, आदि की समस्याएँ ।

(१२) ग्राम तथा जिले का शासन—ग्राम पचायत का महत्त्व ।

(१३) सहकारी आन्दोलन ।

(१४) व्यावहारिक कार्य—ग्राम पचायतो का निरीक्षण, बाजारो तथा श्रमिको की बस्तियो की दशाओ का निरीक्षण । घरेलू उद्योग-धन्धो तथा सहकारी क्रियाओ का स्कूल मे सचालन, छात्र बजट का निर्माण ।

द्वितीय प्रश्न-पत्र

(१) आर्थिक भूगोल—अर्थ, महत्त्व तथा क्षेत्र ।

(२) मनुष्य तथा उसका वातावरण—भौतिक वातावरण तथा उसका आर्थिक जीवन पर प्रभाव ।

(३) भारत की प्राकृतिक दशा—मिट्टी तथा उसकी बनावट, वर्गीकरण आदि । जलवायु, सिचाई के साधन एव उनकी आवश्यकता । वर्षा तथा उसका वितरण ।

(४) भारत की प्रमुख फसलें—खाद्य फसलें, पेय फसलें तथा अन्य फसलें ।

(५) भारत की पशु-सम्पत्ति ।

(६) भारत के खनिज पदार्थ ।

(७) वन-सम्पत्ति ।

(८) शक्ति के साधन—मानव, पशु, हवा, लकडी, कोयला, तेल, पानी ।

(९) उद्योग धन्धो का स्थानीयकरण ।

(१०) जनसख्या—महत्त्व तथा वितरण ।

(११) यातायात एव सदेशवाहन के साधन—सड़कें, रेलें, नदियाँ, समुद्री यातायात, वायु यातायात, डाक, तार, टेलीफोन तथा बेतार के तार (Wireless)।

(१२) भारतीय प्रसिद्ध नगर, बन्दरगाह एवं हवाई अड्डे—इनका विकास एव महत्त्व।

(१३) सहकारी आन्दोलन।

(१४) व्यावहारिक कार्य—मानचित्रों तथा चार्टों का निर्माण, विभिन्न उद्योगो बाँधो, बिजलीघरो एव प्राकृतिक साधनो का निरीक्षण, यातायात एवं संदेशवाहन के साधनो का छात्रो द्वारा उपयोग तथा उनकी कार्य-प्रणाली का उनके सम्मुख प्रदर्शन।

इण्टरमीडियेट—इस स्तर पर भी पाठ्य-वस्तु को दो भागो मे विभाजित किया जाना चाहिए। यहाँ भी सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक कार्य मे प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।

प्रथम भाग

(१) **विषय-प्रवेश**—विषय-वस्तु, अर्थशास्त्र एक कला या विज्ञान, विषय-विस्तार, अर्थशास्त्र का अन्य विषयो से सम्बन्ध, आर्थिक जीवन का विकास, सामाजिक तत्त्व एव भारतीय अर्थ-व्यवस्था।

(२) **उपभोग**—अर्थ एव उसके भेद, उपभोग का महत्त्व, आवश्यकताएँ—अर्थ, वर्गीकरण। उपयोगिता—सीमान्त तथा कुल उपयोगिता, उपयोगिता ह्रास नियम, सम-सीमान्त उपयोगिता नियम, उपभोक्ता की बचत, माँग तथा पूर्ति का नियम, माँग की लोच, पारिवारिक बजट, आय का वितरण तथा व्यय का सामाजिक पक्ष।

(३) **उत्पत्ति**—उत्पत्ति तथा आवश्यकता मे सम्बन्ध, उत्पत्ति के नियम, उत्पत्ति के साधन।

भूमि—भारत के प्राकृतिक उपहार, कृषि, उद्योग तथा वाणिज्य की दृष्टि से भूमि का उपयोग, उत्पत्ति के साधन के रूप मे भूमि का महत्त्व एवं उसका उपयोग।

श्रम—भारत मे जनसंख्या का घनत्व तथा वितरण, श्रम का अर्थ, भेद, एवं महत्त्व, श्रम की कार्य-क्षमता।

पूँजी—(चल एव अचल) इमारत एव मशीन, भारत में पूँजी, भारत मे यातायात एव आवागमन के साधन, सिंचाई व्यवस्था तथा इनका आर्थिक जीवन पर प्रभाव।

प्रबन्ध एवं साहस—अर्थ एवं महत्त्व, भारत मे प्रबन्ध की वर्तमान स्थिति, उत्पत्ति के साधनो की कुशलता, कार्य-क्षमता की वृद्धि के उपाय, श्रम-विभाजन

तथा मशीनो का विशेषीकरण, बडे पैमाने पर उत्पत्ति एव उसकी सीमाएँ, भारतीय कृषि, उत्तरप्रदेश के ग्रामीण उद्योग, औद्योगिक सगठन का विकास।

कर—करो का विकास, प्रत्यक्ष एव परोक्ष कर तथा उनमे भेद, केन्द्रीय एव प्रान्तीय कर प्रणाली, उत्तर प्रदेश की स्थानीय सस्थाओ की आय-व्यय की मदें।

द्वितीय भाग

इसमे अर्थशास्त्र के दो प्रमुख विभाग अर्थात् विनिमय एव वितरण रखे जाने चाहिए।

(१) विनिमय—आवश्यकता एव विकास बाजार, अय निर्धारण करने का सिद्धान्त द्रव्य का अथ, काय एव भेद, मुद्रा, ग्रशम नियम साख, साखपत्र, भारतीय बैंक व्यवस्था, सहकारिता।

(२) वितरण—अथ एव उसकी समस्या लगान तथा उसके निर्धारण के सिद्धान्त, वेतन तथा मजदूरी, सूद एव लाभ।

व्यावहारिक काय—(१) चार बजट—कारीगर, श्रमिक, किसान तथा छात्र के बजट।

(२) माग, पूर्ति, आय-व्यय, बचत सम्बन्धी नियमो के रेखाचित्र।

(३) स्कूल एव स्थानीय उद्योग धन्धो के व्यय का विवरण।

(४) विभिन्न उद्योगो का निरीक्षण एव उनके विकास के लिए सुझाव।

प्रश्न

1 What principles should be borne in mind in selecting and organizing the subject mater of Economics ?
अर्थशास्त्र की पाठय-वस्तु को सकलित एव व्यवस्थित करते समय किन-किन सिद्धान्तो को ध्यान मे रखना चाहिये ? विवेचना कीजिए।

2 Give a critical estimate of syllabus in Economics of High School class —(A U, B T 1957, 59)
हाईस्कूल कक्षाओ के अर्थशास्त्र के पाठ्य क्रम का आलोचनात्मक विवेचन कीजिए।

3 What principles should be borne in mind in framing a syllabus in Economics for classes XI and XII ? Does the present syllabus need modification ? If so, in what respects ? —(A U, B Ed, 1966)
कक्षा ११-१२ के लिए अर्थशास्त्र के पाठयक्रम का निर्माण करते समय किन सिद्धान्तो को ध्यान मे रखा जाना चाहिये ? क्या आधुनिक पाठ्यक्रम मे सुधार करने की आवश्यकता है ? यदि हाँ, तो किन किन क्षत्रो मे सुधार किया जाना चाहिये ?

अध्याय ४

अर्थशास्त्र की शिक्षण-पद्धतियाँ
(Method of Teaching Economics)

"Flexibility and initiative in dealing with problems are characteristics of any conception to which method is a way of managing material to develop a conclusion."

—*Dewey*

(Democracy and Education, p. 200)

आधुनिक युग मे शिक्षको तथा शिक्षा-शास्त्रियो के समक्ष एक गम्भीर प्रश्न यह है कि क्या शिक्षक को शिक्षण-पद्धतियो पर अधिकार करना चाहिए अथवा विषय-वस्तु पर ? इस प्रश्न के उत्तर मे दो विरोधी मत हैं। एक वर्ग के समर्थकों का कहना है कि शिक्षक को केवल विषय-वस्तु पर अधिकार करना चाहिए। इसके विपरीत, दूसरा वर्ग इस बात का पक्षपाती है कि शिक्षक का शिक्षण-पद्धतियो पर अधिकार होना चाहिए। यदि इस विवाद के मूल्यो पर ध्यानपूर्वक देखा जाय तो स्पष्ट होगा कि शिक्षक को अपनी विषय-वस्तु के अधिकार के साथ-साथ शिक्षण-पद्धति के समस्त पक्षो का भी ज्ञान होना आवश्यक है, तभी वह उत्तम शिक्षण प्रदान कर सकता है। प्रो० बाइनिंग तथा बाइनिंग का कथन है कि शिक्षण-शास्त्र को शिक्षण-प्रक्रिया का निष्क्रिय पक्ष न मान कर शिक्षा का सक्रिय पक्ष मानना चाहिए।[1] इस प्रकार कहा जा सकता है कि शिक्षण-विधि का शिक्षा मे बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। पद्धति वह

1. Methodology should be concieved as a dynamic function of Educati n and not as static aspect of the process of Teaching

—Bining and Bining, *Teaching the Social Studies in Secondary Schools*, p. 46.

मार्ग है जो ज्ञान को प्रदान करने के लिए अपनाया जाता है। इस प्रकार शिक्षण मे पद्धति का वही महत्त्व है जो किसी निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचने के लिए सत्य मार्ग का है। जिस प्रकार सत्य मार्ग के अभाव मे एक व्यक्ति निर्दिष्ट स्थान पर नही पहुँच सकता उसी भाँति पद्धति के अभाव मे ज्ञान प्रदान नही किया जा सकता है। पद्धति के अभाव मे शिक्षा के उद्देश्यो की प्राप्ति नही हो सकती है। इस प्रकार पद्धति का तात्पर्य एव महत्त्व देखने के पश्चात् यह प्रश्न स्वत उठता है कि उत्तम पद्धतियो के उद्देश्य क्या होने चाहिए ? माध्यमिक शिक्षा आयोग ने अधोलिखित उद्देश्य निर्धारित किये हैं

(१) माध्यमिक शिक्षा आयोग के मतानुसार समस्त शिक्षण पद्धतियो का उद्देश्य काय के लिए प्रेम विकसित करना' होना चाहिए। इसके साथ ही काय करने की इच्छा उत्पन्न करना भी उनका उद्देश्य होना चाहिए। यदि शिक्षण पद्धतियाँ इन उद्देश्यो को विकसित करने मे असफल रहती हैं तो उनके द्वारा प्रदान की गई शिक्षा न तो व्यक्ति को ही शिक्षित कर सकती है और न उनके चरित्र का निर्माण कर सकती है।

(२) शिक्षण पद्धतियो का दूसरा मुख्य उद्देश्य सम्यक् चिन्तन करने की क्षमता उत्पन्न करना होना चाहिए। इसके द्वारा व्यक्ति शिक्षित तथा अशिक्षित के भेद को समझ सकता है और ग्राह्य एव त्याज्य मे अन्तर कर सकता है मानसिक विकास के लिए भी इस क्षमता का होना परम आवश्यक है।

(३) शिक्षण-पद्धतियो को छात्रो की रुचियो के क्षत्र को विशद एव व्यापक बनाना चाहिए।

अर्थशास्त्र-शिक्षण पद्धतियो के मूलभूत सिद्धान्त

(१) क्रिया या करके सीखने का सिद्धान्त (Principle of Activity or Learning by Doing)—प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री रूसो ने करके सीखने के सिद्धान्त पर विशेष बल दिया है। उसका मत है कि बालक क्रिया द्वारा अधिक सीखता है और इस प्रकार सीखा हुआ ज्ञान चिरस्थायी होता है। यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है कि यदि किसी विषय का ज्ञान क्रियाओ द्वारा प्रदान किया जाय तो वह चिरस्थायी होगा, क्योकि इसमे मस्तिष्क तथा हाथ का घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। मनोवैज्ञानिको का कथन है कि बच्चा स्वभाव से ही क्रियाशील होता है, वह कुछ न कुछ करता रहना चाहता है। उसकी रुचि अमूत विचारो व वस्तुओ के प्रति कम होती है। वह तो स्वभावत ही क्रियाओ की ओर झुकता है। इसलिए शिक्षण मे उन विधियो को ही अपनाना चाहिए जिनसे छात्र शारीरिक एव मानसिक दोनो ही दृष्टियो से सक्रिय रह सकें। अथशास्त्र का सैद्धान्तिक विवेचन अमूत होने के कारण बालक की ग्राह्य शक्ति के परे होता है। इसलिए शिक्षको को अथशास्त्र शिक्षण के

लिए उन्ही विधियो को अपनाना चाहिए जिनके द्वारा बालक करके सीख सके। दूसरे शब्दो मे यह कहा जा सकता है कि अध्यापक को उन्ही विधियो *को अपनाना चाहिए जिनके द्वारा हाथ तथा मस्तिष्क दोनो का सम्बन्ध स्थापित हो सके।*

(२) प्रेरणा का सिद्धान्त (Principle of Motivation)—प्रेरणा सीखने की प्रक्रिया मे बहुत ही आवश्यक उपादान है। प्रेरणा के द्वारा बालक मे रुचि उत्पन्न की जाती है। जब बच्चे की रुचि विषय मे उत्पन्न हो जाती है तब उसका उसमे ध्यान लगा रहता है। इस प्रकार वह अपने विषय मे एकाग्र-चित्त होकर कार्य करने लगता है। फलस्वरूप उसमे ज्ञान अर्जन करने की इच्छा सतत रूप से बलवती रहती है। इसलिए अर्थशास्त्र की शिक्षण-पद्धतियो मे *प्रेरणा का तत्त्व होना अनिवार्य है जिससे वे स्वत छात्रो को कार्य करने के* लिए प्रेरित करती रहे।

(३) जीवन से सम्बन्धित करने का सिद्धान्त (Principle of Linking with Life)—शिक्षण पद्धतियो के द्वारा जीवन की क्रियाओ को सरल एव सुगम बनाया जाता है। अत उनका जीवन से सम्बन्धित होना आवश्यक है। प्रो० ड्यूवी का मत है कि शिक्षा जीवन है। इसलिए जीवन की समस्त क्रियाओ से शिक्षण-पद्धतियाँ सम्बन्धित होनी चाहिए। यदि जीवन की क्रियाओ से *शिक्षण-पद्धतियो को सम्बन्धित नही किया जायगा तो बालक विषय-वस्तु को* ग्रहण करने मे सर्वथा असमर्थ रहेगा क्योकि बालक जो कुछ भी नवीन ज्ञान अर्जित करता है वह पूर्वानुभवो के आधार पर ही ग्रहण करता है। जब तक नवीन ज्ञान का उसके पूर्वानुभवो से सम्बन्ध नही जोडा जायेगा तब तक वह उसको ग्रहण नही कर सकेगा। बालक अपने वातावरण से भी बहुत कुछ सीखता है, जब तक इस वातावरण का सम्बन्ध नवीन ज्ञान से सम्ब-*न्धित नही किया जायगा तब तक वह उसका नहीं सीख सकेगा।* अर्थशास्त्र एक ऐसा विषय है जिसके द्वारा बालक के आर्थिक जीवन म आवश्यक परिवर्तन लाये जा सकते हैं। परन्तु ये परिवर्तन तभी लाये जा सकते हैं जब अर्थशास्त्र की शिक्षण-पद्धतियो का बालक के जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित किया जाय, क्योकि अर्थशास्त्र बालक के जीवन म व्याप्त है। उसको इसके नियमों एव सिद्धान्तो के उपयोग की आवश्यकता व्यावहारिक जीवन म प्रत्येक पग पर होती है। अत अर्थशास्त्र की शिक्षण विधियो के चयन मे इस सिद्धान्त का *मुख्य स्थान प्रदान करना चाहिए।*

(४) सह सम्बन्ध का सिद्धान्त (Principle of Correlation)—आधुनिक युग म मानसिक शक्ति सिद्धान्त (Faculty theory) की धारणा भ्रमात्मक सिद्ध हो चुकी है। मनोवैज्ञानिको न यह प्रमाणित कर दिया है कि बालक किसी विषय का ज्ञान स्वतन्त्र रूप से ग्रहण नही करता बल्कि सम्बद्ध रूप म

प्राप्त करना है। इसलिए यह आवश्यक है कि अर्थशास्त्र के शिक्षण में उन्हीं शिक्षण पद्धतियो को ग्रहण किया जाय जो आपस में सुसम्बद्ध हो, क्योकि कोई भी पद्धति अपने आप मे पूर्ण नहीं होती। दूसरे इस सिद्धान्त का उपयोग अर्थशास्त्र के शिक्षण मे विभिन्न विषयो के साथ उसका सम्बन्ध स्थापित करके भी किया जाना चाहिए क्योकि शिक्षा का मुख्य लक्ष्य बालक के व्यक्तित्व का विकास करना है। यह लक्ष्य तभी प्राप्त किया जा सकता है जब अर्थशास्त्र का ज्ञान पृथक रूप से प्रदान न करके अन्य विषयो के साथ सम्बन्ध स्थापित करके प्रदान किया जाय।

(५) व्यक्तिकरण का सिद्धान्त (Principle of Individualization)—कुछ शिक्षा शास्त्रियो का मत है कि शिक्षा का उद्देश्य बालक की वैयक्तिकता (Individuality) का विकास करना है। इसके लिए विभिन्न वैयक्तिक पद्धतियो के द्वारा ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिए, क्योकि प्रत्येक बालक की रुचियाँ प्रवृत्तियाँ अभिरुचियाँ एव क्षमताएँ भिन्न भिन्न होती है। सामूहिक शिक्षण मे बच्चे की वैयक्तिकता का पूर्ण विकास प्राप्त नही हो पाता। इस कारण बालक के शैक्षिक विकास में बाधाएँ उत्पन्न हो जाती हैं। फलस्वरूप उनका विकास उचित प्रकार से नही हो पाता। अत अर्थशास्त्र के शिक्षण मे उन्ही पद्धतियो को ग्रहण करना चाहिए जो छात्रो की वैयक्तिकता के विकास में सहायक हो। यद्यपि यह सत्य है कि इन पद्धतियो के अपनाने मे समयाभाव तथा रुचियो की विभिन्नता पर्याप्त अंश में बाधा उत्पन्न करती हैं। परन्तु फिर भी यथासम्भव शिक्षको को शिक्षण पद्धतियो मे वैयक्तिकता लाने का प्रयास करना चाहिए। मनोविज्ञान के भी परीक्षणो द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि शिक्षण-प्रक्रिया मे प्रत्येक बच्चे पर व्यक्तिगत ध्यान दिया जाय तभी उसका पूर्ण विकास हो सकता है। दूसरे अर्थशास्त्र एक ऐसा विषय है जो कि प्रत्येक बालक के आर्थिक जीवन से सम्बन्धित होता है। प्रत्येक बालक की आर्थिक दशायें एव आर्थिक कमियाँ भिन्न भिन्न होती हैं। अत अर्थशास्त्र का शिक्षण ऐसी पद्धतियो के द्वारा होना चाहिए जो बालको की आर्थिक कमियो एव उनकी वास्तविक आर्थिक स्थितियो पर आधारित हो।

(६) समाजीकरण का सिद्धान्त (Principle of Socialization)—जैसा कि ऊपर वर्णन किया जा चुका है, शिक्षा का उद्देश्य बालक की वैयक्तिकता का विकास करना है। इसके विपरीत, दूसरे शिक्षा शास्त्री इस बात के समर्थक हैं कि शिक्षा का उद्देश्य बालक मे सामाजिक भावना का विकास करना है। वस्तुत शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य न तो वैयक्तिकता का विकास करना है और न सामाजिकता का। इसका ध्येय बच्चे की वैयक्तिकता के विकास के साथ साथ उसमे उन सामाजिक गुणों का विकास करना भी है

जिससे वह समाज का एक उपयोगी और श्रेष्ठ सदस्य बन सके। अर्थशास्त्र एक सामाजिक विषय है। इस शास्त्र के द्वारा सामाजिक जीवन बहुत ही प्रभावित होता है। समाज की उन्नति उसके सदस्यों की आर्थिक एवं सास्कृतिक उन्नति से मापी जाती है। सामाजिकता के विकास के लिए अर्थशास्त्र का शिक्षण उन पद्धतियों के द्वारा होना चाहिए जिनमे सामाजिकता का उपयुक्त अश विद्यमान हो। समाजीकरण पर ध्यान देना इसलिए भी परमावश्यक है कि बालक एक सामाजिक प्राणी है तथा उसकी पाठशाला भी समाज का एक लघु रूप है। इसके अतिरिक्त वैयक्तिकता का विकास समाज के सदर्भ मे ही सम्भव है। क्योंकि इसका विकास शून्य मे नही हो सकता है। इसलिए अर्थशास्त्र की शिक्षण-पद्धतियो के चयन मे समाजीकरण के सिद्धान्त का ध्यान रखना परम लाभदायक है।

(७) आवृत्ति का सिद्धान्त (Principle of Revision)—मनोवैज्ञानिक परीक्षणो से यह सिद्ध हो चुका है कि सीखने के बाद त्वरित विस्मृति (Forgetting) का आभास मिलता है। इस कारण इसको दूर करने के लिए तथा ज्ञान को स्थायी बनाने के लिए आवृत्ति आवश्यक है। अर्थशास्त्र के शिक्षण के लिए उन पद्धतियो को ग्रहण किया जाय जिनमे आवृत्ति या प्रयोग के लिए यथा-सम्भव स्थान हो।

उपर्युक्त सिद्धान्तो को ध्यान मे रखते हुए अर्थशास्त्र-शिक्षण मे अधोलिखित पद्धतियो का प्रयोग किया जा सकता है—

(१) पाठ्य-पुस्तक पद्धति (Text Book Method)।
(२) व्याख्यान पद्धति (Lecture Method)।
(३) प्रयोगशाला पद्धति (Laboratory Method)।
(४) योजना पद्धति (Project Method)।
(५) समस्या पद्धति (Problem Method)।
(६) व्याप्ति मूलक व निगमन पद्धति (Inductive and Deductive Method)।
(७) विश्लेषणात्मक एवं सश्लेषणात्मक पद्धति (Analytic and Synthetic Method)।
(८) समाजीकृत-अभिव्यक्ति पद्धति (Socialized Recitation Method)।
(९) निरीक्षित अध्ययन पद्धति (Supervised Study Method)।

(१) पाठ्य पुस्तक पद्धति—बहुधा यह कहा जाता है कि भारत मे समस्त शिक्षण कार्य पाठ्य पुस्तक पद्धति से किया जाता है। परन्तु यह कथन अस्पष्ट-सा दिखाई पडता है क्योंकि प्रत्येक शिक्षण-पद्धति का उपयोग पाठ्य पुस्तक को

आधार बनाकर किया जा सकता है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि पाठ्य पुस्तक वह साधन है जिसके द्वारा किसी निर्दिष्ट लक्ष्य या तथ्य को प्राप्त किया जाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पाठ्य-पुस्तक विधि एक स्वतन्त्र शिक्षण विधि नही है बल्कि यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है। पाठ्य-पुस्तको के द्वारा बालक मानव के सकलित विचारो का अध्ययन करता है। यह अर्थशास्त्र की एक सरलतम एव सुगम विधि है। इसके द्वारा छात्र कम से कम समय मे अधिकतम ज्ञान की प्राप्ति कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त पाठ्य-पुस्तको के द्वारा बच्चो मे स्वतन्त्र अध्ययन की आदत का निर्माण होता है।

इस विधि मे अर्थशास्त्र की किसी एक पुस्तक को पाठ्य-पुस्तक के रूप मे प्रयुक्त किया जाता है। शिक्षक छात्रो को किसी एक पाठ या अध्याय को पढने के लिए दे देता है। बालक मौन-पठन द्वारा उस पाठ की विषय वस्तु को आत्मसात् करने का प्रयत्न करते हैं। इस क्रिया के लिए छात्रो को पर्याप्त समय प्रदान किया जाना चाहिए। जब समस्त बालक उस पाठ का अध्ययन समाप्त कर लेते हैं तब शिक्षक छात्रो की बोधग्राह्यता की बोधात्मक प्रश्नो द्वारा परीक्षा करता है। इस परीक्षा म छात्रो को अपनी पाठ्य-पुस्तक की सहायता नही लेने दी जाती है। इस विधि के अन्तर्गत सस्वर-पठन की प्रणाली को भी अपनाया जा सकता है। इस प्रक्रिया मे अध्यापक कठिन शब्दो एव स्थलो की व्याख्या करता चलता है तथा दृष्टान्तो एव उदाहरणो की सहायता से उनको स्पष्ट कर देता है। इस प्रणाली म भी पाठ की समाप्ति के पश्चात् बोध प्रश्नो द्वारा परीक्षा ली जाती है और इनके उत्तरो की सहायता से वह श्यामपट पर सक्षिप्त साराश तैयार कर देता है। शिक्षक इस साराश को अपनी पुस्तिकाओ मे लिखने के लिए छात्रो को आदेश देता है। इसके पश्चात् शिक्षक उन रूपरेखाओ को विस्तृत करने का भी आदेश दे सकता है जिससे छात्रा की अभिव्यजना शक्ति विकसित हो जाय तथा वे विस्मृति के दोष से दूर रह सकें।

इस विधि का मूलभूत सिद्धान्त शिक्षण प्रक्रिया की मितव्ययिता है। इसमे छात्र कम से कम समय मे तथा बिना किसी कठिन प्रयास के अधिकतम ज्ञान की प्राप्ति कर लेता है। दूसरे, इस विधि के द्वारा छात्रो को ज्ञान राशि व्यवस्थित रूप से प्राप्त होती है, क्योकि पाठ्य-पुस्तको मे ज्ञान राशि किसी न किसी व्यवस्था पर आधारित होती है।

प्रयोग (Application)—सामान्यत. इस विधि का प्रयोग दो प्रणालियो के आधार पर किया जाता है। प्रथम एकाकी पाठ्य-पुस्तक प्रयोग तथा द्वितीय बहु पाठ्य-पुस्तक प्रयोग। एकाकी पाठ्य-पुस्तक प्रणाली म केवल एक ही पाठ्य पुस्तक को आधार बनाया जाता है। इसके प्रयोग द्वारा अध्यापक छात्रो का

ध्यान विषय-वस्तु पर आकृष्ट करने की आज्ञा प्रदान करता है। इस प्रणाली के विपक्ष मे यह कहा जाता है कि इसके द्वारा छात्रो मे मुद्रित पृष्ठो के प्रति दासता की भावना विकसित हो जाती है। वे उनमे लिखी विषय-वस्तु को ही सत्य एव अकाट्य मानने लगते हैं। इस प्रकार उनके अध्ययन का दृष्टिकोण सकीर्ण बन जाता है। बहु पाठ्य पुस्तक प्रणाली मे इस प्रकार के दोषो को दूर करने का प्रयत्न किया गया हैं। दूसरी प्रणाली मे एक पुस्तक के स्थान पर बहु-पाठ्य-पुस्तको का प्रयोग किया जाता है। इसके प्रयोग से सबसे बडा लाभ यह होता है कि छात्र एक पाठ्य-पुस्तक को ही अन्तिम निर्णायक शक्ति नही मानते वरन् अपने विषय का अध्ययन विभिन्न पुस्तको द्वारा करके एक अन्तिम निष्कर्ष निकालना सीख जाते हैं।

गुण (Merits)—(१) पाठ्य-पुस्तक पद्धति से छात्रो मे अध्ययन की निपुणता बढती है तथा उनम पढने का स्वभाव उत्पन्न करती है क्योकि पाठ्य-पुस्तकें छात्रो के दृष्टिकोण से ही लिखी जाती हैं।

(२) इसमे छात्र स्वय सक्रिय रहकर ज्ञान अर्जित करते हैं।

(३) इससे छात्रो मे स्वाध्ययन की आदत का निर्माण होता है।

(४) इसके द्वारा छात्रो को अर्थशास्त्र की विषय वस्तु का ज्ञान व्यवस्थित रूप से प्राप्त होता है।

(५) पाठ्य-पुस्तक पद्धति छात्रो के कार्य मे व्यवस्था उत्पन्न करती है।

(६) इसके द्वारा छात्रो तथा शिक्षको के समय की बचत होती है।

(७) इसके द्वारा छात्रो की बोध-ग्राह्यता की साथ ही साथ परीक्षा होती चलती है।

(८) इस पद्धति के द्वारा छात्रो को इस बात का ज्ञान प्राप्त हो जाता है कि किसी प्रश्न के लिए कितनी विषय-सामग्री लिखनी है तथा उसको किस प्रकार प्रस्तुत करना चाहिए।

(९) इसके द्वारा छात्रो की स्मरण शक्ति का विकास होता है।

दोष (Demerits)—(१) यह पद्धति छात्रो मे वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न नही करती है, तथा उनके मानसिक अन्तरिक्ष को व्यापक बनाने मे असमर्थ रहती है।

(२) यह पद्धति छात्रो के पूर्व ज्ञान को जाग्रत करने मे असमर्थ रहती है।

(३) यह पद्धति शिक्षण के सूत्रो जैसे—'सरल से कठिन की ओर, 'मनो-वैज्ञानिक से तर्कसम्मत क्रम की ओर', 'ज्ञात से अज्ञान की ओर', 'विशिष्ट से सामान्य की ओर', विश्लेषण से सश्लेषण की ओर' आदि की उपेक्षा करती है।

(४) इस पद्धति द्वारा छात्रो मे रटने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है।

(५) इसके द्वारा छात्र पाठ्य-पुस्तकों के तथ्यो व भावो का अन्धानुकरण करने लगते हैं।

(६) इसके प्रयोग से कक्षा का वातावरण अरुचिकर तथा नीरस रहता है।

सीमाएँ (Limitations)—(१) इस विधि के प्रयोग मे अच्छी पाठ्य-पुस्तको का अभाव खटकता है।

(२) बहुधा पुस्तको का व्यवस्थापन, भाषा एव शैली छात्रो के मानसिक स्तर के अनुसार नही होती। इस कारण बालक विषय वस्तु को सुगमतापूर्वक ग्रहण नही कर पाते।

(३) इसके उपयोग से व्यावहारिकता के स्थान पर सैद्धान्तिकता का वातावरण उत्पन्न हो जाता है। अर्थशास्त्र मे बहुत से व्यावहारिक उप-विषय हैं, जिनका शिक्षण व्यावहारिक रूप से होना चाहिए। परन्तु इस पद्धति के प्रयोग से उनकी व्यावहारिकता समाप्त हो जाती है।

सुधार के लिए सुझाव (Suggestions for its Improvement)—(१) इस पद्धति का प्रयोग कार्य निर्धारण के लिए किया जाना चाहिए। परन्तु कार्य-निर्धारण इस प्रकार किया जाय जिसमें पाठ्य पुस्तक के पाठ की समस्त बातो का समावेश भी हो जाय तथा वह उससे पृथक भी हो। इस प्रकार के कार्य-निर्धारण का मुख्य लाभ यह होगा कि छात्रो को अपने कार्य के पूर्ण करने के लिए विभिन्न स्रोतो की सहायता लेनी पडेगी, जिससे उनमे स्वक्रिया द्वारा ज्ञान अर्जित करने की आदत का निर्माण हो। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इस विधि का उपयोग परम्परागत ढङ्ग से न करके उपर्युक्त ढङ्ग से करना चाहिए। जिससे हम वाञ्छनीय लाभ प्राप्त कर सकें। अर्थशास्त्र के शिक्षण मे इस रूप को ही अपनाना श्रेयस्कर होगा।

(२) पाठ्य पुस्तको का चयन छात्रो की रुचि एव मानसिक स्तर के अनुरूप करना चाहिए।

(३) पाठ्य-पुस्तको म यथास्थान चित्र, रेखाचित्र, ग्राफ तथा मानचित्रो का उपयोग करना चाहिए जिससे अमूर्तभाव मूर्त रूप धारण कर सकें।

(४) छात्रो की रटने की प्रवृत्ति के स्थान पर समीक्षात्मक एव तर्कात्मक प्रवृत्तियो पर बल दिया जाना चाहिए।

(५) छात्रो के मानसिक स्तर के अनुकूल सूक्ष्म एव गहन विचारो की व्याख्या की जाय तथा उनके स्पष्टीकरण के लिए दृष्टान्तो एव उदाहरणो का आलम्बन लिया जाय।

(६) बोधगम्य प्रश्न सुस्पष्ट एव नपे-तुले होने चाहिए।

(७) इस पद्धति के प्रयोग मे व्यावहारिकता लाई जानी चाहिए।

(२) व्याख्यान पद्धति—शिक्षण मे इस पद्धति का प्रयोग प्राचीन काल से होता चला आ रहा है। आजकल भी भारतीय शिक्षालयो मे इस पद्धति ने महत्त्वपूर्ण स्थान ग्रहण कर रखा है। व्याख्यान का तात्पय पाठ को भाषण के रूप मे पढाने से है। इसमे शिक्षक अपने मुख से बात कहकर पढाता है। इसको कथन-विधि के नाम से भी पुकारते हैं। व्याख्यान विधि अर्थशास्त्र के शिक्षण मे अपना अद्वितीय स्थान रखती है। इस विधि द्वारा शिक्षक गहन एवं सूक्ष्म विषय-वस्तु को सरल तथा सुबोध बनाता है। शिक्षक इसके प्रयोग मे व्याख्यान के साथ-साथ स्वय प्रश्नो द्वारा पाठ का विकास करता चलता है तथा छात्रों को भी प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करके विषय-वस्तु की विवेचना करता है। शिक्षा की प्रगतिशील विचारधारा के समर्थको का मत है कि यह पद्धति शिक्षण के लिए अनुपयुक्त है। उनका कहना है कि इसमे बालक निष्क्रिय श्रोता मात्र बना रहता है। परन्तु यह तर्क उपयुक्त सा प्रतीत नही होता क्योकि यह पद्धति शिक्षा मनोविज्ञान के सिद्धान्तो के विपरीत नही है। इसमे बालको की मानसिक क्रिया होनी है। यदि शिक्षक पूर्ण तैयारी तथा रोचक ढग से अपने व्याख्यान को अपने छात्रो के समक्ष प्रस्तुत करेगा और उनको सक्रिय रखने के लिए उनसे प्रश्न पूछता रहेगा एव छात्रो को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करता रहगा तो यह आरोप दूर किया जा सकता है। इस आरोप का दोषी शिक्षक है न कि पद्धति। इस पद्धति म बच्चे की कर्णेन्द्रिय जागरूक रहती है। इसके द्वारा हाथ तथा मस्तिष्क का भी सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है। छात्र शिक्षक के व्याख्यान की मुख्य-मुख्य बातो को साथ-साथ अकित करते चलते हैं। इस प्रकार इसमे बच्चे की कई इन्द्रियाँ सक्रिय रहती हैं। दूसरे, व्याख्यान वक्ता के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के साथ बालको के मस्तिष्क मे स्थान ग्रहण करता है।

प्रयोग—अब प्रश्न यह है कि अर्थशास्त्र शिक्षण मे यह पद्धति कब प्रयुक्त की जाय? इस विषय मे यह कहा जा सकता है कि इसका प्रयोग अधोलिखित अवसरो पर करना चाहिए :

(१) इसका प्रयोग किसी बडी इकाई या लम्बे प्रकरण का पुनर्विलोकन देने के लिए करना चाहिए।

(२) इसका उपयोग अर्थशास्त्र के लगभग प्रत्येक प्रकरण या विषय मे छात्रो के अध्ययन को परिपूरित करने के लिए किया जाना चाहिए।

(३) व्याख्यान पद्धति का प्रयोग बालको के समय की बचत के लिए भी किया जाना चाहिए।

(४) इसके द्वारा विषय की व्याख्या एव स्पष्टीकरण भी किया जाना चाहिए। उदाहरणार्थ—आर्थिक पदो की व्याख्या—धन, आवश्यकता, अर्हा (Value) आदि।

(५) किसी नवीन पाठ की प्रस्तावना से परिचित कराने के लिए भी व्याख्यान पद्धति का उपयोग हो सकता है।

(६) छात्रो के स्वाध्ययन के लिए नवीन कार्य के निर्धारण के हेतु इस विधि का प्रयोग किया जाना चाहिए। इसके द्वारा उस निर्दिष्ट पाठ या पृष्ठो का सक्षिप्त परिचय तथा मुख्य बातो का ज्ञान दिया जा सकता है, जिससे छात्रो को यह ज्ञान हो जाय कि उन्हे इस पाठ या कार्य मे किन-किन बातो का अध्ययन करना है।

(७) इस पद्धति का प्रयोग किसी विषय या प्रकरण का साराश देने के लिए भी किया जा सकता है।

(८) छात्रो मे पाठ या विषय के प्रति रुचि जाग्रत करने के लिए भी व्याख्यान विधि का प्रयोग किया जाना चाहिए।

इस पद्धति के प्रयोग मे शिक्षक को परम्परागत ढग को नही अपनाना चाहिए वरन् उसे व्याख्यान के साथ-साथ विचारोत्तेजक, विकासात्मक एव बोधात्मक प्रश्नो का सहारा लेना चाहिए। इसके अतिरिक्त उसे छात्रो की तार्किक एव आलोचनात्मक शक्तियो के विकास के लिए वाद-विवाद पद्धति को भी अपनाना चाहिए। इस प्रकार के प्रश्नो से पाठ का स्वाभाविक एव तर्कसम्मत विकास होता चलता है। उदाहरणार्थ, यदि उत्पत्ति एव उसके ढगो के विषय मे पढाना है तो विषय का विकास अधोलिखित ढग से करना लाभप्रद होगा.

अध्यापक—कुम्हार मिट्टी कहाँ से प्राप्त करता है ?
छात्र—गड्ढो से।
अध्यापक—मिट्टी किसकी देन है ?
छात्र—प्रकृति की।
अध्यापक—कुम्हार मिट्टी से क्या बनाता है ?
छात्र—बर्तन।
अध्यापक—कुम्हार ने मिट्टी से बर्तन बनाने मे क्या कार्य किया ?
छात्र—मिट्टी का रूप परिवर्तित किया।
अध्यापक—इस परिवर्तित स्वरूप से पहले हमारे लिए मिट्टी की क्या उपयोगिता थी ?
छात्र—कुछ नही या बहुत कम।
अध्यापक—बर्तन बनने से मिट्टी की उपयोगिता पर क्या प्रभाव पडा ?
छात्र—उपयोगिता मे वृद्धि हुई।
अध्यापक—कुम्हार ने इसमे क्या नवीन उत्पत्ति की है ?
छात्र—कुछ नही।

इसके पश्चात् अध्यापक अपने व्याख्यान द्वारा यह स्पष्ट करेगा कि मनुष्य कोई ऐसा पदार्थ नही बना सकता है जो बिल्कुल नवीन हो। वह केवल विद्यमान पदार्थ की उपयोगिता मे वृद्धि कर सकता है। इसी उपयोगिता-वृद्धि को अर्थशास्त्र म 'उत्पत्ति' कहते हैं। इस प्रकार शिक्षक अपने पाठ को बडे ही रोचक ढंग से छात्रो के समक्ष प्रस्तुत कर सकता है।

गुण—(१) व्याख्यान-पद्धति द्वारा छात्रो मे किसी भाषण को ध्यानपूर्वक सुनने की आदत का निर्माण हो जाता है।

(२) इसके द्वारा छात्रो की अभिव्यंजना, तर्क एव चिन्तन शक्तियो का भी समुचित विकास हो जाता है।

(३) यह पद्धति ज्ञानात्मक पाठ के लिए बहुत ही उपयोगी है।

(४) इसके द्वारा आर्थिक जोवन के व्यावहारिक पक्षो पर सुगमतापूर्वक प्रकाश डाला जा सकता है।

(५) इसमे शिक्षक एव छात्र दोनो ही सक्रिय रहते हैं।

(६) इस पद्धति के द्वारा छात्र एव शिक्षक के बीच ज्ञान का प्रत्यक्ष आदान-प्रदान होता रहता है।

(७) इसके द्वारा शिक्षण मे समय की भी बचत होती है।

(८) इसके द्वारा गहन एव भ्रामक विचारो का सरलतापूर्वक स्पष्टीकरण कर दिया जाता है।

दोष—(१) इस पद्धति के विरुद्ध यह आरोप लगाया जाता है कि यह छात्रो को निष्क्रिय श्रोता बनाती है।

(२) इस पद्धति मे अध्यापक का एकाधिकार होता है जिसके कारण शिक्षण की सजीवता एव रोचकता नष्ट हो जाती है।

(३) इसके द्वारा प्रदान किया गया ज्ञान स्थायी एव वास्तविक नही होता।

(४) यह निम्न स्तर के छात्रो के लिए अनुपयुक्त है क्योकि इसमे उनके मानसिक स्तर, प्रवृतियो, रुचियो एव शक्तियो का ध्यान नही रखा जाता।

(५) इसमे बालक को 'केन्द्र बिन्दु' मानकर नही चला जाता जबकि यह प्रगतिशील शिक्षा की एकमात्र माँग है। इसमे अध्यापक का स्थान श्रेष्ठ और बालक का गौण रहता है।

(६) इसके द्वारा छात्रो को सैद्धान्तिक ज्ञान तो प्राप्त हो जाता है परन्तु वे व्यावहारिक जीवन मे उसका उपयोग करना नही सीख पाते।

सीमाएँ—(१) इस पद्धति की सफलता दो बातो पर निर्भर है—प्रथम पाठ्य-वस्तु का चयन, तथा उस पाठय-वस्तु के प्रस्तुतीकरण करने के ढग पर। प्रस्तुतीकरण करने का ढग वक्ता के ऊपर निर्भर होता है। इसके लिए कुशल

एव विद्वान शिक्षको की आवश्यकता है। इस पद्धति का प्रयोग ऐसे ही शिक्षको द्वारा होना चाहिए। साधारण बुद्धि के शिक्षक के हाथो मे पद्धति विकृत हो जाती है।

(२) इस पद्धति के द्वारा शिक्षण को सजीव बनाने वाले उपकरण शिक्षण को उपलब्ध नही हो पाते।

(३) इससे बालक के मौलिक चिन्तन को ठेस पहुँचती है क्योंकि छात्र अपने शिक्षक के वाक्यो को श्रेष्ठ एव चिरन्तन सत्य के समान मानने लगते हैं।

(४) इसके द्वारा बालक की कौतूहल प्रवृत्ति की सतुष्टि नही हो पाती।

(५) बहुत से अध्यापक अपनी कमियो को छिपाने के लिए इसके स्थान पर मुख्य बाते लिखवाना ही शुरु कर देते हैं।

सुझाव—(१) व्याख्यान बालको की आयु तथा मानसिक स्तर के अनुसार होना चाहिए।

(२) माध्यमिक स्तर पर इसका उपयोग कम ही करना चाहिए।

(३) शिक्षक को व्याख्यान देते समय छात्रो के अवधान विस्तार का ध्यान रखना चाहिए।

(४) इस पद्धति का प्रयोग केवल नवीन पाठ की भूमिका के लिए ही किया जाय तो बहुत ही लाभप्रद होगा।

(५) व्याख्यान क्रमबद्ध होना चाहिए।

(६) व्याख्यान की भाषा तथा शैली छात्रो के मानसिक स्तर तथा आयु के अनुसार होनी चाहिए।

(७) शिक्षक को प्रश्न करने की रीति को जानना चाहिए जिससे वह छात्रो का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर सके तथा व्याख्यान की सफलता का भी आकलन कर सके। इस रीति के प्रयोग से शिक्षण मे सजीवता लाई जा सकती है।

(८) शिक्षक की व्याख्यान देने की गति तीव्र नही होनी चाहिए। वह नीरसता के वातावरण को दूर करने के लिए अपने व्याख्यान मे हास्य का पुट लगाये।

(९) शिक्षक का स्वर तथा उच्चारण शुद्ध होना चाहिए क्योंकि छात्रो मे अनुकरण प्रवृत्ति अधिक होती है। यदि वह शब्दो का उच्चारण अशुद्ध करेगा तो बालक भी उसकी अनुकृति करेंगे।

(१०) व्याख्यान को रोचक एव सजीव बनाने के लिए अध्यापक को दृष्टान्तो, उदाहरणो तथा बालक के व्यावहारिक जीवन की घटनाओ का आश्रय लेना चाहिए। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शिक्षक को व्याख्यान का सम्बन्ध बालको के व्यावहारिक जीवन से स्थापित करना चाहिए।

(३) प्रयोगशाला विधि—शिक्षा में वैज्ञानिक प्रवृत्ति ने प्रत्येक विषय के लिए अपनी प्रयोगशाला स्थापित करने को बाध्य किया है। जिस प्रकार प्राकृतिक विज्ञानों के लिए प्रयोगशालाओं की आवश्यकता होती है उसी प्रकार सामाजिक विषयों के लिए भी आधुनिक काल की विचारधारा के अनुसार प्रयोगशाला का होना आवश्यक है। इसके पक्ष में यह कहा जा सकता है कि यदि प्रत्येक विषय की प्रयोगशाला पृथक् रूप से स्थापित की जायगी तो उसमें छात्रों के लिए उस विषय के लिए एक ऐसा आनन्दमय वातावरण स्थापित हो जायगा, जिसमें वे सरलता एवं सुगमता से क्रिया द्वारा ज्ञान सकते हैं। अर्थशास्त्र भी एक विज्ञान है चाहे वह प्राकृतिक विज्ञानों की भाँति उतना शुद्ध विज्ञान न हो परन्तु विज्ञान की उदार परिभाषा के अन्तर्गत यह भी विज्ञान ही है। इस कारण अर्थशास्त्र के लिए भी एक प्रयोगशाला की आवश्यकता है। दूसरे, यदि इसकी व्यवस्था नहीं होगी तो शिक्षक को अर्थशास्त्र की सामग्री को एक कक्ष से दूसरे कक्ष में ले जाने में पर्याप्त समय लगेगा तथा उस सामग्री के टूटने-फूटने का भी डर रहेगा। तीसरे, प्रयोगशाला के द्वारा अर्थशास्त्र का वातावरण स्थापित किया जाता है जो उसकी शिक्षा के लिए अति आवश्यक है। आधुनिक शैक्षिक विचारधारा के अनुसार अध्यापक का यह परम कर्तव्य है कि वह छात्रों के लिए ऐसा वातावरण या ऐसी स्थिति उत्पन्न करे जिसमें छात्र स्वक्रिया द्वारा ज्ञान अर्जित कर सकें। इस प्रकार प्रयोगशाला वह साधन है जिसके द्वारा अर्थशास्त्र का शिक्षक बालकों की शिक्षा के लिए उपयोगी स्थिति एवं वातावरण उत्पन्न कर सकता है। अब केवल प्रश्न यह है कि अर्थशास्त्र की प्रयोगशाला में किन-किन वस्तुओं का समावेश होना चाहिए? इसके उत्तर में हम अधोलिखित बातें प्रस्तुत कर सकते हैं :

(१) सामान्य कक्ष से एक बड़ा कक्ष होना चाहिए जिसमें एक समय में ३० या ४० बालक स्वाध्ययन कर सकें। इसके अतिरिक्त उसमें प्रायोगिक कार्य करने के लिए मेज तथा कुर्सियों की व्यवस्था भी होनी चाहिए।

(२) श्यामपट।

(३) अर्थशास्त्र की पाठ्य-पुस्तकों, विशेष अध्ययन के लिए पुस्तकों तथा अन्य सहायक पुस्तकों की व्यवस्था अल्मारियों में होनी चाहिए। ये अल्मारियाँ दीवार में हों तो अच्छा होगा क्योंकि लकड़ी की अल्मारियाँ से पर्याप्त मात्रा में स्थान घिरेगा।

(४) सूचनापट।

(५) चार्ट, मॉडल, चित्र, मानचित्र और रेखाकृतियाँ, आदि।

(६) अर्थशास्त्र से सम्बन्धित पत्र पत्रिकाएँ।

(७) फिल्म तथा स्लाइड्स।

(८) प्रोजेक्टर तथा स्क्रीन।
(९) रेडियो।
(१०) शब्द-कोष।

प्रयोग—इस पद्धति के प्रयोग के लिए शिक्षक कार्यों का निर्धारण करता है। अध्यापक कार्य का निर्धारण करके उसके विषय में एक रूपरेखा प्रस्तुत करता है जिसमें वह यह भी बता देता है—कि इस कार्य की पूर्ति में अमुक-अमुक वस्तुओं की सहायता अपेक्षित है तथा अमुक-अमुक स्थान से सामग्री प्राप्त की जा सकती है। इस पद्धति में शिक्षक का स्थान एक पथ-प्रदर्शक, मित्र एवं दार्शनिक का हो जाता है। इन सूचनाओं को ग्रहण करने के पश्चात् छात्र वैयक्तिक रूप से प्रयोगशाला में बैठकर अपना-अपना कार्य करते हैं। इस प्रकार *उन्हें अपनी वैयक्तिक विभिन्नताओं के अनुसार कार्य प्राप्त हो जाता है जिससे* उनकी वैयक्तिक विशेषता का विकास सम्भव हो जाता है। इस पद्धति में निर्धारित कार्य को पूर्ण करने के लिए भी समय निर्धारित कर दिया जाता है। जो बालक अपने कार्य को अवधि से पूर्व पूर्ण कर लेता है उसे दूसरा कार्य दे दिया जाता है।

गुण—(१) इसके द्वारा छात्र स्वक्रिया द्वारा ज्ञान अर्जित करते हैं।

(२) इसके प्रयोग से छात्र पुस्तकालय का उपयोग करना सीख जाते हैं।

(३) इस पद्धति के द्वारा वर्तमान परीक्षा प्रणाली के दोषों को दूर किया जा सकता है। इन कार्यों की पूर्ति के आधार पर छात्रों को एक कक्षा से दूसरी *कक्षा के लिए उन्नति प्रदान की जाती है। प्रयोगशाला में प्रत्येक बालक की* उन्नति का लेखा रहता है जिसमें अध्यापक उनके विकास को लिखता रहता है। इस उन्नति के लेखों के आधार पर उनको उन्नति प्रदान की जाती है।

(४) इस पद्धति के प्रयोग से सामूहिक शिक्षण के दोषों को दूर किया जा सकता है।

(५) इसके प्रयोग से छात्रों में स्वाध्ययन की आदत का निर्माण होता है।

दोष तथा सीमायें—(१) यह पद्धति बहुत व्ययपूर्ण है। यह भारत जैसे निर्धन देश के लिए उपयुक्त नहीं है क्योंकि यहाँ तो सामान्य कक्ष भी उपलब्ध नहीं हो पाते। *अतः विशेष कक्षों या प्रयोगशालाओं की व्यवस्था का कार्य एक स्वप्न के समान है।*

(२) भारत में छात्रोपयोगी पत्र-पत्रिकायें, पाठ्य-पुस्तकें पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं हैं जिनको प्रयोगशाला में रखा जा सके।

(३) यदि प्रयोगशाला में उचित ध्यान नहीं दिया गया तो यह पद्धति यान्त्रिक बन सकती है।

(४) इस पद्धति के प्रयोग से छात्रो द्वारा अर्जित किया ज्ञान शृङ्खलाबद्ध एव सुसगठित नही होता ।

(५) **योजना पद्धति**—इस पद्धति के जन्मदाता श्री डब्लू० एच० किलपैट्रिक (W. H Kilpatric) हैं । ड्यू वी के प्रयोजनवाद के सिद्धान्तो के आधार पर इस पद्धति का निर्माण किया गया है । इस पद्धति का निर्माण विद्यालय के परम्परागत एव शुष्क वातावरण को दूर करने के लिए किया गया है । इसमे छात्रो की क्रियाशीलता को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है । प्रोजेक्ट शब्द की परिभाषा विभिन्न प्रकार से की गई है । किलपैट्रिक के मतानुसार "प्रोजेक्ट वह सहृदयपूर्ण अभिप्राययुक्त क्रिया है जो पूण सलग्नता के साथ सामाजिक वातावरण मे की जाय ।"[1] प्रो० स्टीवेन्सन के अनुसार "प्रोजेक्ट एक समस्या मूलक कार्य है जिसका समाधान उसके प्रकृत वातावरण मे रहते हुए ही किया जाता है ।"[2] प्रो० बेलार्ड के मतानुकूल 'प्रोजेक्ट वास्तविक जीवन का एक छोटा-सा भाग है जिसको शिक्षालय मे प्रतिपादित किया जाता है ।"[3] इन परिभाषाओ मे यह स्पष्ट है कि योजना वास्तविक जीवन मे रहकर ही पूर्ण की जाती है अर्थात् वह अपने स्वाभाविक वातावरण मे ही पूर्ण होती है । अत प्रत्यक ऐसी समस्या बालक के दैनिक जीवन से सम्बन्धित होनी चाहिए । इसमे *योजना का चयन व सम्पादन बालको द्वारा ही होना है ।* इसमे *समस्या छात्रो के समक्ष प्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत नही की जाती वरन् ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न की जाती हैं जिनमे बालक अपने अनुभवो के आधार पर उनका चयन करता है ।* योजना के सम्पादन एव चयन मे शिक्षक तथा उसकी इच्छा का कोई स्थान नही है । उसका स्थान केवल पथ-प्रदर्शक एव मित्र जैसा होता है । अर्थशास्त्र के शिक्षण के लिए यह पद्धति बहुत ही लाभदायक है । इसके द्वारा छात्रो को अपने आर्थिक जीवन की समस्याओ को हल करने की शिक्षा सुगमतापूर्वक दी जा सकती है । इसमे छात्र परस्पर सहयोग व आत्म-प्रयत्न एव सूझ-बूझ से काय को सम्पादित करते हैं। इस प्रकार छात्रो म सामाजिक गुणो अर्थात् सहयोग, सहकारिता, सहानुभूति, प्रेम आदि का विकास होना है ।

योजनायें दो प्रकार की होती हैं—(१) व्यक्तिगत, तथा (२) सामूहिक । प्रयोजनवाद सामूहिक योजना का पक्षपाती है । परन्तु अर्थशास्त्र-शिक्षण मे

---

1 "A Project is a whole hearted purposeful activity proceeding in a social environment "

2 "A project is a problematic act carried to completion in its natural setting."

3. A project is a bit of real life that has been imparted into the school "

दोनो प्रकार की योजना का उपयोग किया जा सकता है। सामूहिक योजनाओ के उपयोग से छात्रो मे सामाजिकता के सद्गुणो का विकास किया जा सकता है। इसमे समस्त छात्र सहकारिता एवं सहयोग के साथ कार्य करते हैं। व्यक्तिगत योजनाओ मे छात्र पृथक-पृथक रूप से योजनाओ को पूर्ण करते है।

प्रयोग—योजना पद्धति का प्रयोग अर्थशास्त्र-शिक्षण मे बहुत ही लाभदायक है। इसके प्रयोग से आर्थिक जीवन की व्यावहारिक समस्याओ के स्वरूप को सफलतापूर्वक भली भाँति समझा जा सकता है। इसके सफल प्रयोग के लिए क्रमश सात स्तरो को पार करना पडता है

(१) परिस्थिति उत्पन्न करना (Creation of the Situation)।

(२) योजना का चयन (Selection of the Project)।

(३) उद्देश्य-निरूपण (Purposing)।

(४) योजना पूर्ण करने का कार्यक्रम (Plan of the Project)।

(५) कार्यक्रम को क्रियान्वित करना (Execution of the Plan)।

(६) कार्य का निर्णय (Judgement of the work)।

(७) कार्य का लेखा (Recording)।

योजना पद्धति के प्रयोग को निम्नाङ्कित उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :

योजना—सहकारी बैंक का सचालन।

(१) शिक्षक छात्रो को ऐसी स्थिति मे रखेगा जिससे वे अपनी बचत के सदुपयोग पर विचार कर सकें। इस प्रकार शिक्षक योजना के चयन के लिए स्वाभाविक परिस्थितियाँ उत्पन्न कर देगा फलस्वरूप छात्र अपनी बचत का सदुपयोग करने का प्रयत्न करेंगे।

(२) इन परिस्थितियो मे छात्र सहकारी बैंक खोलने के लिए तत्पर होंगे।

(३) इसके पश्चात् समस्त छात्र मिलकर इसके उद्देश्यो का निर्धारण करेंगे।

(४) तदुपरान्त छात्र सहकारी बैंक के स्थापन एव सचालन के लिए एक व्यवस्थित कार्यक्रम की रूपरेखा बनायेंगे।

(५) इसके पश्चात् समस्त छात्र विचार करके उसको क्रियान्वित करने के लिए आपस मे कार्य-विभाजन कर लेंगे।

(६) तदुपरान्त समस्त कार्य का मूल्याङ्कन करेंगे।

(७) अन्त मे, सहकारी बैंक का सुनिश्चित रूप अपनी योजना के हल के रूप मे प्रस्तुत करेंगे। इसमे उसकी समस्त कार्य-प्रणाली का ब्यौरा लिखित रूप मे प्रस्तुत किया जायगा।

अर्थशास्त्र-शिक्षण मे योजना पद्धति के प्रयोग के बहुत अवसर हैं; उदाहरणार्थ, सहकारी संघ की दुकान, सिंचाई के साधन, हमारा भोजन, यातायात के साधन आदि।

गुण—(१) योजना पद्धति के द्वारा छात्रो को सहयोग के साथ रहने, विचार करने तथा कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जिससे वे समान अभिप्रायो को प्राप्त करने मे सफल होते है। इसके द्वारा छात्रो मे उत्तम *सामाजिक गुणो एव आदतो का विकास किया जाता है जिसमे वे समाज की* आर्थिक स्थिति को सुधारने मे सहायक हो सके तथा उसमे सफलतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर सकें। इसके द्वारा छात्रो मे *व्यावहारिक गुणो* का विकास होता है जिससे वे अपने व्यावहारिक जीवन को श्रेष्ठ बनाने म सफल होते हैं।

(२) इसके द्वारा विभिन्न विषयो मे सरलता से समन्वय स्थापित किया जा सकता है, इसके *अतिरिक्त पाठ्य-क्रम मे भी एकीकरण स्थापित किया जा* सकता है क्योकि योजना एक अभिप्राययुक्त क्रिया होती है जिसको सामाजिक पर्यावरण मे रहकर पूर्ण किया जाता है। इस प्रकार पाठ्यक्रम का वास्तविक जीवन से सम्बन्ध स्थापित होता है जो इसका विशेष गुण है।

(३) इस पद्धति के द्वारा रटने की प्रवृत्ति को निरुत्साहित किया जाता है और छात्रो को चिन्तन, तर्क तथा निर्णय के आधार पर समस्या सुलझान के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इस प्रकार उनमे स्वाध्याय की आदत का निर्माण होता है।

(४) यह पद्धति सीखने के सिद्धान्तो पर आधारित है, उदाहरणार्थ—*अभ्यास, तत्परता तथा परिणाम का नियम।* इस कारण यह पद्धति मनो-वैज्ञानिक सिद्धान्तो के अनुकूल है।

(५) बालको मे इस विधि के द्वारा सतत् प्रयत्नशीलता तथा रचनात्मक *सक्रियता का विकास होना है।*

(६) योजना पद्धति के *अन्तर्गत* शिक्षालय के जीवन को वास्तविक जीवन से सम्बन्धित किया जाता है। व अपनी योजनाओ की पूर्ति सामाजिक पर्यावरण *मे करते हैं जिससे वे व्यावहारिक जीवन की शिक्षा प्राप्त कर लेते हैं* और बाद मे उनको जीवन की कठिनाइयो को सुलझाने मे कोई कठिनाई नहीं होती। इस सम्बन्ध के कारण बालक स्वय अपने मूल्यो का निर्माण करने मे सफल होता है।

(७) इस पद्धति म स्वक्रिया पर बल दिया जाता है। छात्र इसके द्वारा स्वानुभव द्वारा ज्ञान प्राप्त करते हैं।

(८) इस पद्धति के प्रयोग से कक्षा-शिक्षण के दोषो का निवारण किया जा सकता है। इसमे छात्र वैयक्तिक एव सामूहिक रूप से अपनी योग्यता, रुचि तथा क्षमता के अनुसार कार्य करते हैं।

(९) इस पद्धति के प्रयोग से छात्रो मे सामाजिक गुणो, आदतो तथा अभिरुचियो का विकास होता है।

(१०) इस पद्धति के द्वारा छात्रों को श्रम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जिससे वे श्रम के महत्त्व को समझ सकें और राष्ट्र एवं विश्व के श्रमिको का आदर कर सकें।

दोष एवं सीमाएँ—(१) इस पद्धति के द्वारा शिक्षण करने से ज्ञान खण्डो मे विभाजित करके प्रदान किया जाता है। दूसरे शब्दो मे यह कहा जा सकता है कि इसके द्वारा क्रम तथा तारतम्य के साथ ज्ञान प्रदान नही किया जाता।

(२) यह पद्धति बहुत व्ययपूर्ण है। इसके प्रयोग के लिए विभिन्न उपकरणो, उपादानो, साधनो, पुस्तको, पत्रिकाओ आदि की आवश्यकता है। इस कारण भारत जैसे निर्धन देश मे इसका प्रयोग पर्याप्त मात्रा मे नही किया जा सकता।

(३) इस पद्धति के द्वारा शिक्षण करने मे समय बहुत लगता है। अर्थशास्त्र को इतना समय, समय-तालिका मे प्राप्त नही होता।

(४) इस पद्धति के विरुद्ध एक आक्षेप यह भी लगाया जाता है कि इसके प्रयोग से शिक्षालय का सम्पूर्ण कार्य निष्क्रम हो जाता है।

(५) अर्थशास्त्र की पुस्तकें योजनाओ के आधार पर नही लिखी जाती हैं। इस कारण योजनाओ की पूर्ति के लिए सामग्री उपलब्ध नहीं हो पाती। इस लिए भी योजना पद्धति को नही अपनाया जाता।

(६) **समस्या पद्धति**—*समस्या पद्धति योजना पद्धति से पर्याप्त समानता रखती है। इन दोनो पद्धतियो मे अन्तर इस बात का है कि योजना पद्धति मे* प्रायोगिक कार्य को महत्त्व प्रदान किया जाता है। यह प्रायोगिक कार्य एक वास्तविक स्थिति मे सम्पन्न किया जाता है जबकि समस्या पद्धति मे मानसिक निष्कर्षों पर अधिक बल दिया जाता है। दूसरे शब्दो मे यह कहा जा सकता है कि योजना पद्धति मे शारीरिक एव मानसिक दोनो प्रकार की क्रियाएँ सन्निहित होती हैं *जबकि समस्या पद्धति मे केवल मानसिक हल ही प्रदान* किया जाता है। इस प्रकार समस्या पद्धति मे किसी समस्या या प्रश्न को एक विशेष स्थिति मे वैज्ञानिक ढग से हल किया जाता है। अतः इस पद्धति का सबसे प्रमुख गुण मानसिक क्रिया एव आलोचनात्मक चिन्तन है। अर्थशास्त्र-शिक्षण मे इस पद्धति का महत्त्वपूर्ण स्थान है क्योंकि इसका प्रमुख ध्येय बालको

को जीवन की वास्तविक समस्याओ स परिचित कराना है। अत इस पद्धति के द्वारा अर्थशास्त्र के विभागो अर्थात् उपभोग, विनिमय, उत्पादन, वितरण व राजस्व आदि की समस्याओ के प्रसग से व्यावहारिक ज्ञान छात्रो को प्रदान किया जाता है। इस प्रकार इसके द्वारा सैद्धान्तिक विवेचना नही की जाती वरन् केवल उन्ही सिद्धान्तो का अध्ययन कराया जाता है, जो कि समस्याओ के अध्ययन म प्रसंगवश आ जाते हैं।

प्रयोग—इस पद्धति मे शिक्षक या तो स्वय समस्या छात्रो को दे देता है या छात्र स्वय प्रस्तुत कर देते हैं। समस्या एक छात्र के द्वारा भी प्रस्तुत की जा सकती है तथा कई छात्र उसको सामूहिक रूप मे भी रख सकते हैं। परन्तु इसके प्रयोग मे इस बात पर बल दिया जाता है कि छात्र समस्या को अपनी समझकर हल करने के लिए तत्पर रहे। दूसरे शब्दो मे कह सकते हैं कि छात्रो को समस्या मे अपनत्व अनुभव करना चाहिए। इसके अतिरिक्त समस्या ऐसी चुनी जानी चाहिए जो छात्रो के आर्थिक जीवन से सम्बन्धित हो। दूसरे, समस्या छात्रो की रुचि एव मानसिक स्तर के अनुकूल होनी चाहिए। इसके प्रयोग म निम्नलिखित बातो का विशेष ध्यान रखना चाहिए

(१) समस्या का चयन तथा उसका प्रस्तुतीकरण।

(२) समस्या से सम्बन्धित तथ्यो का एकत्रीकरण एव व्यवस्था।

(३) तथ्यो की जाँच तथा सम्भावित हलो का निर्णय।

(४) तथ्यो का विश्लेषण, आलोचना तथा उनके आधार पर परिणाम निकालना।

(५) परिणामो का मूल्याकन तथा सामान्य नियमो का निर्माण।

(६) समस्या का लेखा।

उदाहरण

समस्या—भा त मे कृषि।

प्रस्तुतीकरण—शिक्षक छात्रो के समक्ष इस समस्या को उनके वास्तविक जीवन से सम्बन्धित करके प्रस्तुत करेगा। बालको से भारत मे कृषि की आवश्यकता एव महत्व के विषय म प्रश्न पूछे जायेंगे, इस प्रकार समस्या की आवश्यकता को छात्रो के समक्ष स्पष्ट किया जायगा। इसके पश्चात् इस समस्या के अध्ययन हेतु एक रूपरेखा तैयार की जायगी। वह इस प्रकार की होगी

(१) समस्या की आवश्यकता एवं महत्व।

(२) कृषि की हीन दशा के कारण—

(अ) प्राकृतिक कारण।

(ब) आर्थिक कारण—(१) छोटे-छोटे तथा बिखरे हुए खेत, (२) लगान-पद्धति का दोषपूर्ण होना, (३) कृषि-श्रम की कार्य-क्षमता, (४) पूँजी की कमी, (५) कृषि उपजो के भडारो की कमी, (६) दोषपूर्ण सगठन, (७) किसानो की ऋण ग्रस्तता एव साख का अभाव ।

(स) कृषको की अशिक्षा ।

(द) कृषको की रूढिवादिता एव कुरीतियाँ ।

(य) सिचाई के साधनो का अभाव ।

(र) वैज्ञानिक कृषि-यन्त्रो के प्रयोग का अभाव ।

(ल) खाद की समस्या ।

(व) अच्छे बीजो का अभाव ।

(श) जनसख्या का दबाव ।

(३) हीन दशा के कारणों को दूर करने के उपाय

(१) सामूहिक खेती ।

(२) सहकारी खेती ।

(३) चकबन्दी ।

(४) कृषको को शिक्षित करना ।

(५) खाद की समस्या को हल करने के उपाय ।

(६) पूँजी तथा बाजारो की व्यवस्था करने के लिए उपाय ।

(७) सिंचाई के साधनो म वृद्धि ।

(८) वैज्ञानिक यन्त्रो की उपलब्धि और प्रयोग ।

(९) फसल को विभिन्न प्रकार के कीडो से बचाने के उपाय ।

(१०) यातायात के साधनो मे सुधार ।

(४) अध्ययन [redacted] हेतु आवश्यक सामग्री—

(१) सरकार द्वारा अभी तक किए गए उपाय ।

(२) प्रथम, द्वितीय, तथा तृतीय पचवर्षीय योजनाओ की प्रगति का विवरण ।

(३) उपयोगी पुस्तकें तथा पत्रिकाएँ ।

(४) कृषि सम्बन्धी अनुसधानो का अध्ययन ।

(५) जनसख्या की वृद्धि को रोकने के उपाय—परिवार-नियोजन, आदि ।

(६) समस्त शासकीय प्रयत्नो का समीक्षात्मक अध्ययन ।

रूपरेखा तैयार करने के उपरान्त छात्र अपेक्षित सामग्री का सग्रह करेंगे । इस कार्य मे शिक्षक छात्रो को सहयोग प्रदान करेगा । इसके पश्चात् छात्र समस्या का अध्ययन करना प्रारम्भ करेंगे तथा समस्त एकत्रित तथ्यो का

आलोचनात्मक अध्ययन करके निष्कर्ष निकालने का प्रयत्न करेंगे। इनका निर्माण वाद-विवाद द्वारा भी कराया जा सकता है। परिणाम निकालने के उपरान्त छात्र इस समस्या को पूर्णरूप से लेख-बद्ध करेंगे। इस प्रकार छात्र स्वानुभव द्वारा ज्ञान अर्जित करने मे सफल हो सकते हैं।

गुण—(१) इस पद्धति के प्रयोग से छात्र 'सबसे उत्तम क्या है' ? के विषय मे सोचना, निर्णय, मूल्यांकन, तुलना तथा चयन करना सीख जाते है।

(२) इसके द्वारा छात्र अपने भावी जीवन की आर्थिक समस्याओ को हल करने के लिए तत्पर किए जाते हैं।

(३) इस पद्धति के प्रयोग से छात्र समस्या हल करने की पद्धति को सीख जाते हैं।

(४) इसके द्वारा छात्र तथ्यो को संग्रह एवं व्यवस्थित करना सीख जाते हैं।

(५) इसके बालको मे स्वाध्ययन की आदत का निर्माण होता है।

(६) इसके द्वारा राष्ट्रीय एव सामाजिक समस्याओ के आर्थिक पक्षो को समझने की सूझ का विकास होता है।

(७) इससे छात्रो मे वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न हो जाता है तथा वे मुद्रित पृष्ठो का अन्धानुकरण नही करते।

(८) इसके प्रयोग से छात्र स्वक्रिया द्वारा ज्ञान अर्जित करते हैं।

दोष तथा सीमाएँ—(१) यह पद्धति जूनियर स्तर के छात्रो के लिए व्यवहार्य नही है।

(२) यदि इस पद्धति का प्रयोग बारम्बार किया गया तो यह नीरस एव यांत्रिक बन जाती है।

(३) इस पद्धति मे समय बहुत लगता है, जबकि अर्थशास्त्र को समय-तालिका मे आवश्यकतानुसार भी समय प्राप्त नही हो पाता है।

(४) इसमे सदैव सन्तोषजनक परिणाम प्राप्त नही हो पाते।

(५) इस पद्धति के प्रयोग के लिए निर्देशात्मक सामग्री की बहुत आवश्यकता होती है, जबकि हमारे शिक्षालयो मे इस प्रकार की पुस्तको, पत्रिकाओ आदि का अभाव पाया जाता है।

(६) इसके प्रयोग के लिए प्रतिभाशाली एव कुशल शिक्षको की आवश्यकता है। यदि इसको सामान्य स्तर के शिक्षको द्वारा सचालित किया गया तो हित की अपेक्षा अहित होने की सम्भावना बनी रहेगी।

सुझाव—(१) समस्या का चयन छात्रो की आर्थिक परिस्थितियो के सदर्भ मे करना चाहिए तथा इनके चयन मे छात्रो का परस्पर सहयोग प्राप्त करना चाहिए।

(२) समस्याओ के हल के लिए अपेक्षित सामग्री को सुगमतापूर्वक उपलब्ध बनाना चाहिए।

(३) समस्याओ के विश्लेषण एव सश्लेषण मे छात्रो को पथ प्रदर्शित किया जाय।

(४) समस्याओ को स्पष्ट ढग से प्रस्तुत किया जाय।

(६) व्याप्तिमूलक व निगमन विधि—अर्थशास्त्र-शिक्षण मे इन पद्धतियो का प्रयोग बहुतायत से होता है। यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय तो ये विधियाँ न होकर एक प्रकार से अर्थशास्त्र-शिक्षण की रीतियाँ हैं क्योकि इनके द्वारा अर्थशास्त्र के सिद्धान्तो का प्रतिपादन होता है। दूसरे शब्दो मे हम कह सकते हैं कि ये प्रणालियाँ अर्थशास्त्र के सिद्धान्तो को जानने के लिए एक प्रकार से पहुँच (Approach) का कार्य करती है। नीचे दोनो विधियो का पृथक पृथक क्रम से विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है :

(अ) व्याप्तिमूलक—प्रो० जे० एम० कीन्स के मतानुसार "व्याप्तिमूलक रीति मे हम अनेक दृष्टान्तो के आधार पर एक सामान्य नियम प्रतिपादित करते हैं। इस प्रकार इसमे हम विशिष्ट से सामान्य की ओर (From particular to general) जाते हैं।" दूसरे शब्दो मे हम कह सकते हैं कि इसमे विषय से सम्बन्धित घटनाओ का अवलोकन किया जाता है। इसके उपरान्त इन घटनाओ मे जो बातें समान पाई जाती हैं उनके आधार पर एक सामान्य नियम का निर्माण किया जाता है। इस पद्धति के प्रमुख अग इस प्रकार हैं :

(१) निरीक्षण या अवलोकन (Observation),

(२) तथ्यो का सग्रह (Collection of facts),

(३) प्रयोग (Experiment)।

इस रीति मे सर्वप्रथम विभिन्न घटनाओ एव तथ्यो का अवलोकन व अध्ययन किया जाता है। इसके उपरान्त उनका सग्रह एव वर्गीकरण करके समान तथ्यो की खोज की जाती है। इसके पश्चात् समान तथ्यो के आधार पर सामान्य नियम का निर्माण किया जाता है और फिर इस सिद्धान्त के सत्यापन की प्रयोग द्वारा जाँच की जाती है।

गुण—(१) यह पद्धति आर्थिक जीवन की वास्तविक घटनाओ के निरीक्षण पर अवलम्बित है। इसलिए इसके द्वारा निर्मित किये गये सिद्धान्त विश्वसनीय होते हैं।

(२) यह पद्धति सक्रिय (Dynamic) है। इसके द्वारा आर्थिक जीवन के प्रगतिशील तथ्यो से निष्कर्ष निकाले जाते हैं।

(३) यह पद्धति निगमन विधि के पूरक के रूप मे कार्य करती है अर्थात्

इसके द्वारा निगमन प्रणाली से निकाले हुए निष्कर्षों की सफलतापूर्वक जाँच की जा सकती है।

(४) इसके प्रयोग से नियमो को सुगमतापूर्वक समझा जा सकता है।

दोष—(१) इसके द्वारा बनाये हुए नियम सदैव सत्य नही होते। अपर्याप्त आँकडो पर बनाये गये नियमो की असत्यता की सम्भावना बनी रहती है।

(२) अर्थशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है जिसमे मानव की आर्थिक क्रियाओ का अध्ययन किया जाता है। इस कारण प्राकृतिक विज्ञानो की अपेक्षा इसमे इस पद्धति का प्रयोग सीमित है क्योंकि मानव पर प्रयोग करना कठिन है।

(३) परिस्थितियो मे परिवर्तन हो जाने पर इस रीति के द्वारा बनाये हुए नियम या सिद्धान्त अव्यावहारिक हो जाते हैं।

(४) इस पद्धति मे आँकडो का सग्रह, वर्गीकरण, विश्लेषण आदि किया जाता है। इस कार्य को कुशल एव सिद्धहस्त व्यक्ति ही कर सकता है। इस कारण इसके प्रयोग मे सामान्य व्यक्ति के लिए अनेक कठिनाइयाँ आती हैं।

(५) अर्थशास्त्र के कई विभागो अर्थात् वितरण, विनिमय आदि की समस्याओ को सुलझाने मे इस पद्धति का प्रयोग बहुत सीमित है। इनको निगमन रीति से सफलतापूर्वक एव सुगमता से सुलझाया जा सकता है।

(ब) निगमन रीति—अर्थशास्त्र शिक्षण मे 'रिकार्डो', 'मिल' आदि प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियो ने निगमन रीति को अपनाया था। इसमे स्वतः सिद्ध तथ्यो को आधार मानकर सिद्धान्तो का निर्माण किया जाता है। निगमन पद्धति मे सामान्य से विशिष्ट की ओर (From General to Particular) चलते हैं। प्रो० जेवेन्स ने इस पद्धति का मुख्य लक्षण इस प्रकार बताया था कि इसमे एक ज्ञान से दूसरे ज्ञान को ग्रहण किया जाता है। इसमे किसी विषय की विवेचना के लिए न तो प्रयोग करने पडते हैं और न तथ्यो का एकत्रीकरण। इस पद्धति का तर्क ही एकमात्र साधन है।

गुण—(१) यह पद्धति बहुत सरल है, क्योंकि इसमे एक व्यापक सत्य के आधार पर एक विशिष्ट सत्य का निर्माण किया जाता है। दूसरे इसका प्रयोग सामान्य व्यक्ति भी कर सकता है।

(२) यह पद्धति विश्वसनीय है क्योंकि यह तर्क की कसोटी पर खरी उतरती है। दूसरे शब्दो मे कहा जा सकता है कि इसमे निश्चितता पायी जाती है।

(३) इसका उपयोग आँकडो के अभाव मे भी किया जा सकता है।

(४) अर्थशास्त्र के शिक्षण के लिए यह बहुत उपयुक्त है क्योंकि

प्रयोग नहीं करना पड़ता। दूसरे, मनुष्य पर प्रयोग करना भी कठिन है। इसलिए भी यह बहुत उपयोगी है।

(५) इसके द्वारा बनाये गये सिद्धान्त पक्षपात-रहित होते हैं।

दोष—(१) इस पद्धति मे आधारभूत तथ्य की सत्यता को जांचने के लिए कोई व्यवस्था नही है। इस कारण इसके निष्कर्षों के अवास्तविक एव असत्य होने की सम्भावना रहती है। उदाहरणार्थ—यदि आधारभूत तथ्य ही अवास्तविक हैं तो उस पर आधारित निष्कर्ष भी अवास्तविक होगे।

(२) इस पद्धति मे निर्धारित नियमो को अटल मान लिया जाता है जबकि परिवर्तनशील जगत मे मानवीय मान्यताएँ भी परिवर्तनशील होती हैं।

(३) इस रीति के समर्थको मे कट्टरता पाई जाती है। वे अपने सिद्धान्तो को सार्वदेशिक व सार्वकालिक मानते हैं, जबकि व्यावहारिक जगत मे स्थिति इसके विपरीत पाई जाती है, क्योंकि जगत् मे विभिन्न राजनीतिक तथा सामाजिक कारणो के कारण परिवर्तन होता रहता है। इसलिए उनके नियम प्रत्येक परिस्थिति एव समय मे लागू नही हो सकते।

प्रयोग—अर्थशास्त्र शिक्षण मे ये दोनो विधियाँ पृथक पृथक रूप से प्रयोग मे नही लायी जानी चाहिए, बल्कि इनका समन्वित रूप ग्रहण किया जाय। इस प्रकार का प्रयोग बहुत उपयोगी होगा। प्रो० वेगनर (Wagner) ने ठीक ही कहा है कि "निगमन तथा व्याप्तिमूलक रीतियो म किस को चुना जाय इस प्रश्न का उत्तर यही हो सकता है कि दोनो के समन्वित रूप को ग्रहण किया जाय।" यह समन्वित पद्धति प्रो० सोमलर (Sohmoller) की इस विचारधारा पर सैद्धान्तिक रूप से अवलम्बित है, "वैज्ञानिक अध्ययन के लिए *व्याप्तिमूलक एव निगमन विधियाँ दोनो इस प्रकार आवश्यक हैं जिस प्रकार* चलने के लिए दाहिने तथा बायें दोनो पैरो की आवश्यकता पडती है।"[1] इस पद्धति के प्रयोग के लिए अर्थशास्त्र मे बहुत से अवसर है, उदाहरणार्थ—उपयोगिता ह्रास-नियम, उपभोक्ता की बचत का सिद्धान्त, माग तथा पूर्ति का नियम, ग्रेशम का नियम आदि। इसका प्रयोग अधोलिखित उदाहरण से स्पष्ट हो जायगा

उदाहरण

प्रकरण—"ग्रेशम का नियम"

---

1. "Induction and Deduction are both need for Scientific thought as the right and left foot are both needed for walking"

—Sohmoller, Quoted by Dr Marshall in his book *'Economics of Industry'*, p 419.

अध्यापक छात्रों के समक्ष एक नयी एवं उत्तम कटोरी तथा एक घिसी हुई पुरानी कटोरी प्रस्तुत करके—

अध्यापक—इन दोनों बराबर मूल्य की कटोरियों में से आपको कौनसी कटोरी पसन्द है ?

छात्र—नयी एवं उत्तम कटोरी।

अध्यापक—यह आपको क्यों पसन्द है ?

छात्र—क्योंकि यह सुन्दर एवं मजबूत है।

अध्यापक—यदि इन दोनों में से एक अनावश्यक है तो आप कौनसी कटोरी अलग करेंगे ?

छात्र—घिसी एवं पुरानी कटोरी।

एक बढ़िया एवं घटिया रूमाल प्रस्तुत करके—

अध्यापक—इन दोनों रूमालों में से आपको कौनसा रूमाल पसन्द है ?

छात्र—बढ़िया रूमाल।

अध्यापक—यह रूमाल आपको क्यों पसन्द है ?

छात्र—सुन्दर, आकर्षक एवं मजबूत है।

अध्यापक—इनमें से आप कौन सा रूमाल अपने पास रखना पसन्द करेंगे ?

छात्र—बढ़िया रूमाल।

अध्यापक—इन कटोरी एवं रूमाल के उदाहरणों से आप क्या निष्कर्ष निकालते हैं ?

छात्र—मनुष्य स्वभाव से सुन्दर एवं मजबूत को अपने पास रखना चाहता है।

एक नया तथा साफ नोट और एक पुराना एवं फटा सा नोट प्रस्तुत करके—

अध्यापक—यदि आपको इनमें से एक नोट लेना है तो आप कौनसा लेंगे ?

छात्र—साफ एवं नया नोट।

अध्यापक—यदि आपके पास ये दोनों नोट हैं और इनमें से आप एक खर्च करना चाहते हैं तो कौनसा खर्च करेंगे ?

छात्र—पुराना एवं फटा हुआ नोट।

अध्यापक—जब आपने अच्छा नोट अपने पास रख लिया तो चलन में कौनसा नोट गया ?

छात्र—पुराना नोट।

एक शुद्ध चाँदी का रुपया तथा एक मिश्रित धातु का रुपया प्रस्तुत करके—

अध्यापक—यदि ये दोनों रुपये बराबर मूल्य पर चलन में हों तो आप कौनसा रुपया पहले खर्च करना पसन्द करेंगे ?

छात्र—मिश्रित धातु का रुपया।

अध्यापक—इस नोट तथा रुपये के उदाहरण से आप क्या निष्कर्ष निकालते हैं ?

छात्र—यदि चलन में खराब तथा अच्छी मुद्रा होती है तो बुरी मुद्रा अच्छी मुद्रा को चलन से बाहर कर देती है।

अध्यापक—इस स्वभाव की रानी ऐलिजाबेथ प्रथम के आर्थिक परामर्शदाता सर टामस ग्रेशम ने व्याख्या की जिसको 'निकृष्ट मुद्रा परिचलन नियम' अथवा 'ग्रेशम का नियम' कहते हैं।

अध्यापक—यदि एक ही धातु के टक कुछ हल्के एवं घिसे तथा कुछ नवीन, शुद्ध तथा सम्पूर्ण वजन के चलन में हो तो लोग कौनसे टको को चलन में देंगे ?

छात्र—हल्के तथा घिसे टको को।

अध्यापक—ऐसा क्यो होता है ?

छात्र—हल्के तथा घिसे टको के सग्रह करने से बाद में हानि होने की सम्भावना रहती है।

अध्यापक—अतः यह नियम किस दशा में लागू होता है ?

छात्र—जब एक समय में अच्छी तथा बुरी मुद्रा के टक चलन में हो।

गुण—व्याप्तिमूलक एव निगमन की समन्वित पद्धति द्वारा शिक्षण से निम्नलिखित लाभ प्राप्त किये जा सकते है

(१) इस पद्धति के प्रयोग से छात्र स्वक्रिया द्वारा ज्ञान अर्जित करते हैं। इस प्रकार अर्जित किया हुआ ज्ञान स्थायी होता है।

(२) इसके द्वारा छात्रो की विश्लेषणात्मक शक्तियो का विकास होता है।

(३) इसके प्रयोग से छात्र अपने *अवलोकन, चिन्तन, निर्णय* आदि पर विश्वास करना सीख जाते हैं।

(४) यह पद्धति मनोवैज्ञानिक है।

दोष—(१) इसके द्वारा छात्रो में श्रेष्ठ नागरिकता एव प्रजातान्त्रिक गुणो का विकास नही किया जा सकता।

(२) इस पद्धति के प्रयोग से अर्थशास्त्र के व्यावहारिक पक्षो की शिक्षा प्रदान नही की जा सकती।

(३) इसका प्रत्येक विषय के शिक्षण के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है।

(७) विश्लेषणात्मक एवं संश्लेषणात्मक पद्धति—विश्लेषण वह क्रिया है जिसमे प्रतिपाद्य पाठ्य-वस्तु पर विचारात्मक प्रश्न किये जाते हैं जिससे पाठ्य-वस्तु के सब तत्त्वो पर प्रकाश डाला जा सके और उसकी सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवेचना हो जाय। इसमे प्रश्नो का *बाहुल्य रहता है। इस कारण बहुत से लोग*

इस पद्धति को प्रश्नोत्तर पद्धति के नाम से भी पुकारते हैं। विश्लेषण के उपरान्त जब तक हम पाठ्य-विषय के विभिन्न अंशो का सश्लेषण नहीं करेंगे तब तक छात्रो का ज्ञान निश्चित, सम्बद्ध, स्पष्ट एव मानस-पटल पर स्थायी नही हो सकेगा। सश्लेषण का अर्थ किसी वस्तु के विभिन्न अशो से प्रारम्भ करके सम्पूर्ण की ओर चलने से है। दूसरे शब्दो मे कह सकते हैं कि विश्लेषण का अर्थ किसी वस्तु को सरलतम अंशो मे विभाजित करना है तथा सश्लेषण का अर्थ विभिन्न अशो को एक वस्तु के रूप मे निर्मित करना है। अर्थशास्त्र-शिक्षण मे विश्लेषण-सश्लेषण पद्धति का प्रयोग बहुत ही लाभप्रद है।

प्रयोग—इस पद्धति के प्रयोग के लिए अर्थशास्त्र-शिक्षण मे बहुत से अवसर उपलब्ध हैं। उदाहरणार्थ—उत्पत्ति, उपभोग, राजस्व आदि। इसके प्रयोग मे यह आवश्यक नही है कि सम्पूर्ण विश्लेषण छात्रो द्वारा ही करवाया जाय। परन्तु इसमे कभी-कभी शिक्षक को भी सहयोग प्रदान करना चाहिए, क्योकि छात्र सभी प्रश्नो के उत्तर देने मे असमर्थ रहते हैं। जब वे किसी प्रश्न का उत्तर नही दे पायें तब शिक्षक को उस विषय के विश्लेषण मे छात्रो को सहायता देनी चाहिए।

गुण—(१) इस पद्धति के प्रयोग से छात्रो मे मौलिकता का विकास होता है।

(२) इसके द्वारा छात्रो मे तर्क, स्मरण, निर्णय आदि शक्तियाँ विकसित होती हैं।

(३) इस विधि में मनोवैज्ञानिकता तथा तार्किकता का सुन्दर समन्वय है।

(४) इसके द्वारा विषय-वस्तु को रोचक एव सजीव ढग से प्रस्तुत किया जाता है, जिससे उसमे छात्रो की रुचि भी बनी रहती है।

(५) इसके द्वारा छात्रो को स्वावलम्बी तथा कार्य-कारण सम्बन्ध स्थापित करने के योग्य बनाया जाता है।

(८) समाजीकृत अभिव्यक्ति-पद्धति—वेस्ले (Wesley) के अनुसार समाजीकृत अभिव्यक्ति एक आदर्श है जो शिक्षण मे ऐसे प्रयोग की कल्पना करता है जिसमे कक्षा के समस्त छात्र सहयोग एव सद्भावना से ज्ञान अर्जित कर सकें। इसके द्वारा कक्षा के पर्यावरण की औपचारिकता को समाप्त किया जाता है तथा इसके स्थान पर स्वाभाविकता उत्पन्न की जाती है, जिसमे छात्र अपनी प्रकृति, रुचि तथा सहयोग के साथ ज्ञानोपार्जन कर सकें। इस पद्धति का मूलभूत सिद्धान्त समाजीकरण है। अर्थशास्त्र-शिक्षण के लिए यह पद्धति बहुत लाभप्रद है क्योकि अर्थशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है, जिसका ध्येय छात्रो मे सामाजिकता उत्पन्न करना है।

प्रयोग—इस विधि का प्रयोग छात्रो, शिक्षक तथा विषय के उद्देश्यो पर निर्भर है। इस पद्धति के प्रयोग के लिए कक्षा मे बैठने की व्यवस्था परम्परागत विधि से नहीं वरन् चन्द्राकार ढग से की जाती है और शिक्षक का स्थान भी इनम ही होना है, उसके लिए परम्परागत ढग की भाँति विशेष स्थान नहीं होना है। समाजीकृत अभिव्यक्ति-पद्धति को सामाजिक वाद-विवाद के नाम से भी पुकारा जाता है। प्रो॰ बाईनिग तथा बाईनिग ने वाद-विवाद के विषयो की योजना चार प्रकार की बताई हैं जो इस प्रकार हैं

(१) औपचारिक वर्ग-योजना (Formal Group Plan)

(२) अनौपचारिक वर्ग-योजना (Informal Group Plan)

(३) आत्म-निर्देश वर्ग-योजना (Self-directing Group Plan)

(४) सेमीनार वर्ग योजना (Seminar Group Plan)

प्रथम के अन्तर्गत छात्र व्यवस्थित रूप से समस्याओ पर वाद-विवाद करते हैं। इसमे एक सभापति का निर्वाचन किया जाता है। यह छात्रो द्वारा ही निर्वाचित होता है। द्वितीय के अन्तर्गत कोई व्यवस्थित योजना नही होती। छात्र तथा शिक्षक स्वच्छन्द रूप से किसी भी समस्या पर विचार कर सकते हैं। इसमे समस्या व प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए सभापति की आज्ञा लेना कोई आवश्यक नही है। तीसरे प्रकार की योजना मे छात्र ही समस्याओ पर वाद-विवाद करके उनका स्वय हल निकालते हैं। इसमे शिक्षक को बहुत कम बोलना पडता है। यह छोटी कक्षाओ के लिए उपयोगी नही है। सेमीनार वर्ग योजना मे कोई समस्या किसी एक वर्ग को दे दी जाती है। यह वर्ग उसके विषय मे पूर्ण अन्वेषण करके उसको वाद-विवाद तथा आलोचना के लिए विचार-गोष्ठी मे रखता है। तब उस पर सब लोग अपने-अपने विचार प्रकट करेंगे। कुछ उसके पक्ष मे बोलते हैं तथा कुछ विपक्ष मे। अन्त मे उस समस्या के निराकरण के लिए सुझाव दिये जाते हैं। यह विश्वविद्यालीय स्तर के लिए उपयोगी है। अर्थशास्त्र-शिक्षण मे इसका प्रयोग अधोलिखित रूप से किया जा सकता है :

उदाहरण

प्रकरण—'पारिवारिक बजट'

हाईस्कूल स्तर पर औपचारिक वर्ग-योजना को अपनाना लाभप्रद होगा। इससे एक तो विनय की समस्या उत्पन्न नहीं हो पायेगी। दूसरे, छात्र विभिन्न सभाओं तथा समितियो का सगठन एव संचालन की प्रक्रिया का ज्ञान प्राप्त कर लेंगे। शिक्षक आर्थिक दृष्टि से समाज के निम्न परिवारो के आधार पर छात्रों को अधोलिखित वर्गों मे विभक्त करेगा

(१) निर्धन परिवारो से सम्बन्धित वर्ग ।
(२) मध्यम श्रेणी के परिवारो से सम्बन्धित वर्ग ।
(३) धनी परिवारों से सम्बन्धित वर्ग ।

इस वर्गीकरण के उपरान्त तीनो वर्ग एक सभापति का निर्वाचन करेंगे । वह सभा की कार्यवाही का सचालन करायेगा । तीनो वर्ग पृथक-पृथक रूप से परिवारो की आय के अनुसार खर्च की मदें मालूम करेंगे । इसके आधार पर पारिवारिक बजट की रूपरेखा तैयार की जाएगी ।

गुण—(१) इसके द्वारा छात्र योजना बनाना सीख जाते हैं ।

(२) इसके द्वारा छात्रो मे उत्तरदायित्व पूर्ण करने तथा स्वस्थ चिन्तन की शक्ति उत्पन्न होती है ।

(३) छात्रों मे आत्म-विश्वास उत्पन्न किया जाता है ।

(४) छात्र वाद-विवाद मे भाग लेना सीख जाते हैं ।

(५) छात्रो मे सहयोग की भावना विकसित की जाती है ।

(६) इसके द्वारा छात्र आर्थिक समस्याओ को हल करना सीख जाते हैं ।

(७) इस पद्धति के द्वारा शिक्षक अपने छात्रों के गुण तथा दोषो को जानने मे समर्थ होता है ।

(८) यह पद्धति मनोवैज्ञानिक है । इसमे जो भी समस्या ली जाती है वह उनके जीवन से सम्बन्धित होती है और उनको उनकी रुचियो एव प्रवृत्तियो के अनुकूल शिक्षा प्रदान की जाती है ।

(९) छात्रो मे शिक्षक तथा दूसरो के लिए आदर एवं सम्मान की भावना विकसित की जाती है ।

(१०) इसके प्रयोग से आत्माभिव्यक्ति के लिए पर्याप्त अवसर प्राप्त होते हैं ।

(११) छात्रो के समान उद्देश्यो एव रुचियो की खोज की जाती है ।

(१२) छात्रो मे स्वतन्त्र विचारणा की नींव डाली जाती है ।

(१३) छात्रो की प्रेरणा-शक्ति को प्रोत्साहित किया जाता है ।

(१४) छात्र अपने विचारो तथा निर्णयो को सगठित एव लिखित रूप मे रखना सीख जाते हैं ।

दोष—(१) इसके प्रयोग मे कुछ थोडे छात्र ही क्रियाशील हो पाते हैं ।

(२) इसके द्वारा छात्र व्यर्थ के वाद-विवादो में भाग लेना सीख जाते हैं और वितर्क की आदत पड जाती है ।

(३) इसमे समय का दुरुपयोग बहुत होता है ।

(४) इसके प्रयोग से पाठ्य-वस्तु का क्रमबद्ध ज्ञान प्राप्त नहीं हो पाता ।

(६) निरीक्षित-अध्ययन पद्धति—अमेरिका मे इस पद्धति का प्रचलन १९ वी शताब्दी के अन्त मे आरम्भ हो गया था। इसका प्रयोग परम्परागत पद्धति के दोषो को दूर करने के लिए किया गया। इस पद्धति का महत्त्व इसलिए भी बढा कि इसके विपक्षियो ने भी इसका एक पृथक विधि के रूप मे प्रयोग न करके अन्य पद्धतियो के साथ किया था। यह अध्ययन कक्षा या अध्ययनशाला मे पूर्व निर्धारित कार्य के सम्बन्ध मे किया जाता है और उनका शिक्षको के द्वारा निरीक्षण एव निर्देशन किया जाता है। इस पद्धति को निर्देशित अध्ययन-पद्धति (Directed Study Method) के नाम से भी पुकारा जाता है। सामाजिक विषयो के शिक्षण मे यह पद्धति बहुत उपयोगी सिद्ध हुई है। इसलिए अर्थशास्त्र-शिक्षण-पद्धति मे निरीक्षित अध्ययन पद्धति को स्थान मिलना आवश्यक है। इसमे छात्रो को कार्य दे दिया जाता है। इसके उपरान्त छात्र अपने-अपने कार्य मे सलग्न हो जाते हैं और शिक्षक उनके कार्य का निरीक्षण करता है। इसके अतिरिक्त वह निर्देशन भी प्रदान करता है। इसके लिए पृथक रूप से एक और शिक्षक भी नियुक्त किया जा सकता है। छात्र शिक्षक से अपनी कठिनाइयो एव समस्याओ का समाधान कराते रहते हैं। कुछ विद्वानो का मत है कि इस पद्धति के प्रयोग से छात्रो की शिक्षालय की समस्त क्रियाओ का निरीक्षण एव निर्देशन किया जाता है परन्तु यह ठीक सा प्रतीत नही होता।

प्रयोग—प्रो० बाइनिग तथा बाइनिग[1] *ने इसके प्रयोग के लिए अधोलिखित* योजनाएँ प्रस्तुत की हैं

(१) सम्मेलन योजना (Conference Plan)

(२) विशिष्ट शिक्षक योजना (Special Teacher Plan)

(३) काल-विभाजन योजना (Divided Period Plan)

(४) द्वि-काल योजना (Double Period Plan)

(५) सामाजिक योजना (Periodical Plan)

(१) सम्मेलन योजना—इस पद्धति के द्वारा पिछडे हुए बालको की शिक्षा बहुत ही उपयुक्त ढग से हो जाती है। इसमे उन बालको की शिक्षा के लिए प्रबन्ध किया जाता है जो कक्षा के अन्य विद्यार्थियो के साथ नही चल पाते।

(२) विशिष्ट शिक्षक योजना—यह योजना सम्मेलन योजना से सम्बन्धित है। इसमे छात्रो को विशिष्ट अध्यापक या अतिरिक्त शिक्षक नियुक्त करके सहायता प्रदान की जाती है। इसके द्वारा छात्रो को अतिरिक्त अध्ययन एव निर्देशन प्राप्त हो जाता है।

1. A. C. Bining and D. H Bining, *Teaching The Social Studies in Secondary Schools*, p. 112-16.

(३) काल विभाजन योजना—इस योजना के अन्तगत छात्रो को अध्ययन के लिए काय दे दिया जाता है और उसका निर्देशन एक शिक्षक द्वारा किया जाता है तथा निरीक्षण दूसरे शिक्षक द्वारा। यह योजना बहुत मितव्ययी है, क्योकि निरीक्षण करने वाला शिक्षक कम से कम समय मे बहुत से छात्रो की कठिनाइयो एव सीमाओ को जानने में समर्थ हो जाता है और इसी प्रकार निर्देशन करने वाला अध्यापक भी कम समय मे अधिक से अधिक बालको को निर्देशन दे देता है।

(४) द्वि-काल योजना—इसमे एक ही पाठ्य वस्तु द्वि-समय-चक्रों (Double periods) के लिए प्रदान कर दी जाती है। प्रथम समय चक्र मे छात्रो को निर्धारित काय स सम्बन्धित बातो का ज्ञान कराया जाता है तथा दूसरे मे वे निरीक्षित या निर्देशित अध्ययन करते हैं। मेबेलई सिम्पसन ने ६० मिनट के अन्दर समय को अधोलिखित रूप से विभक्त किया है[1] :

पुनर्निरीक्षण ...	२५ मिनट
कार्य निर्धारण .	२५ मिनट
शारीरिक व्यायाम .	५ मिनट
निर्धारित कार्य का अध्ययन	३५ मिनट

(५) सामयिक योजना—निरीक्षित अध्ययन की यह योजना क्रमिक रूप से प्रयुक्त न करके सामयिक रूप से प्रयोग मे लायी जाती है। शिक्षक इसका प्रयोग महीने मे एक या दो बार कर सकता है।

उदाहरण

प्रकरण—'माँग तथा पूर्ति का नियम'

अध्यापक इस पद्धति के प्रयोग के लिए छात्रो को दो भागो मे विभक्त कर सकता है अर्थात् पिछड़े बालको का वग तथा सामान्य बालको का वर्ग। दूसरे वह समस्त छात्रो को एक वग के रूप म रखकर अपने कार्य का निर्धारण करेगा। माँग तथा पूर्ति के विषय मे शिक्षक सवप्रथम पूरी कक्षा क समक्ष एक सूक्ष्म विवेचना प्रस्तुत करेगा। इसके उपरान्त व्यवहार में आने वाली वस्तुओ की माँग तथा पूर्ति की दृष्टि से पाठ्य-वस्तु की ओर इगित करेगा तत्पश्चात् इसके

---

1 The Review 25 Minutes
The Assignment . 25 Minutes
Physical Exercises 5 Minutes
Study of Assignment 35 Minutes
—Mablel E Simpon, Quoted by Bining and Bining in his book *'Teaching the Social Studies in Secondary Schools'*, p. 115

अध्ययन के लिए अध्ययन सामग्री के सूत्रो को बताएगा। इस जानकारी के उपरान्त छात्र अपने-अपने कार्य मे सलग्न हो जायेंगे। अध्यापक निरीक्षण करेगा और वैयक्तिक एव सामूहिक दोनो ही रूप से उनकी कठिनाइयो एव समस्याओ का समाधान करेगा।

गुण—(१) इस पद्धति का सबसे प्रमुख गुण यह है कि इसके प्रयोग से वैयक्तिक भिन्नता के अनुकूल शिक्षा प्रदान की जाती है।

(२) इसके द्वारा गुरु तथा शिष्य के सम्बन्ध उत्तम हो जाते हैं।

(३) इसके प्रयोग से छात्रो मे विभिन्न कुशलताओ, गुणो तथा आदतो का विकास हो जाता है।

(४) इसके द्वारा पिछड़े हुए बालको को शिक्षा उपयुक्त ढग से दी जा सकती है।

(५) यह पद्धति विनय की समस्या का हल करने मे बहुत सहायक है।

दोष तथा सीमाएँ—(१) इस पद्धति के लिए अधिक समय की अपेक्षा है।

(२) यह व्यय-साध्य एव कष्ट साध्य दोनो ही है।

(३) इसके द्वारा छात्रो की आत्म निर्भरता पर आघात पहुँचता है।

अर्थशास्त्र की शिक्षण विधियो को देखने के उपरान्त हम कह सकते हैं कि अर्थशास्त्र की शिक्षा के उद्देश्यो की पूर्ति किसी एक विधि के अवलम्बन से नही हो सकती है। अत अर्थशास्त्र के शिक्षक का परम कर्तव्य हो जाता है कि वह विषयानुसार, छात्रो के मानसिक स्तर, रुचियो तथा आवश्यकताओ के अनुकूल इन पद्धतियो का प्रयोग सतर्कता के साथ करे। यदि वह सतर्क नहीं रहेगा तो वह अपने उद्देश्यो की पूर्ति मे सफल नही हो सकता।

प्रश्न

1 Which method do you think better for High School classes and why ? Give reasons in the support of your answer ?
आप हाईस्कूल कक्षाओ के लिए किस शिक्षण-पद्धति को उपयुक्त समझते हैं और क्यो ? अपने उत्तर के पक्ष मे तर्क दीजिए।

2. What do you mean by Socialized Recitation Method and how it can be practised in Economics teaching ?
आप समाजीकृत अभिव्यक्ति पद्धति से क्या समझते हैं ? इसका अर्थशास्त्र शिक्षण मे किस प्रकार प्रयोग किया जा सकता है ?

3. Discuss some of the methods and techniques employed actually by you in teaching Economics during the course of your practice teaching. Mention some of their

advantages and limitations on the basis of your first hand experience (A U., B T., 1962)
आपने अपने शिक्षण-व्यवहार के समय अर्थशास्त्र को पढाने के लिए जिन शिक्षण पद्धतियो एव रीतियो का प्रयोग किया हो, उनकी विवेचना कीजिए। अपने अनुभव के आधार पर उनके लाभो एव सीमाओ का भी उल्लेख कीजिए।

4 What are the various methods employed in the teaching of Economics in Secondary schools ? Which of these do you consider best suited to the needs of our students, and why ? (A. U., B Ed, 1966)
माध्यमिक विद्यालयो मे अर्थशास्त्र को पढाने के लिए किन किन शिक्षण-पद्धतियो का प्रयोग किया जाता है ? आप इनमे से किन पद्धतियो को अपने छात्रो के लिए उत्तम समझते हैं और क्यो ?

5 What are the different methods of teaching Economics ? Illustrate your answer with suitable examples (A U, B Ed, 1967)
अर्थशास्त्र को पढ़ाने की विविध विधियो का उल्लेख अपने अनुभव के आधार पर उदाहरण सहित कीजिए।

6 Write short note on 'Supervised Study Method' (Udaipur, B Ed, 1967)
'समाजीकृत अभिव्यक्ति-पद्धति' पर सक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

7. What is the significance of Problem Method in the teaching of Economics ? Discuss
Select a topic or unit from the textbook of Economics and give an Outline of different steps that will be followed under the problem method (Udaipur, B Ed, 1067)
अर्थशास्त्र-शिक्षण म समस्या विधि का क्या महत्त्व है ? विवेचना कीजिए।
अर्थशास्त्र की पाठ्य पुस्तक मे से एक शीर्षक या यूनिट का चयन करके समस्या विधि द्वारा पढाय जाने को एक रूप-रेखा तैयार कीजिए।

अध्याय ५

अर्थशास्त्र-शिक्षण की रीतियाँ
(Techniques of Teaching Economics)

"All techinques should be in line with the demo cratic process and relate to the goals desired in the study of a topic Techniques are employed for getting the learning under way with guidance from the teacher They should be selected as a means of serving the best purpose at a particular time with the resultant of growth for the individual" —*M P Moffatt* **('Social Studies Instruction')**

गत अध्याय मे उन पद्धतियो का वणन किया गया है जो अथशास्त्र शिक्षण के लिए प्रयोग मे लाई जाती हैं। इन पद्धतियो के अन्तगत कुछ विशिष्ट रीतियो का प्रयोग अथशास्त्र के अध्यापन मे किया जाता है। ये रीतियाँ ज्ञानाजन मे बहुत ही उपयोगी सिद्ध होती हैं। विभिन्न रीतियाँ विभिन्न उद्द श्यो के लिए भिन्न भिन्न अवसरो पर प्रयोग मे लाई जाती हैं। वस्तुत इन सबका अभिप्राय ज्ञानाजन को प्रभावशाली ग्राह्य बोधगम्य एव रोचक बनाना होता है। अथशास्त्र शिक्षण म अधोलिखित रीतियाँ प्रयोग मे लाई जाती हैं

(१) प्रश्न रीति (Questioning Technique)
(२) अभ्यास रीति (Drill Technique)
(३) कहानी-कथन रीति (Story teling Technique)
(४) काय निर्धारण रीति (Assignment Technique)
(५) कथन रीति (Narration Technique)
(६) अवलोकन रीति (Observation Technique)

(७) नाटकीय रीति (Dramatising Technique)
(८) उदाहरण रीति (Illustration Technique)
(९) परीक्षा रीति (Examination Technique)

(१) **प्रश्न रीति**—अर्थशास्त्र शिक्षण मे प्रश्न रीति का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसके द्वारा सीखने की प्रक्रिया को प्रभावोत्पादक बनाया जाता है। *प्रश्नो का परम्परागत ध्येय बालक के ज्ञान को जाँचना था।* परन्तु आधुनिक शैक्षिक प्रक्रिया में प्रश्न महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं तथा इस रीति के द्वारा बहुत से प्रयोजनो की पूर्ति की जाती है। प्रश्नो के मुख्य प्रयोजन निम्न हैं :

(१) छात्रो में कार्य के प्रति कौतूहल एवं रुचि जाग्रत करना।
(२) सीखने की प्रक्रिया मे इनके द्वारा पथ-प्रदर्शन करना।
(३) विचार-प्रक्रिया को प्रोत्साहित करना।
(४) निर्धारित कार्य के लिए उत्प्रेरणा प्रदान करना।
(५) छात्रो की आवश्यकताओ, अभिरुचियो तथा तात्कालिक समस्याओ का ज्ञान प्राप्त करना।
(६) कार्य के मुख्य बिन्दुओ पर प्रकाश डालना।
(७) छात्रो के अर्जित ज्ञान तथा उन्नति को मापना।
(८) आर्थिक जीवन की समस्याओ को समझने के लिए उनके मस्तिष्क को तत्पर बनाना।
(९) अन्वेषण तथा अनुसधान के लिए प्रोत्साहित करना।
(१०) प्रश्नो के द्वारा ज्ञान तथा अनुभवो को व्यवस्थित करने मे सहायता प्रदान करना।
(११) मौखिक रूप मे अभिव्यजना शक्ति का विकास करना।
(१२) छात्रो के दोषो तथा कठिनाइयो का पता लगाना।
(१३) छात्रो को ज्ञान के पुनर्विलोकन तथा प्रयोग के अवसर प्रदान करना।
(१४) वैयक्तिक शिक्षा प्रदान करना।

प्रश्नो का वर्गीकरण—मानसिक प्रक्रियाओ के आधार के अनुसार हम प्रश्नो का अधोलिखित रूप से वर्गीकरण कर सकते हैं। इस प्रकार के प्रश्नो के द्वारा मानसिक प्रक्रियाएँ उत्तर देते समय उत्तेजित एवं प्रखर होती हैं :

(१) स्मृत्यात्मक प्रश्न।
(२) तर्कात्मक प्रश्न।
(३) सूचनात्मक प्रश्न।
(४) परीक्षात्मक प्रश्न।
(५) तुलनात्मक प्रश्न।

(६) विचारात्मक प्रश्न।
(७) व्याख्यात्मक प्रश्न।
(८) निर्णयात्मक प्रश्न।
(९) विश्लेषणात्मक प्रश्न।

शिक्षण प्रक्रिया के आधार पर प्रश्नो को अधोलिखित वर्गों मे विभाजित किया जा सकता है :

(अ) प्रस्तावनात्मक प्रश्न।
(ब) विकासात्मक प्रश्न।
(स) पुनर्वृत्यात्मक प्रश्न।

अर्थशास्त्र-शिक्षण में प्रयुक्त होने वाले प्रश्नों के प्रकार एवं लक्षण

(अ) **प्रस्तावनात्मक प्रश्न**—ये प्रश्न छात्रो के नवीन ज्ञान को पूर्व ज्ञान से सम्बन्धित करने की दृष्टि से पूछे जाते हैं। दूसरे शब्दो मे कह सकते हैं कि इनका मुख्य ध्येय छात्रो के पूर्व ज्ञान की परीक्षा लेना होता है। उदाहरणार्थ—'उत्पत्ति एव उसके ढग' नामक प्रकरण मे प्रस्तावनात्मक प्रश्न इस प्रकार पूछे जा सकते हैं :

(१) मनुष्य की मौलिक आवश्यकताएँ कौन-कौन सी हैं ? (रोटी, कपडा मकान आदि)

(२) इन आवश्यकताओ की पूर्ति किस साधन के द्वारा की जाती है ? (धन)

(३) किसान धन किस प्रकार कमाता है ? (अनाज उत्पन्न करके)

(ब) **विकासात्मक प्रश्न**—इस प्रकार के प्रश्नो की सहायता से प्रस्तावित पाठ को विकसित किया जाता है। उपर्युक्त प्रस्तावित प्रकरण इस प्रकार के प्रश्नो द्वारा विकसित किया जा सकता है :

(१) कुम्हार मिट्टी कहाँ से प्राप्त करता है ? (गड्ढो से)

(२) मिट्टी किसकी देन है ? (प्रकृति की)

(३) कुम्हार मिट्टी से क्या बनाता है ? (बर्तन)

(४) कुम्हार ने मिट्टी से बर्तन बनाने मे क्या किया ? (मिट्टी का रूप परिवर्तित किया)

(५) इस परिवर्तित स्वरूप से पहिले हमारे लिए मिट्टी की उपयोगिता क्या थी ? (कुछ नही)

(६) बर्तन बनाने से मिट्टी की उपयोगिता पर क्या प्रभाव पडा ? (उपयोगिता मे वृद्धि)

(७) कुम्हार ने इसमे किस नवीन पदार्थ की उत्पत्ति की ? (कुछ नही)

(८) लकडी किसकी देन है ? (प्रकृति की)

(९) बढ़ई लकडी की मेज किस प्रकार बनाता है ?

(१०) बढई ने इसमे किस नवीन पदार्थ की उत्पत्ति की है ?

(११) बढई ने लकडी की मेज बनाकर क्या किया ?

(१२) इससे आप किस निष्कर्ष पर पहुँचते हो ? (मनुष्य कोई नवीन पदार्थ नही बना सकता वरन् वह केवल विद्यमान पदार्थ की उपयोगिता मे वृद्धि कर सकता है)

अध्यापक अपने कथन के द्वारा यह बताएगा कि अर्थशास्त्र मे इसी उपयोगिता वृद्धि को 'उत्पत्ति' कहते हैं।

(स) **विचारात्मक या विचारोत्तेजक प्रश्न**—इन प्रश्नो के द्वारा छात्रो के मस्तिष्क को विचारने के लिए क्रियाशील बनाया जाता है। 'उत्पत्ति तथा उसके ढग' नामक प्रकरण मे अधोलिखित विचारात्मक प्रश्न पूछे जा सकते हैं :

(१) चमार चमडे की उपयोगिता कैसे बढाता है ?

(२) बढई लकडी की उपयोगिता किस प्रकार बढाता है ?

(द) **पुनर्वृत्यात्मक प्रश्न**—ऐसे प्रश्न पाठ की आवृत्ति मे सहायक सिद्ध होते हैं। ऐसे प्रश्नो को पाठ की प्रत्येक अन्विति के पश्चात् पूछा जाता है। इनके द्वारा पाठ के प्रमुख तथ्यो को दोहराया जाता है। दूसरे इनके द्वारा छात्रो को पाठ की मुख्य बातो को समझने एव आत्मसात् करने का अवसर प्रदान किया जाता है। उदाहरण के लिए, 'विनिमय के रूपो' की विवेचना के उपरान्त अधोलिखित प्रश्न किए जा सकते हैं

(१) विनिमय से तुम क्या अर्थ समझते हो ?

(२) वस्तु-विनिमय मे मनुष्य का क्या क्या कठिनाइयां उठानी पडती थी ?

(३) इन कठिनाइयो को मनुष्य ने किस प्रकार दूर किया ?

(४) रुपये के प्रचलन से मनुष्य वस्तुएँ किस प्रकार बदलते हैं ?

(य) **परीक्षात्मक या बोध प्रश्न**—इनके द्वारा छात्रों के अर्जित ज्ञान की परीक्षा ली जाती है। इनका ध्येय यह जानना होता है कि बालको ने पठित वस्तु को किस हद तक आत्मसात् कर लिया है। उदाहरण के लिए निकृष्ट-मुद्रा परिचलन के नियम की विवेचना करने के उपरान्त शिक्षक इस प्रकार क प्रश्न पूछ सकता है .

(१) निकृष्ट मुद्रा परिचलन नियम किसने प्रतिपादित किया ?

(२) इस नियम का क्या अभिप्राय है ?

(३) यह नियम किन-किन दशाओ मे लागू होता है ?

(४) इस नियम की क्या-क्या सीमाएँ हैं ?

(र) **समस्यात्मक प्रश्न**—इस प्रकार के प्रश्न पाठ के प्रारम्भ या अन्त मे पूछे जा सकते हैं। प्रारम्भ मे इस प्रकार के प्रश्नो द्वारा छात्रो के समक्ष एक

समस्या उत्पन्न कर दी जाती है जिससे बालको का मस्तिष्क उसके समाधान के लिए उत्तेजित हो जाता है। उदाहरणार्थ —'कारखानो का स्थानीयकरण क्यो होता है ?' भारत मे कृषि की हीन दशा क्यो है ? आदि।

प्रश्न रीति में ध्यान देने योग्य बातें

(१) प्रश्न निश्चित, सरल एव सक्षिप्त होने चाहिए।

(२) साधारण एव सरल भाषा मे स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किए जायँ।

(३) प्रश्नो की भाषा बालक के मानसिक स्तर के अनुकूल हो।

(४) प्रश्न का एक मुख्य अभिप्राय हो।

(५) प्रश्न समस्त छात्रो को चिन्तन करने के लिए प्रोत्साहित करे, चाहे वह एक से ही पूछा जाय।

(६) प्रश्न एक केन्द्रीय विचार से सम्बन्धित हो।

(७) अर्थशास्त्र-शिक्षण मे प्रत्यक्ष प्रश्न जिनमे उत्तर 'हाँ' या 'नही' मे आता हो, प्रतिध्वन्यात्मक तथा अनिर्दिष्टात्मक प्रश्नो को प्रयुक्त नही करना चाहिए। उदाहरणार्थ—

क्या डाक्टर को अर्थशास्त्र की दृष्टि से एक उत्पादक कहा जा सकता है ?

आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए धन का उपयोग ही अर्थशास्त्र मे उपभोग कहलाता है। उपभोग किसे कहते हैं ?

(८) शिक्षक का प्रश्न करने का ढग ऐसा हो कि वह परिणामो की प्रभावोत्पादकता पर प्रत्यक्ष रूप से प्रकाश डाले।

(९) प्रश्न पर्याप्त आत्मविश्वास के साथ पूछे जाने चाहिए।

(१०) प्रश्नो को दुहराना दोषपूर्ण है।

(११) प्रश्न सजीवता, स्फूर्ति एव तारतम्य के साथ किए जाएँ।

(१२) प्रश्नो का वितरण समस्त कक्षा मे किया जाय जिससे छात्रो का व्यक्तिगत रूप से सहयोग प्राप्त किया जा सके। शिक्षक इस बात का भी ध्यान रखे कि उस छात्र से भी प्रश्न पूछे जाएँ जो कार्य मे अरुचि दिखा रहा है।

(१३) प्रश्न करने के उपरान्त बालको को सोचने के लिए समय दिया जाय।

(१४) शिक्षक प्रथमत समस्त कक्षा के समक्ष अपना प्रश्न रखे और उसके पश्चात् किसी भी बालक को उसका उत्तर देने के लिए सम्बोधित करे।

(२) **अभ्यास रीति**—यह रीति थार्नडाइक के अभ्यास के नियम पर आधारित है। इस नियम के अनुसार बालक किसी तथ्य की जितनी बार आवृत्ति करेगा वह उतना ही उसके मस्तिष्क मे स्थायी बनेगा। इस प्रकार अभ्यास शब्द का तात्पर्य पुनर्वृत्यात्मक या आवृत्तिमूलक कार्यों से है, जिनमे

बिना किसी प्रयास के बालक अभिव्यक्ति करता है। एम० पी० मुफ़ात (M. P. Moffatt) का कहना है कि अभ्यास के द्वारा बालकों में आदतों का निर्माण, कुशलताओं की प्राप्ति तथा उनको किसी परीक्षा के लिए तत्पर बनाया जा सकता है। अभ्यास रीति का अर्थशास्त्र शिक्षा में कितनी सीमा तक प्रयोग किया जा सकता है यह पाठ्य-सामग्री के ऊपर निर्भर है। जितने उस पाठ्य-सामग्री में स्मरण तथा ग्रहण करने के लिए अवसर होंगे, उतनी ही सीमा तक इस रीति का उपयोग किया जा सकता है। अर्थशास्त्र में हम इस रीति का प्रयोग किसी प्रकरण की रूपरेखा को ग्रहण करने, किसी प्रश्न के उत्तर को स्मरण करने रेखाचित्र, मानचित्र (जिनमें विभिन्न फसलें, मार्ग, कारखाने आदि प्रस्तुत किए जाएँ) रिपोर्ट आदि तैयार करने के लिए कर सकते हैं। आर्थिक पदों की परिभाषा एवं नियमों को समझने एवं ग्रहण करने के लिए भी इस रीति का सफलतापूर्वक प्रयोग किया जा सकता है।

(३) **कहानी-कथन-रीति**—इसमें कहानी कहना, बातचीत करना, भाषण देना आदि बातों का समावेश होता है, क्योंकि इन सबमें वाणी का उपयोग करना पड़ता है। अर्थशास्त्र-शिक्षण में इस रीति का प्रचलन बहुत कम है। इसका मुख्य कारण शिक्षकों के द्वारा इसकी उपयोगिता को न समझना है। परन्तु यह रीति छात्रों की कल्पना-प्रियता एवं कौतूहल की भावना को तृप्त करने में बहुत सहायक होती है। अर्थशास्त्र-शिक्षण में इस रीति का उपयोग लाभकारी होगा। अर्थशास्त्र का शिक्षक इस रीति का उपयोग ग्रामीण समस्याओं, भारतीय जीवन के रहन-सहन के स्तर तथा उपयोगिता ह्रास नियम के अध्यापन में कर सकता है। इस रीति के द्वारा वह बालकों के ध्यान को अपनी ओर आकर्षित करने में सफल हो सकता है। अफलातून ने इस रीति को बालकों की शिक्षा के लिए बहुत ही उपयोगी बताया था। यह रीति मनोवैज्ञानिक है, क्योंकि कल्पना की उड़ान में बालकों की बहुत-सी नैसर्गिक प्रवृत्तियों का अनजान में ही विकास किया जा सकता है। इस रीति का उपयोग करते समय अर्थ-शास्त्र के शिक्षक को अधोलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए :

(१) कहानी कहने का ढङ्ग रुचिकर, स्वाभाविक तथा भावपूर्ण होना चाहिए अर्थात् उसमें कृत्रिमता नहीं आनी चाहिए।

(२) अध्यापक जिस कहानी को अपने छात्रों को सुनाना चाहता है उसकी पाठ्य-वस्तु पर उसका पूर्ण अधिकार हो। इसके अतिरिक्त उसे वह कहानी छात्रों के समक्ष मौखिक रूप से प्रस्तुत करनी चाहिए। वह उसे पढ़कर न सुनाए।

(३) कहानी की भाषा, शैली तथा विषय-वस्तु बालकों के मानसिक स्तर, रुचि, अवस्था एवं स्वाभाविक प्रवृत्तियों के अनुसार होनी चाहिए।

(४) कहानी की विषय-वस्तु को छात्रो के आर्थिक जीवन से सम्बन्धित किया जाय।

(५) कहानी सुनाते समय शिक्षक को अपने मुख्य ध्येय को नहीं भुलाना चाहिए।

(६) कहानी को क्रमानुसार सुनाया जाय।

(७) शिक्षक को कहानी सुनाने मे छात्रो की सहायता लेनी चाहिए। उनको सतर्क तथा सक्रिय बनाए रखने के तथा अपनी विषय-वस्तु को बोधगम्य बनाने के लिए प्रश्नो का भी उपयोग करते रहना चाहिए। इस प्रकार छात्रो की कल्पना एव चिन्तन-शक्तियो का विकास किया जा सकता है।

(४) कार्य-निर्धारण रीति—शिक्षण-कला मे कार्य-निर्धारण एक प्रयोगात्मक रीति है। सामान्यत इसका प्रयोग पाठ की समाप्ति के उपरान्त किया जाता है। परन्तु इसका प्रयोग पाठ के आदि मे भी किया जा सकता है। कार्य-निर्धारण दो प्रकार का होता है। प्रथम, परम्परागत कार्य-निर्धारण, जो पाठ्य-पुस्तको पर आधारित होता है तथा दूसरा आधुनिक कार्य-निर्धारण जो छात्रो की रुचियो, आवश्यकताओ तथा योग्यताओ पर आधारित होता है। दुर्भाग्यवश भारत म प्रथम प्रकार के कार्य-निर्धारण को ही अपनाया जाता है। इसीलिए इस रीति की कटु आलोचना की गई है। आलोचको का कथन है कि इसके द्वारा बालको के स्वाभाविक मानसिक विकास मे बाधा पहुँचती है। इस कारण उनका जीवन नीरस व शुष्क बन जाता है। इसके द्वारा छात्रो के स्वास्थ्य को भी हानि पहुँचाई जाती है। परन्तु ये दोष कार्य-निर्धारण रीति के नही हैं वरन् उसके प्रयोग के हैं। यदि कार्य-निर्धारण बालको की रुचियो, आवश्यकताओ एव प्रवृत्तियो के अनुसार किया जाय तो ये दोष दूर हो सकते हैं। अर्थशास्त्र-शिक्षण मे द्वितीय प्रकार के कार्य-निर्धारण का ही उपयोग किया जाना चाहिए। आधुनिक कार्य-निर्धारण मे छात्रो को योजनाओ, समस्याओं, इकाइयो की सूची में से अपनी योग्यता, रुचि तथा आवश्यकता के अनुसार उन्हें चुनना पडता है। इनका विकेन्द्रीकरण छोटे-छोटे प्रकरणो, क्रियाओ तथा मुख्य प्रतिवदन कार्य-निर्धारणो के रूप मे किया जा सकता है। एम० पी० मुफात का कथन है कि—"आज का कार्य-निर्धारण एक ऐसी क्रिया या कार्य है जिससे कार्य करने के सम्बन्ध मे बालक या बालको के वर्ग तथा शिक्षक मे समझौता रहता है।"[1] उसने आग लिखा है कि कार्य-निर्धारण के लिए अभ्यास-

1. "To-day's assignment might be defined as an agreement between the pupil (or group) and the teacher of work to be done." —M. P. Moffatt.

पुस्तिकाएँ, गाइडशीट, स्क्रैप बुक्स तथा रूपरेखाओ के बनाने के कार्य दिए जाएँ। यदि पाठ्य-पुस्तको के आधार पर ही कार्य-निर्धारण किया जाय तो वह ऐसा होना चाहिए जिससे छात्रो को विचार करने के लिए अवसर प्रदान किए जाएँ। इस रीति के द्वारा अर्थशास्त्र का शिक्षक सीखने की प्रक्रिया को प्रभावोत्पादक बना सकता है। अर्थशास्त्र मे आधुनिक कार्य-निर्धारण रीति का उपयोग निम्नलिखित कार्य देकर किया जा सकता है :

योजनाएँ—(१) हमारा भोजन
(२) हमारा ग्राम
(३) सहकारी सघ की दुकान
(४) सहकारी बैंक
(५) सिंचाई के साधन

समस्याएँ—(१) मानव ने आर्थिक उन्नति किस प्रकार की है ?
(२) भारत मे खाद्यान्न का अभाव क्यो है ?
(३) भारतीय किसान निर्धन क्यो है ?
(४) भारतीय श्रमिको की हीन दशा क्या है ?
(५) भारत मे रहन-सहन का स्तर निम्न क्यो है ?

(५) **कथन-रीति**—कथन के द्वारा बालक पर्याप्त मात्रा मे ज्ञान अर्जित करता है। बालको की रुचियो तथा उनकी सीखने की प्रक्रिया को इस रीति के द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है। कथन का मुख्य लक्ष्य छात्रो को किसी अप्रत्यक्ष वस्तु का ज्ञान प्रदान करना है। इस रीति के द्वारा वर्णित वस्तु या सामग्री को सरल, सुगम, स्पष्ट तथा सुबोध बनाया जा सकता है। प्रत्येक बात या तथ्य प्रश्नो द्वारा बालको मे नही निकलवाया जा सकता। अतः प्रश्नोत्तर रीति की पूर्ति 'कथन' द्वारा की जाती है। जब न प्रश्न पूछने से तथा न व्याख्या करने से, हमारा मन्तव्य सफल होता है तब उस समय कथन हमारी सहायता करता है। सामाजिक विषयो के शिक्षण मे इस रीति का प्रयोग बहुत लाभकारी सिद्ध हुआ है। अर्थशास्त्र के शिक्षक को इस रीति का कुशलता एवं सतर्कता के साथ प्रयोग करना चाहिए। अध्यापक को इस रीति का प्रयोग करते समय अधोलिखित बातो का ध्यान रखना चाहिए

(१) कथन बालको की आयु तथा मानसिक स्तर के अनुसार होना चाहिए तथा शिक्षक कथन करते समय उनके अवधान विस्तार का ध्यान रखे।

(२) कथन अधिक लम्बे न हो तथा शिक्षक को उनके बाहुल्य पर भी रोक लगानी चाहिए।

(३) कथन की भाषा तथा शैली छात्रो के मानसिक स्तर तथा आयु के अनुकूल होनी चाहिए।

(४) कथन करते समय शिक्षक को प्रश्नोत्तर रीति तथा सहायक सामग्रियो का भी उपयोग करना चाहिए।

(६) **अवलोकन-रीति**—निरीक्षण ज्ञानार्जन का वह सुबोध एव प्रभावशाली साधन है जिसके द्वारा बालक स्वय क्रियाशील रहकर किसी वस्तु या तथ्य का पता लगा सकता है। जो ज्ञान बालक अवलोकन द्वारा प्राप्त करता है, वह स्थायी होता है तथा उसके सम्पूर्ण ज्ञान का एक अंग बन जाता है। अर्थशास्त्र-शिक्षण मे इस रीति के प्रयोग से छात्रो के आर्थिक जीवन से सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है। इसमे छात्रो की अवलोकन, निर्णय, चिन्तन, आत्मबोधन तथा स्वतन्त्रतापूर्वक व्यजना शक्ति का विकास होता है। अर्थशास्त्र-शिक्षण मे इस रीति के उपयोग के लिए बहुत अवसर प्राप्त हैं। इसका उपयोग अधिक होना चाहिए। परन्तु दुर्भाग्यवश हमारे देश के शिक्षालयो मे इसका प्रयोग किञ्चित भी नही किया जाता। उद्योगो, मांग-पूर्ति के नियम, मूल्य-निर्धारण बाजार व बैंक-व्यवस्था आदि का ज्ञान इस रीति के प्रयोग से सरलतापूर्वक करा सकते हैं। अर्थशास्त्र के शिक्षक को इस रीति का प्रयोग करते समय अधोलिखित बातो पर ध्यान देना आवश्यक है

(१) निरीक्षण कराते समय शिक्षक छात्रो को स्वतन्त्रतापूर्वक निरीक्षण करने की आज्ञा दे दे, परन्तु साथ ही साथ उनका पथ-प्रदर्शन एव उनके कार्यों का निरीक्षण करता रहे।

(२) निरीक्षण के लिए जिस स्थिति का चयन किया जाय, उसका चयन बालको के मानसिक स्तर को ध्यान मे रखकर करना चाहिए।

(३) शिक्षक जिस उद्योग, या कारखाने या बाजार का छात्रो को निरीक्षण कराना चाहता है उनको दिखाने से पूर्व उसे उसका स्वय निरीक्षण कर लेना चाहिए।

(४) निरीक्षण के हेतु चयन की हुई परिस्थितियाँ छात्रो के आर्थिक जीवन से सम्बन्धित हो।

(५) निरीक्षण काल मे शिक्षक उनके प्रश्नो का भी उत्तर देता रहे तथा उनसे स्वय प्रश्न करता रहे। परन्तु प्रश्न ऐसे होने चाहिए जिनसे छात्रो को विषय-वस्तु के ज्ञानार्जन मे सहायता मिले तथा वे उसका पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकें।

(६) निरीक्षण करने के पश्चात् अध्यापक छात्रो के ज्ञान की परीक्षा ले तथा सम्बन्धित विषय पर एक छोटा सा वाद-विवाद करवा दे। तदुपरान्त उसे स्वय विषय की गहन, सूक्ष्म एव विस्तृत विवेचना करनी चाहिए। इसके पश्चात् छात्रो से उसके विषय मे लिखवाये।

(७) उदाहरण रीति —मौखिक शिक्षण मे इस रीति का विशेष महत्त्व है। उदाहरणो के द्वारा शिक्षक पाठ को रोचक तथा ग्राह्य बनाने मे समर्थ होता है। आधुनिक शिक्षा मे इन उदाहरणो पर अधिक बल दिया जा रहा है। इनके द्वारा छात्रो की रुचि एव ध्यान को आकृष्ट करने मे सहायता मिलती है। इनके प्रयोग से छात्रो का मानसिक विकास किया जा सकता है। इस कारण हमारी सरकार इनके ऊपर बहुत ध्यान दे रही है। हमारा केन्द्रीय शिक्षा-विभाग शिक्षालयो को विभिन्न प्रकार के प्रदर्शनात्मक उदाहरण प्रदान कर रहा है जिनके द्वारा पाठ्य वस्तु को रोचक एव बोधगम्य बनाया जा सकता है। इन उदाहरणो का अर्थशास्त्र शिक्षण मे ही महत्त्वपूर्ण स्थान नही है वरन् सभी विषयो मे है। उदाहरणो को अधोलिखित श्रेणियो मे विभक्त किया जा सकता है

(i) मौखिक उदाहरण (Oral Illustrations)

(ii) प्रदर्शनात्मक उदाहरण (Visual Illustrations)

(iii) लाक्षणिक उदाहरण (Symbolic Illustrations)

(i) मौखिक उदाहरण—इन उदाहरणो का उपयोग सूक्ष्म तथा सामान्य सिद्धान्तो की व्याख्या करने के लिए होता है। अर्थशास्त्र-शिक्षण मे इन उदाहरणो का प्रयोग जटिल नियमो एव विचारो के स्पष्टीकरण के लिए किया जाता है। शिक्षक को इनका उपयोग करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वे सरल एव ग्राह्य हो। उदाहरण छात्रो के व्यावहारिक जीवन से सम्बन्धित होने चाहिए तथा पाठ मे इनका बाहुल्य भी नही होना चाहिए।

(ii) प्रदर्शनात्मक उदाहरण—इनका उपयोग बालको की कल्पना-शक्ति को विकसित करने के लिए किया जाता है। इनका अर्थशास्त्र शिक्षण मे महत्त्वपूर्ण स्थान है क्योकि ये बालको के अवधान को प्रत्यक्ष रूप से आकर्षित करते हैं। इन उदाहरणो मे विषय-वस्तु का स्थूल रूप प्रतिपादित किया जाता है। इनके द्वारा अर्थशास्त्र की प्रयोगशाला या विशेष कक्ष मे प्रभावोत्पादक एव उपयुक्त वातावरण स्थापित किया जा सकता है। अर्थशास्त्र-शिक्षण मे अधोलिखित प्रदर्शनात्मक उदाहरण प्रयोग मे लाये जा सकते हैं

(१) चित्र (Pictures)
(२) प्रतिरूप (Models)
(३) रेखाकृति (Diagrams)
(४) मानचित्र (Maps)
(५) चार्ट (Chart)
(६) ग्राफ (Graph)
(७) रेखाचित्र (Sketches)

(iii) लाक्षणिक उदाहरण—इनके अन्तर्गत वे उदाहरण आते हैं जो अर्थशास्त्र के तथ्यों को समझाने के लिए शिक्षक द्वारा विभिन्न ढाँचों के रूप में प्रयोग में लाये जाते हैं। ये सांकेतिक होते हैं, क्योंकि ये तथ्यों के सम्बन्ध को प्रकट करते हैं।

उपर्युक्त उदाहरणों का विस्तृत विवेचन पृथक रूप से अगले अध्याय में किया जायगा।

(८) नाटकीय या अभिनय रीति—इस रीति के प्रयोग से छात्रों की सृजनात्मक शक्तियों का विकास किया जाता है। शिक्षण में इस रीति का प्रयोग आधुनिकतम है। फिर भी अर्थशास्त्र का शिक्षक कुछ पाठों को इस रीति की सहायता से पढ़ा सकता है। उदाहरणार्थ—बाजार, ग्रामीण-समस्याएँ, विनिमय आदि। इसके द्वारा छात्रों को स्वक्रिया द्वारा शिक्षा प्राप्त करने के लिए अनेक अवसर प्रदान किये जाते हैं। इस रीति के प्रयोग से पाठ की सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवेचना हो जाती है। इसमें छात्र क्रियाशील रहते हैं। यह बालकों की इन्द्रियों को शिक्षित एवं प्रफुल्लित करती है। इसके द्वारा कर्णेन्द्रिय, नेत्रों तथा हाथों को भी शिक्षित किया जाता है। इसके अतिरिक्त इसके द्वारा छात्रों में विषय-ग्राह्यता, आत्मविश्वास तथा आत्माभिव्यंजना शक्ति विकसित की जाती है। इसके द्वारा उनकी झिझक तथा लज्जाशील प्रवृत्ति को कम किया जाता है। इसके अतिरिक्त बालक बोलने की कला (Art of Speaking) भी सीख लेते हैं।

(९) परीक्षा रीति—यह रीति पाठ्य-क्रम के समस्त विषयों के शिक्षण में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। इसके द्वारा बालकों के अर्जित ज्ञान की परीक्षा ली जाती है कि उसने पठित सामग्री को किस सीमा तक आत्मसात् कर लिया है। शिक्षक इसके प्रयोग में लिखित तथा मौखिक प्रश्नों की सहायता लेता है। इसका सबसे प्रमुख लाभ यह होता है कि शिक्षक को अपने पाठ की सफलता का ज्ञान हो जाता है तथा छात्र भी अपनी कमियों की जानकारी प्राप्त कर लेता है। इस रीति को प्रयोग में लाते समय अर्थशास्त्र के शिक्षक को निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए :

(१) प्रश्नों में अधिकाधिक वस्तुनिष्ठता लानी चाहिए।

(२) प्रश्न सरल भाषा में प्रस्तुत किये जाने चाहिए। इसके अतिरिक्त प्रश्न संक्षिप्त, नप-तुले एवं नुकीले हों।

(३) प्रश्न प्रस्तावित पाठों के अधिकाधिक क्षेत्र पर आधारित होने चाहिए अर्थात् कुछ मुख्य पाठों पर ही आधारित नहीं हों वरन् उनका क्षेत्र विस्तृत हो।

(४) प्रश्नों का अंकन निष्पक्ष भाव से किया जाना चाहिए अर्थात् उसमें पक्षपात के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए।

(५) छात्रो की कठिनाइयो एव अशुद्धियो को दूर करना चाहिए। इसके लिए शिक्षक को उनकी पुस्तिकाओ मे टिप्पणी लिख देनी चाहिए।

प्रश्न

1 What are the special techniques and aids to be used in *teaching Economics ? Illustrate* (*B T, 1956, 58*)
अथशास्त्र शिक्षण मे कौन-सी विशेष रीतियो एव सहायक सामग्रियो का प्रयोग किया जाता है ? स्पष्ट कीजिए।
(सकेत—अथशास्त्र-शिक्षण की सहायक सामग्रियो के लिए अध्याय ६ को देखना होगा।)

2 What would be your aids and techniques for the teaching of Economics at the High School stage so as to make the *subject more realistic and interesting ?*
(A U, B T, 1959, 60)
आप हाईस्कूल स्तर पर अथशास्त्र को पढाने के लिए किन रीतियो एव सहायक सामग्रियो का प्रयोग करेंगे जिससे विषय अधिक वास्तविक एव रोचक हो जाय।

अध्याय ६

अर्थशास्त्र-शिक्षण में सहायक सामग्री
(Aids to the Teaching of Economics)

"The teacher must strive to Economics realistic, vital and interesting through variety in methods and procedures through the intelligent adaptation to the interests and abilities of the class, and through the planned and appropriate use of teaching aids"

—*M P Moffatt* (Social Studies Instruction')

एक समय था जबकि शिक्षालय एक ऐसी सस्था थी जिसमे शिक्षण-काय स्वय शिक्षक द्वारा मौखिक रूप से किया जाता था। उसको किसी भी अन्य साधन से इस कार्य मे सहायता नहीं मिलती थी और बालक निष्क्रिय श्रोता बना बैठा रहता था। वतमान शिक्षा शास्त्री इस विचारधारा के विरोधी हैं। उनका मत है कि बालक निष्क्रिय रहकर ज्ञान की प्राप्ति नही कर सकता, इसलिए उसे सदैव सक्रिय बनाये रखने की चेष्टा करनी चाहिए। ज्ञानेन्द्रियाँ ज्ञानाजन के मुख्य द्वार हैं। अत इन द्वारो को सक्रिय रखने के हेतु विभिन पद्धतियाँ अपनाई जाती हैं जिनके द्वारा बालक स्वक्रिया करके सीख सकें। पद्धति वह सरय मार्ग है जिसके द्वारा मानव अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचने मे समर्थ होता है। पद्धति को सफल तथा रोचक बनाने के लिए हम विभिन्न साधनो का प्रयोग करते हैं। ये विभिन्न साधन ही शिक्षण की सहायक सामग्री कहलाते हैं। सहायक सामग्री शिक्षा के वे साधन हैं जिनके द्वारा छात्रो के निमित्त दुर्बोध पाठय वस्तु को सरल, स्पष्ट, सुबोध एव रोचक बनाया जाता है। इसके अतिरिक्त इन साधनो के प्रयोग से छात्रो के अवधान को पाठय वस्तु की ओर आकर्षित करके बालक को क्रियाशील बनाया जाता है, जिससे वह सक्रिय रहकर ज्ञान की प्राप्ति कर सके। अर्थशास्त्र के शिक्षक के पास उन

साधनो का भण्डार है जिनके प्रयोग से वह अपनी विषय-वस्तु को सरल तथा सुबोध बना सकता है और विषय मे अपने छात्रो की रुचि को जाग्रत कर सकता है। इन साधनो मे उदाहरण एक महत्त्वपूर्ण साधन है। उदाहरण का तात्पर्य है—प्रकाश डालना और शिक्षण-कार्य मे उदाहरण का अर्थ बालको के दुर्बोध एव कठिन बिन्दुओ का स्पष्टीकरण करना है। अच्छे उदाहरण दुरूह तथा जटिल कथन को सरल, सजीव, बोधगम्य तथा सरस बना देते हैं, क्योकि ये इन्द्रियो को सम्बोधित करते हैं और इन्द्रियो द्वारा ग्रहण किया हुआ ज्ञान स्थायी होता है। इस प्रकार सहायक-सामग्री का अर्थ देखने के उपरान्त हमारे समक्ष यह प्रश्न उठता है कि अर्थशास्त्र-शिक्षण मे प्रयुक्त की जाने वाली सहायक-सामग्री कौन-कौनसी है ? इसको हम सुविधानुसार अधोलिखित भागो मे विभाजित कर सकते हैं

(अ) परम्परागत सामग्री (Traditional Aids)—श्यामपट, तालिकाएँ, पत्र-पत्रिकाएँ आदि।

(ब) प्रदर्शनात्मक सामग्री (Visual Aids)—चित्र, मानचित्र, ग्राफ, रेखाचित्र तथा रेखाकृति, चार्ट तथा मॉडल आदि।

(स) श्रव्य सामग्री (Audial Aids)—रेडियो, टेप-रिकार्डर आदि।

(द) श्रव्य-दृश्य सामग्री (Audio Visual Aids)—समाचार सम्बन्धी फ़िल्म, चल-चित्र आदि।

(य) अन्य सामग्री (Other Aids)—पर्यटन या भ्रमण आदि।

(अ) परम्परागत सामग्री

(१) श्यामपट—यह शिक्षण का एक महत्त्वपूर्ण उपादान है। इसके द्वारा अर्थशास्त्र का शिक्षण छात्रो की दो इन्द्रियो को एक साथ क्रियाशील रखता है, जिससे बालक ज्ञान ग्रहण करने मे सफल होते हैं और कक्षा मे सक्रिय बने रहते हैं। अर्थशास्त्र का शिक्षक इसका प्रयोग अधोलिखित बातो के लिए कर सकता है :

(१) आर्थिक नियमो व सिद्धान्तो को अङ्कित करने के लिए।

(२) आर्थिक पदो की परिभाषा देने के लिए।

(३) योजना की रूपरेखा लिखने के लिए।

(४) आर्थिक नियमो के स्पष्टीकरण के लिए रेखाचित्र तथा रेखाकृतियो की रचना के लिए।

(५) साराश देने के लिए।

(६) मुख्य निर्देश देने के लिए।

(७) चार्ट, ग्राफ आदि प्रदर्शित करने के लिए।
(८) महत्त्वपूर्ण प्रश्न पूछने के लिए।
(९) गृहकार्य देने के लिए।
(१०) किसी वस्तु या तथ्य का सम्बन्ध स्पष्ट करने के लिए।

अर्थशास्त्र के शिक्षक को श्यामपट का प्रयोग करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए

(१) श्यामपट पर सुन्दर, आकर्षक एवं एकसा लिखना चाहिए। इसके अतिरिक्त जो भी बात वह श्यामपट पर लिखे वह क्रम से होनी चाहिए, जिससे छात्रों में भी क्रम से लिखने की आदत का निर्माण हो जाय।

(२) श्यामपट पर लिखे शब्दों का आकार ऐसा हो जो समस्त कक्षा को सरलता से दिखाई दे जाय।

(३) श्यापट पर खींचे गए रेखाचित्र व रेखाकृतियाँ स्पष्ट एवं शुद्ध हों। इसका अर्थ यह नहीं है कि अर्थशास्त्र का शिक्षक कला का ज्ञाता हो। परन्तु उसे यह ध्यान रखना चाहिए कि जो भी रेखाकृतियाँ श्यामपट पर खींची जायँ वे अनुमानतः शुद्ध हों तथा उनको खींचने में अधिक समय भी नहीं लगाया जाय। इससे विनय की समस्या उत्पन्न होने की सम्भावना रहती है।

(४) श्यामपट पर सारांश संक्षिप्त रूप में लिखना चाहिए।

(२) **तालिकाएँ** (Tables)—अर्थशास्त्र शिक्षण में तालिकाओं का महत्त्व इस कारण है कि प्रायः ये अनेक नियमों व सिद्धान्तों के प्रतिपादन एवं स्पष्टीकरण में आधार का काय करती हैं। विभिन्न रेखाचित्रों तथा ग्राफों के खींचने में तालिकाओं की सहायता ली जाती है। इनमें विभिन्न वस्तुओं के, परिस्थिति-विशेष में मात्रा-सम्बन्धी आँकड़े दिए हुए होते हैं। तालिकाओं का प्रयोग तुलनात्मक अध्ययन में बहुत सहायक होता है। उदाहरणार्थ, उपयोगिता ह्रास नियम को अधोलिखित तालिका की सहायता से स्पष्ट किया जा सकता है:

रोटी की इकाइयाँ	उपयोगिता की इकाइयाँ	कुल उपयोगिता
१	२०	२०
२	१५	३५
३	११	४६
४	५	५२
५	१	५३

(३) **पत्र-पत्रिकाएँ**—अर्थशास्त्र-शिक्षण मे समाचार पत्र तथा जनरल और पीरियोडिकल्स (Journal & Periodicals) का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रगतिशील शिक्षा ने इनके महत्त्व को और अधिक बढा दिया है। अर्थशास्त्र की ज्ञान प्राप्ति के लिए ये बहुत महत्त्वपूर्ण उपादान हैं। इनसे छात्रो को तत्कालीन घटनाओ एव सूचनाओ की प्राप्ति होती है। ये पाठ्य-पुस्तको मे सचित ज्ञानराशि को नवीन एव पूर्ण बनाने का कार्य करती हैं। पत्रिकाओ से हमे आर्थिक क्षेत्र मे हुए अन्वेषण एव अनुसन्धान कार्यो के विषय मे सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। इसके अतिरिक्त ये छात्रो को विभिन्न समस्याओ का आलोचनात्मक अध्ययन कराती हैं। इनके प्रयोग से छात्रो के मानसिक अन्तरिक्ष को व्यापक एव वैज्ञानिक बनाया जाता है। सरकार की विभिन्न आर्थिक योजनाओ का ज्ञान हमे इनके द्वारा ही प्राप्त होता है। कॉलिज स्तर के लिए Eastern Economics, Modern Review आदि पत्रिकाओ का प्रयोग बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। हाई स्कूल स्तर पर राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओ का प्रयोग किया जाना चाहिए। उदाहरणार्थ—ग्राम पचायत, सहकारिता आदि।

(ब) प्रदर्शनात्मक सामग्री

(१) **चित्र**—अर्थशास्त्र-शिक्षण मे चित्र भी बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। अर्थशास्त्र का शिक्षक इनका उपयोग बालको को वास्तविकता का ज्ञान देने, रुचि को जाग्रत करने कल्पना-शक्ति को उत्तेजित करने तथा ग्राह्य शक्ति को तीव्र बनाने के लिए कर सकता है। इस सामग्री के प्रयोग से जटिल बिन्दुओ तथा प्रकरणो की शिक्षा का सरल एव सुबोध बनाया जा सकता है। विभिन्न उद्योगो की कार्य विधि, स्थानीयकरण के निर्धारक तत्त्वो, आर्थिक एव सामाजिक विषमताओ, आदि का ज्ञान चित्रो के द्वारा स्पष्टता एव सरलता के साथ दिया जा सकता है। अर्थशास्त्र के शिक्षक को चित्रो का प्रयोग करते समय अधोलिखित बातो का ध्यान रखना चाहिए

(१) चित्र कक्षा के आकार के अनुपात मे बनाए जायें।

(२) चित्र जादूगर के समान नही प्रदर्शित किए जायें बल्कि अध्यापक उन पर प्रश्न करे तथा छात्रो को उन्हे देखने का पर्याप्त अवसर प्रदान करे।

(३) चित्रो का उपयोग उपयुक्त स्थान तथा समय पर ही होना चाहिए। अर्थशास्त्र के प्रत्येक पाठ के शिक्षण मे चित्रो का प्रयोग उपयुक्त नही है। उसी पाठ मे इनका उपयोग किया जाय जहाँ इनकी आवश्यकता हो।

(४) चित्र बालको के आर्थिक जीवन से सम्बन्धित होने चाहिए।

(५) चित्र मे शुद्धता, सजीवता, स्पष्टता एवं सुन्दरता का होना आवश्यक है।

(६) चित्र प्रमाणयुक्त होना चाहिए।

(७) अर्थशास्त्र शिक्षण मे चित्रो का प्रयोग बहुलता के साथ नही किया जाना चाहिए।

(८) इनका उपयोग निम्न कक्षाओ तक ही सीमित रहना चाहिए।

(९) पुनरावृत्ति की अवस्था पर विकासात्मक चित्र नही रहने चाहिए।

(२) **मानचित्र**—अर्थशास्त्र-शिक्षण मे यह उपकरण भी परम उपयोगी है। यह उपकरण आर्थिक भूगोल के शिक्षण मे बहुत ही सहायक होता है। इनके उपयोग के लिए आर्थिक भूगोल मे बहुत अवसर हैं। शिक्षक इनके प्रयोग से भारत की विभिन्न वनस्पतियो, प्राकृतिक विभागो, मिट्टी, सिंचाई के साधनो, विभिन्न उपजो, खनिज पदार्थो, शक्ति के साधनो, उद्योग धन्धो, जनसख्या का घनत्व, यातायात के साधन तथा प्रसिद्ध एव महत्वपूर्ण स्थानो तथा बन्दरगाहो का ज्ञान सरलता से करा सकता है। इनके प्रयोग से ये तथ्य सरल एव सुबोध बना दिए जाते हैं। अत अर्थशास्त्र के शिक्षक को मानचित्रो के निर्माण व चयन मे सतर्कता के साथ कार्य करना चाहिए। इनके प्रयोग एव चयन मे निम्नलिखित बातो का ध्यान रखना आवश्यक है

(१) मानचित्रो का प्रयोग करते समय शिक्षक को उन्ही अगो पर ध्यान देना चाहिये जोकि पाठ्य वस्तु से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित हैं। उदाहरणार्थ—यदि शिक्षक भारत के वन प्रदेशो के विषय मे अध्यापन कर रहा है तो मानचित्र मे उन्ही प्रदेशो को दिखाया जाय तथा छात्रो का ध्यान उन्हीं पर केन्द्रित कराया जाय। दूसरे, यदि वह भारत के शक्ति के साधनो के विषय मे पढा रहा है तो मानचित्र मे शक्ति के साधनो का वितरण दिखाया जाय।

(२) विभिन्न स्थानो, उपजो आदि को मानचित्र मे केन्द्रित करते समय उनकी शुद्धता एव विश्वसनीयता का पूर्णतया ध्यान रखना चाहिए। इसके अतिरिक्त पूर्व निर्मित मानचित्रो की वैधता एव प्रामाणिकता की जाँच कर लेना भी अनिवार्य है।

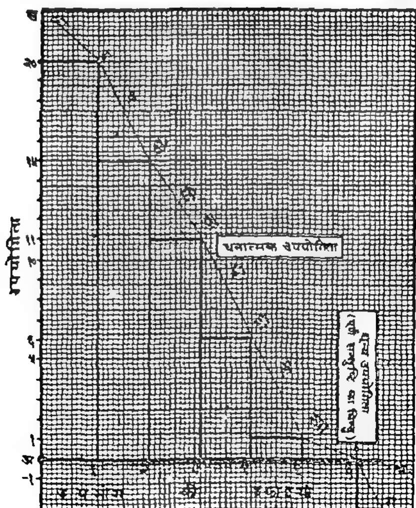
(३) मानचित्र के पैमानो का निश्चित होना अनिवार्य है।

(४) मानचित्र मे दूरी को स्पष्ट करने मे सतर्कता बरतनी चाहिए।

(५) शिक्षक को मानचित्रो के निर्माण की प्रक्रिया का ज्ञान होना चाहिए जिससे वह अपने छात्रो की उनके निर्माण मे सहायता कर सके।

(६) यदि अर्थशास्त्र का शिक्षक मानचित्रो के उपयोग का वास्तविक लाभ उठाना चाहता है तो उसको बने बनाये या मुद्रित मानचित्रो का उपयोग कम करना चाहिए।

(३) ग्राफ—ग्राफ वह प्रदर्शनात्मक उपकरण है जिसके द्वारा उन संख्यात्मक स्थितियों को दृश्यात्मक बनाकर छात्रों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है, जो शब्दों या मानचित्रों के द्वारा व्यक्त नहीं की जा सकती। उदाहरणार्थ—भारत की गत दस वर्ष की गन्ने की उपज को हम ग्राफ में चिन्हित कर सकते हैं। अर्थशास्त्र-शिक्षण में इस उपादान का प्रयोग बहुत ही लाभप्रद है। इसके प्रयोग से विषय की दुर्बोधता को दूर किया जा सकता है। इसके प्रयोग से तुलनात्मक अध्ययन करने में बहुत सहायता मिलती है। इसके अतिरिक्त हम किसी वस्तु की प्रगति एवं पतन का शीघ्रातिशीघ्र पता लगा लेते हैं।



आर्थिक भूगोल में इसके प्रयोग के बहुत से अवसर उपलब्ध हैं। अर्थशास्त्र मे नियमो की अमूर्तता को स्पष्ट करने के लिए इनका उपयोग बहुत लाभप्रद है। उदाहरणार्थ—उपभोक्ता की बचत, उपयोगिता का ह्रास-नियम आदि को इनके द्वारा सरलतापूर्वक स्पष्ट किया जा सकता है। पृष्ठ ८६ पर पूर्वोल्लिखित तालिका के द्वारा बनाये हुए ग्राफ का उदाहरण दिया गया है जो कि उपयोगिता के ह्रास-नियम को स्पष्ट करता है।

(४) रेखाचित्र तथा रेखाकृति (*Sketches and Diagrams*)—अर्थशास्त्र-शिक्षण मे रेखाचित्र व रेखाकृतियो का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनके प्रयोग से विषय वस्तु को सरल, सुगम तथा बोधगम्य बनाया जाता है। अर्थशास्त्र का शिक्षक आर्थिक नियमो को स्पष्ट करने के लिए इनका उपयोग कर सकता है। उदाहरणार्थ—उत्पत्ति, उपभोग, माँग तथा पूर्ति आदि के नियमो को इनके द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। इनको मुख्यतः निम्न दो भागो मे विभाजित किया जा सकता है :

(१) वक्र रेखाएँ (Curves)

(२) समकोण चित्र (Rectangle Diagrams)

इनके द्वारा विभिन्न आर्थिक प्रवृतियो की अभिव्यक्ति की जा सकती है। अर्थशास्त्र के शिक्षक को इनका उपयोग अधोलिखित परिस्थितियो मे ही करना चाहिए :

(१) जब आर्थिक नियमो व सिद्धान्तो का प्रस्तुतीकरण किया जाय। उदाहरणार्थ—कुल उपयोगिता, सीमान्त उपयोगिता, उपयोगिता ह्रास-नियम, उपभोक्ता की बचत का सिद्धान्त, सम-सीमान्त उपयोगिता नियम, उत्पत्ति का ह्रास-नियम, उत्पत्ति समता नियम (Law of Constant Returns), प्रतिस्थापना का नियम (Law of Substitution), माँग तथा पूर्ति का नियम, माँग की लोच, मूल्य निर्धारण का सिद्धान्त आदि।

(२) इनका उपयोग उस समय किया जाय जब छात्र पाठ्य-वस्तु को वर्णन द्वारा समझने मे असमर्थ हो।

(३) जब छात्र पाठ के विकास मे सक्रिय सहयोग प्रदान नही कर रहे हो।

(४) जब आर्थिक प्रवृत्तियो का प्रतिपादन करना हो।

(५) चार्ट—(Chart)—अर्थशास्त्र-शिक्षण मे चार्टो का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनके द्वारा छात्रो को विभिन्न घटनाओ तथा बातो का क्रमिक ज्ञान प्रदान किया जाता है। अर्थशास्त्र मे इनके उपयोग के लिए बहुत से अवसर उपलब्ध हैं। उदाहरणार्थ—उत्पत्ति के ढग, द्रव्य के कार्य, विनिमय के स्वरूप, आवश्यकताओ का वर्गीकरण एव लक्षण, उत्पत्ति के साधन आदि। यह उपादान विभिन्न वस्तुओ के सम्बन्धो को स्पष्ट करने मे बहुत सहायक है। जो चार्ट

प्रयुक्त किए जायें उनका सम्बन्ध छात्रो के आर्थिक जीवन से होना चाहिए, अर्थात् उनका चयन उनके आर्थिक जीवन की यथार्थ परिस्थितियों मे से ही किया जाय, तभी वे अपने उद्देश्य को प्राप्त करने म सफल होग । इनका प्रयोग बहुलता के साथ नही करना चाहिए, वरन् जहाँ इनकी आवश्यकता हो वहो करना चाहिए । प्रशिक्षण विद्यालयो के छात्राध्यापक व्यर्थ मे इनका प्रयोग करने लगते हैं क्योकि उनके मस्तिष्क मे यह भावना सदैव बनी रहती है कि हमारे पाठ मे सहायक सामग्री का उपयोग होना आवश्यक है । इस कारण वे कोई न कोई चार्ट बनवा लेते हैं चाहे वह विषय-वस्तु बिना उसके प्रयोग के ही स्पष्ट हो जाय । इनका आकार कक्षा के अनुपात मे होना चाहिए ।

(६) **मॉडल**—शिक्षक को वास्तविक पदार्थों की उपलब्धि सदैव सम्भव नहीं होती । इस कारण उनको प्रतिमूर्ति बनाकर या बनवाकर शिक्षक प्रयोग मे ला सकता है । इनके द्वारा छात्रो को किसी वस्तु का भीतरी तथा बाह्य दोनो आकारो का सूक्ष्म ज्ञान प्रदान किया जा सकता है । परन्तु अर्थशास्त्र-शिक्षण मे इनके उपयोग के लिए बहुत कम अवसर हैं । यदि अर्थशास्त्र के *शिक्षण को भिलाई के इस्पात के कारखान क विषय मे पढाना है तो वह* उनको वहाँ ले जाकर उसके विषय म ज्ञान प्रदान कर सकता है । परन्तु प्रत्येक स्थान पर छात्रो को ले आना व्यय-साध्य होगा । इस कारण अध्यापक उस कारखाने का मॉडल प्रयोग मे ला सकता है और उसके विषय मे ज्ञान दे सकता है । इसके अतिरिक्त माँग तथा पूर्ति के सम्बन्ध को मॉडल के प्रयोग द्वारा स्पष्ट कर सकता है । अध्यापक का अपने छात्रो को मॉडल बनाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए, क्योकि इससे एक तो उनकी रचनात्मक प्रवृत्तियो की सन्तुष्टि होगी, दूसरे उनके द्वारा बनाये गय प्रतिरूपो से अर्थशास्त्र का विशेष-कक्ष सुसज्जित होगा ।

(ख) श्रव्य सामग्री

(१) **रेडियो**—रेडियो शिक्षा और मनोरंजन का महत्त्वपूर्ण उपकरण है । आधुनिक शिक्षा-मनोविज्ञान मे खेल द्वारा शिक्षा देने पर बहुत बल दिया गया है । इसलिए रेडियो की ओर शिक्षा शास्त्रियो तथा मनोवैज्ञानिको का ध्यान *गया और उन्होने इस उपकरण की शैक्षिक महत्ता पर विचार किया । आजकल* अखिल भारतीय रेडियो द्वारा भी बालको को शिक्षा एव मनोरंजन के लिए कार्य-क्रम प्रसारित किए जाने लगे हैं । रेडियो की उपादेयता के विषय में उत्तर प्रदेश के भूतपूर्व वित्त मन्त्री श्री सैयद अली जहीर ने कहा था कि—*'रेडियो ने शिक्षण तथा सीखने की प्रक्रिया म महत्त्वपूर्ण सम्भावना पहुँचाई है* और जैसे-जैसे हमारे वित्तीय साधन बढते जायेंगे वैसे ही वैसे हम प्रत्येक स्तर पर

शिक्षक के लिए इस सहायक सामग्री को उपलब्ध बना देंगे।[1] उन्होने आगे कहा कि हमारे प्रदेश के १४०० माध्यमिक शिक्षालयो पर रेडियो हैं। इसके प्रयोग से छात्रो को केवल तथ्यात्मक ज्ञान ही प्रदान नही किया जाता वरन् उनकी वाचक शक्ति को विकसित करने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान किए जाते हैं। अर्थशास्त्र-शिक्षण मे इसके उपयोग के लिए पर्याप्त अवसर हैं। इनके द्वारा भारतीयो के रहन-सहन के स्तर तथा उसको उच्च बनाने के उपाय, ग्रामीण समस्याओ एवं उनके सुधार, आर्थिक विकास योजनाएँ, शक्ति के साधनो एव भारत मे उनकी वृद्धि के लिए उपाय, भौगोलिक परिस्थितियाँ तथा उनका मानव के आर्थिक जीवन पर प्रभाव, आर्थिक जीवन के विकास की कहानी आदि प्रकरणो पर वार्ता प्रस्तुत की जा सकती है। परन्तु इन वार्ताओ का लाभ तभी उठाया जा सकता है जब शिक्षक प्रोग्राम के उपरान्त छात्रो के अर्जित ज्ञान को प्रश्नो द्वारा जाँचे तथा उसके पश्चात् उनके ज्ञान को अपने कथन द्वारा समृद्ध बनाये। तत्पश्चात् उनसे उस वार्ता पर वाद-विवाद कराए तथा लेखबद्ध करने के लिए आदेश दे। ऐसा करने से छात्रों मे तर्कसम्मत चिन्तन करने की प्रवृत्ति का विकास होगा तथा इस प्रकार का ज्ञानार्जन स्थायी भी होगा।

(२) **टेप-रेकार्डर**—अर्थशास्त्र शिक्षण में टेप-रेकार्डर की बहुत उपादेयता है। इसके प्रयोग से रेडियो की सीमाओ को दूर किया जा सकता है। रेडियो के कार्य-क्रम निश्चित समय पर आते हैं। यदि रात्रि के ८ बजे किसी अर्थ-शास्त्री या अन्य विशेषज्ञ की किसी महत्त्वपूर्ण प्रकरण पर वार्ता प्रसारित हो तो हम उसका उपयोग नही कर सकते हैं। इसके लिए विशिष्ट भावो एव विचारो को टेप रेकार्डर मे भर लिया जाय तो हम उसका उपयोग विभिन्न अवसरो पर तथा आवश्यकतानुसार कर सकते हैं। इसके द्वारा हम छात्रो को आधुनिकतम आर्थिक प्रवृत्तियो, आँकडो आदि से अवगत करा सकते हैं।

(द) श्रव्य-दृश्य सामग्री

माइकेलिस (Michaelis) का विचार है कि श्रव्य-दृश्य सामग्री के उपयोग से छात्रो मे धारणाएँ, अभिरुचियाँ, अनुभूतियाँ तथा रुचियाँ विकसित की जाती हैं। उन्होने आगे कहा है कि इनके द्वारा छात्रो को वर्ग-योजना बनाने, स्वस्थ चिन्तन तथा विचार प्रक्रिया, तथा तर्कशक्ति के प्रयोग के लिए स्थूल आधार प्रदान किए जाते हैं।[1] अमेरिका की राष्ट्रीय सोसाइटी का विचार है कि श्रव्य-दृश्य सामग्री के द्वारा सीखने की प्रक्रिया को प्रोत्साहन मिलता है तथा

1. "Radio has made possible some of the most exciting experiments in learning and teaching and as our resources grow we will make this "aid" available to teachers at all levels."

छात्रो की रुचियो को पाठ्य-सामग्री के प्रति जाग्रत किया जाता है। इस प्रकार प्राप्त किया हुआ ज्ञान स्थायी होता है। इसके प्रयोग के अग्रलिखित लाभ हैं :

(१) इनके द्वारा छात्रो को इन्द्रियानुभव प्रदान किए जाते हैं।

(२) *यह सामग्री प्रत्यक्ष अनुभव के लिए पूरक का कार्य करती है।*

(३) इनके प्रयोग से छात्रो को ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रेरित किया जाता है।

(४) यह सामग्री पिछडे हुए बालको की शिक्षा के लिए बहुत ही उपयोगी है।

(५) सबसे प्रमुख लाभ यह है कि इनके द्वारा ऐसा प्रभावोत्पादक वातावरण उत्पन्न किया जाता है जिसमे छात्र ज्ञानेन्द्रिय अनुभव प्राप्त करता है और नवीन बातो को सरलता से ग्रहण कर लेता है।

(६) इनके द्वारा छात्रो की कल्पना, तर्क एव निर्णय शक्तियो का विकास किया जाता है।

उपर्युक्त लाभो को तभी प्राप्त किया जा सकता है जबकि उनका प्रयोग शिक्षक द्वारा उपयुक्त ढग से किया जाय। इनके प्रयोग के लिए शिक्षक को कुशल एव दक्ष होना चाहिए।

(१) समाचार सम्बन्धी फिल्म (Documentary Films)—सामाजिक *विषयो के शिक्षण मे इन फिल्मो का बडा महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारतीय सरकार* इस क्षेत्र मे पर्याप्त कार्य कर रही है। अर्थशास्त्र-शिक्षण मे इन फिल्मो का उपयोग बहुत लाभप्रद है। इनके प्रयोग से छात्रो को राष्ट्र की आर्थिक प्रगति एव परिस्थितियों से अवगत कराया जा सकता है। इनके प्रयोग से पूर्व शिक्षक को चाहिए कि वह उस समाचार फिल्म के बारे मे उन्हे परिचय प्रदान कर दे जिससे उनको उनके समझने म कठिनाई नही उठानी पडे तभी *इनके प्रयोग के लाभो को प्राप्त किया जा सकता है। फिल्म तथा उसमे प्रयुक्त* की गई भाषा छात्रो के स्तर के अनुकूल होनी आवश्यक है क्योकि यदि इसके विपरीत भाषा प्रयुक्त की गयी तो छात्र उनको समझने मे असमर्थ रहेगे और फिल्मो का भी उद्देश्य पूर्ण न हो सकेगा।

(२) चल-चित्र—सामाजिक विषयो के शिक्षण के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण उपकरण है। इसका प्रयोग अर्थशास्त्र के शिक्षण मे उपयोगी है। इस उपकरण का प्रयोग *अर्थशास्त्र-शिक्षण मे तभी किया जा सकता है जबकि फिल्म आर्थिक दृष्टिकोण से बनायी जाएँ। इसके प्रयोग से अर्थशास्त्र के बहुत से प्रकरणो की* शिक्षा प्रदान की जा सकती है। उदाहरणार्थ—किसानो की हीन दशा के कारण, ग्रामीण समस्याएँ, भारत की फसलें, खनिज पदार्थ, आर्थिक विकास

---

1. John U. Michaelis, *Social Studies for Children in a Democracy*, p. 232.

योजनाएँ, भारत के उद्योग, भारतीय रहन-सहन का स्तर आदि । हमारे देश मे ऐसी फिल्मो का बहुत अभाव है ।

(घ) अन्य सामग्री

अर्थशास्त्र-शिक्षण मे पर्यटन की उपादेयता (Importance of Excursion in the Teaching of Economics)—अर्थशास्त्र एक व्यवहारिक विषय है । इसके व्यावहारिक पक्ष का ज्ञान प्राप्त करने के लिए पर्यटन की बहुत उपादेयता है । इसके द्वारा छात्रो को वास्तविक परिस्थितियो का ज्ञान प्रदान किया जा सकता है । अर्थशास्त्र मे पर्यटन के लिए बहुत से अवसर प्राप्त हैं । उदाहरणार्थ—किसी औद्योगिक नगर का निरीक्षण, श्रमिको की बस्तियों एव ग्रामों का निरीक्षण, विकास योजनाओ—बांध, विभिन्न कारखानों, मिलो, बिजली-उत्पादन केन्द्रो का निरीक्षण, बैंक, बाजारो का निरीक्षण । इनके निरीक्षण से छात्रो को माँग-पूर्ति के नियम को भारतीय परिस्थितियो मे समझाना, आदि का भ्रमण के द्वारा प्रत्यक्ष एव वास्तविक ज्ञान प्रदान किया जा सकता है । अर्थशास्त्र मे इसके प्रयोग के अधोलिखित लाभ हैं .

१. पर्यटन के द्वारा पाठ्य-क्रम के अनुभवो को समृद्ध बनाया जाता है ।
२. इसके द्वारा बालको के सामान्य ज्ञान मे वृद्धि की जाती है ।
३. यह बालको के ज्ञान को आधुनिक एव पूर्ण बनाता है ।
४. यह मौखिक पाठो की पूर्ति करके उनको रोचक एव वास्तविक बनाता है ।
५ यह बालको मे आर्थिक समस्याओ के लिए वास्तविकता की भावना विकसित करता है जिससे वे उनको अपनी समस्या मानकर उनके समाधान के लिए तत्पर हो सकें ।
६. यह आर्थिक सम्बन्धो तथा दैनिक जीवन की ठोस परिस्थितियो के निरीक्षण द्वारा वास्तविक ज्ञान प्रदान करता है ।
७. यह बालको की मानसिक शक्तियो के विकास मे भी सहायता प्रदान करता है ।

पर्यटन की योजना बनाने में ध्यान रखने योग्य बातें
(Considerations for Planning an Excursion)

अर्थशास्त्र मे पर्यटन की याजना बनाने तथा उसकी सफलता के लिए अर्थशास्त्र के शिक्षक को अग्रलिखित बातो का ध्यान रखना चाहिए ।

(१) सर्वप्रथम, भ्रमण की अवधि का निर्धारण करना चाहिए । बालको को पर्यटन के लिए एक दिन या दो या एक सप्ताह आदि के लिए ले जाना है ।

(२) शिक्षक को पर्यटन कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व उन स्थानो या संस्थाओं का स्वय पर्यवेक्षण कर लेना चाहिए ।

(३) इस जानकारी से अवगत हो जाने के पश्चात उसे भ्रमण के मुख्य उद्देश्यों का निर्धारण करना चाहिए। उदाहरणार्थ, वह पर्यटन द्वारा किन-किन स्थानों, संस्थाओं एवं समस्याओं के विषय में पढ़ाना चाहता है ? उद्देश्य के निर्धारण में बालकों का सहयोग प्राप्त किया जाय।

(४) मार्ग का निर्धारण अर्थात् किस मार्ग से निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचना है। इसके अतिरिक्त किस साधन से वहाँ पहुँचना है ? इन समस्त बातों के विषय में छात्रों के सहयोग से निर्णय करें।

(५) बालकों को अपने साथ किन-किन वस्तुओं को ले जाना है, इसके विषय में निर्णय लेना आवश्यक है। उदाहरणार्थ—नोट-बुक, पैन या पैन्सिल, कैमरा, बिस्तर, नाश्ता तथा खाने का सामान आदि।

(६) विभिन्न वस्तुओं के प्रबन्ध का भार किन-किन छात्रों को दिया जाय। इसके लिए शिक्षक बालकों को विभिन्न समूहों में विभाजित कर सकता है। परन्तु एक समूह में आठ या दस छात्रों से अधिक नहीं हों।

(७) जब छात्र उस विशेष स्थान या संस्था का निरीक्षण करें तब उनका उपयुक्त ढंग से पथ-प्रदर्शन किया जाना चाहिए। उनको प्रश्नों द्वारा प्रत्येक वस्तु का पूर्ण ज्ञान प्रदान करने का प्रयास किया जाए।

(८) छात्रों को विभिन्न बातों को नोट करने के लिए आदेश देना चाहिए जिससे वे बाद में उनका उपयोग कर सकें क्योंकि प्रत्येक तथ्य के विषय में याद रखना सम्भव नहीं है।

(९) यदि पर्यटन स्थान पर रात्रि को रुकना पड़े तो रात को दिन भर देखी हुई वस्तुओं के विषय में चर्चा करवा देनी चाहिए जिससे उनकी सम्भ्रान्तियाँ दूर हो सकें तथा उनकी शंकाओं का समाधान भी करना चाहिए।

(१०) पर्यटन के कार्य-क्रम के समाप्त होने पर यदि दूसरे मार्ग से वापस आ सकें तो अच्छा रहेगा क्योंकि इससे उनको अन्य नई बातों का ज्ञान हो जायगा जो कि उनके सामान्य ज्ञान में वृद्धि करेंगी।

(११) भ्रमण से वापस आ जाने पर उनके अनुभवों को क्रम-बद्ध एवं अर्थशास्त्र के पाठ से सम्बन्धित किया जाय। शिक्षक इस कार्य को विभिन्न ढंगों—स्पष्टीकरण, वर्णन, मित्रों को पत्र लिखवाकर एवं प्रतिवेदन तैयार करा कर पूर्ण कर सकता है। इसके पश्चात् उनसे उस भ्रमण का पूर्ण वर्णन लेखबद्ध कराया जाय तथा उनसे सम्बन्धित चित्र, ग्राफ, रेखाचित्र आदि बनवाए जाएँ।

उपर्युक्त विवेचन से पर्यटन के विभिन्न स्तरों का स्पष्टीकरण हो जाता है। संक्षेप में पर्यटन के स्तर इस प्रकार हैं

(१) बालकों को पर्यटन के लिए तत्पर बनाना।

(२) पर्यटन का संचालन करना एवं उसको क्रियान्वित करना।

(३) पर्यटन का पुनरीक्षण।

प्रश्न

1. Write a note on the aids and techniques that you would use for teaching Economics at the Higher Secondary Stage Illustrate your answer
(A U, B T, 1956, 58, 59)
आप उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र को पढाने के लिए जिन सहायक सामग्रियो और रीतियो का प्रयोग करगे, उन पर उदाहरण सहित सक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ।

2 Discuss the value of the following in the teaching of Economics
(a) Graphs and Tables
(b) News papers and Journals
(A U, B T, *1960*)
अर्थशास्त्र शिक्षण मे अधोलिखित के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए
(अ) ग्राफ एव तालिकाए ।
(ब) समाचार-पत्र तथा जनरल ।

3 Write *short note on the* Aids *in the teaching of* Economics (A U, B Ed, 1966)
'अर्थशास्त्र शिक्षण मे सहायक सामग्री' पर सक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ।

4 Write *short note on the 'Place of excursions in the teaching of Economics'* (*Udaipur,* B Ed, *1967*)
'अर्थशास्त्र-शिक्षण मे पर्यटन के स्थान' पर सक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ।

अध्याय ७

अर्थशास्त्र की पाठ्य-पुस्तक
(Text-book of Economics)

"A text book ought not to be used as a collection of facts to be learned by heart but rather as store house of basic information which the pupils can use in a veriety of active ways" —*C. P. Hill*

× × × ×

"Text-book is half of apparatus of teaching."

—*Prof. Keating.*

विषय-प्रवेश

लेखन-कला के उद्गम से पूर्व शिक्षा व्याख्यान प्रणाली से प्रदान की जाती थी। शिक्षक अपने मुख से बालको के कानो तक ज्ञान पहुँचाता था। जब से लेखन-कला का अभ्युदय हुआ तब से पुस्तको का निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ। परन्तु पुस्तको का महत्त्वपूर्ण प्रयोग मुद्रण-यन्त्र के आविष्कार के बाद हुआ। आधुनिक काल मे पाठ्य-पुस्तको का महत्व शिक्षा-उपादान के रूप मे और अधिक बढ गया है। पुस्तकें शिक्षण प्रक्रिया मे बालक तथा शिक्षक दोनो का ही पथ-प्रदर्शन करती हैं।

पाठ्य-पुस्तक का महत्व—भारतीय शिक्षालयो मे पाठ्य-पुस्तक को बहुत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। पाठ्य पुस्तक के माध्यम से छात्र विभिन्न विद्वानो, अन्वेषको तथा मनीषियो के संचित विचारो को प्राप्त करते हैं। शिक्षक का यह महत्वपूर्ण उपादान है जिसके द्वारा वह ज्ञानार्जन करा सकता है। पाठ्य-पुस्तक के विरुद्ध विद्वानो का मत है कि इस उपकरण के द्वारा छात्रों मे रटने की प्रवृत्ति का विकास होता है। उन्हे स्वतन्त्र तथा स्वस्थ चिन्तन, तर्क तथा निर्णय के हेतु अवसर प्राप्त नहीं हो पाते। इन तर्कों मे सत्यता अवश्य दिखाई

देती है। परन्तु ये दोष उसके दुरुपयोग के कारण उत्पन्न होते हैं। पाठ्य-पुस्तक की आवश्यकता तो हमे क्लिपैट्रिक तथा मौरिसन की योजना एव इकाई विधियो म भी होती है। इकाई की पूर्ण तैयारी के लिए पाठ्य पुस्तक अत्यन्त आवश्यक है। प्रो० कोटिंग के अनुसार "पाठ्य-पुस्तक शिक्षा का आधा यन्त्र है।" हर्ल आर० डगलस (Harl R Douglas) ने पाठ्य-पुस्तको क महत्व को इस प्रकार प्रदर्शित किया है, "शिक्षको के बहुमत ने अन्तिम विश्लेषण के आधार पर पाठ्य-पुस्तक को 'वे क्या और किस प्रकार पढायेंगे' की आधार-शिला बनाया है।"[1] प्रो० बार (Barr) तथा बर्टन (Burton) ने पाठ्य-पुस्तक क विषय मे कहा है कि "संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका मे पाठ्य-पुस्तक एक महत्त्वपूर्ण शैक्षिक साधन है।"[2] यदि यह कथन अमेरिका के विषय मे सत्य है तो हम कह सकते हैं कि यह भारत के लिए नितान्त सत्य है।

पाठ्य-पुस्तक की विशेषताएँ—(१) इनके द्वारा छात्रो के समय की बचत होती है। उन्हे इनमे ज्ञानराशि का संचित रूप एक स्थान पर प्राप्त हो जाता है। बालक इनका अध्ययन करके कम से कम समय मे अधिकाधिक ज्ञानार्जन कर लेता है।

(२) पाठ्य-पुस्तकें शिक्षको तथा छात्रो को विद्वानो के विचारो एव अनुभवो को प्रदान करती है। वे इन अनुभवो से लाभ उठाने मे समर्थ होते हैं।

(३) पाठ्य पुस्तको क द्वारा छात्रो म स्वाध्ययन की आदत की नीव डाली जाती है।

(४) इनके द्वारा बालको का विषय सम्बन्धी पाठ्य-क्रम की रूपरेखा का क्रमबद्ध, सुव्यवस्थित तथा सुस्पष्ट ज्ञान प्रदान किया जाता है। इस प्रकार पाठ्य पुस्तको की एक प्रमुख विशेषता उनकी सुनिश्चितता है। इनके द्वारा छात्र एव अध्यापक दोनो ही पाठ्य-क्रम की गति का अनुमान निश्चित रूप से प्राप्त कर लेते हैं। इस कारण छात्र तथा शिक्षक दोनो उस सीमा से बाहर नहीं जा पाते हैं।

(५) इनके द्वारा छात्रो की सीमाओ का ज्ञान उपलब्ध हो जाता है।

अर्थशास्त्र की वर्तमान पाठ्य-पुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन—अर्थशास्त्र की वर्तमान पाठ्य-पुस्तकों पर दृष्टिपात करने से उनमे अधोलिखित दोष पाये जाते हैं

---

1. "In the last analysis, with great majority, the text-book is a potent determinent of what and how they will teach"
2 "The text book is probably the most important tool in this Country (U S A)

(१) पाठ्य-पुस्तको की तैयारी मे पाठ्य-वस्तु का चयन, व्यवस्था आदि छात्रो के मानसिक स्तर, आयु रुचि तथा योग्यता के अनुसार नही पाई जाती।

(२) पाठ्य-पुस्तको मे अमूर्त विचारो का बाहुल्य पाया जाता है। इस कारण शिक्षा तथा छात्र दोनो ही उनके प्रति अरुचि प्रकट करते हैं।

(३) पाठ्य-पुस्तको का एक मुख्य दोष यह है कि उनकी योजना अर्थशास्त्र की शिक्षण-विधियों के अनुसार नही की जाती है। उदाहरणार्थ—यदि शिक्षालय मे अर्थशास्त्र के शिक्षण के लिए योजना तथा समस्या विधियो को अपनाया गया है तो पुस्तकें इन्ही विधियो के अनुसार लिखी जानी चाहिए, जिससे छात्र तथा शिक्षक अपनी समस्याओ तथा योजनाओ को हल करने मे पाठ्य पुस्तक का उपयोग सफलतापूर्वक कर सकें। परन्तु अर्थशास्त्र की पाठ्य पुस्तको मे इनका प्राय अभाव पाया जाता है।

(४) अर्थशास्त्र की वर्तमान पाठ्य-पुस्तको मे भाषा तथा शैली का भी एक दोष पाया जाता है। इनका प्रयोग छात्रो के मानसिक स्तर, आयु तथा शाब्दिक ज्ञान के अनुसार नही किया गया है।

(५) पाठ्य-पुस्तको मे विषय-वस्तु का प्रस्तुतीकरण छात्रो के मानसिक एव सावेगिक स्तर के अनुकूल नही है। हमारी वर्तमान पाठ्य-पुस्तको मे विषय-वस्तु का प्रस्तुतीकरण निबन्धात्मक ढङ्ग से किया गया है।

(६) अर्थशास्त्र की पाठ्य-पुस्तकें अधिकतर परीक्षा की दृष्टि से लिखी गई हैं।

(७) उनमे तालिकाओ, आँकडों, उदाहरणो तथा चित्रो का उपभोग बहुत कम किया गया है। जो भी उदाहरण आदि प्रयुक्त किए गए हैं वे छात्रों की रुचि तथा मानसिक स्तर के अनुकूल नही हैं।

(८) पाठ्य-पुस्तको की साज-सज्जा प्रायः अमनोवैज्ञानिक होती है।

(९) पाठ्य-पुस्तक देश तथा समाज की माँगो की पूर्ति करने में असमर्थ पाई जाती हैं।

(१०) पाठ्य पुस्तको मे भारतीय आर्थिक जीवन के दृष्टिकोण तथा व्यावहारिक पक्ष की पूर्णतया अवहेलना की गई है।

चयन के मूलभूत सिद्धान्त

अर्थशास्त्र की पाठ्य-पुस्तक के चयन मे शिक्षक को अधोलिखित बातो का विशेष ध्यान रखना चाहिए :

(१) पाठ्य-वस्तु का चयन एवं व्याख्या—

(अ) छात्रों की दृष्टि से—उनकी रुचि, अवस्था, योग्यता, मानसिक स्तर, प्रवृत्तियो, अभिरुचियो तथा सावेगिक स्तर के अनुकूल हो।

(ब) समाज की दृष्टि से—पाठ्य-वस्तु का चयन समाज की दृष्टि से होना चाहिए जिससे पाठ्य-पुस्तक समाज के आर्थिक विकास एव उन्नति के लिए देश के नागरिको मे नव जागरण का सचार कर सकें।

(स) पाठ्य वस्तु की व्यवस्था छात्रो के मानसिक एव सावेगिक स्तर के अनुकूल होनी चाहिए।

(द) समस्याओ एव शिक्षण-विधियो के अनुकूल व्यवस्था की जाय।

(य) पाठ्य-वस्तु मे मनोवैज्ञानिक क्रम स्थापित किया जाय।

(२) पाठ्य पुस्तक की बाह्य आकृति—टाइप जिल्द, कागज, पक्तियो की सख्या, शब्दों के बीच की दूरी, आकार, मारजिन की चौड़ाई आदि।

(३) विषय-सूची—उनकी ग्राह्यता, महत्त्व तथा क्षेत्र।

(४) शैक्षिक साधन—अभ्यास के लिए प्रश्न, निर्देश, सहायक पुस्तको की सूची, अनुक्रमणिका, प्रस्तावना आदि की यथार्थता तथा उनकी उपयुक्तता।

(५) उदाहरण—शाब्दिक तथा प्रदर्शनात्मक उदाहरण—सूचीपत्र, तालिकाएँ, ग्राफ, रेखाचित्र एव रेखाकृतियाँ, मानचित्र, आँकड़ो, उद्धरणो एव सदर्भों की शुद्धता, उपयुक्तता तथा पर्याप्त सख्या।

(६) प्रस्तुतीकरण—(अ) जिसके द्वारा छात्रो मे स्वाध्ययन की आदतो का निर्माण एव कुशलताओं का विकास हो सके।

(ब) दूसरे विषयो की पाठ्य वस्तु से सह-सम्बन्ध स्थापित किया जा सके।

(स) वर्ग तथा वैयक्तिक विभिन्नताओ की सतुष्टि करता हो।

(द) सीखने के नियमो के अनुकूल हो।

(य) निर्देशित अध्ययन के लिए अवसर प्रदान करने वाला हो।

(र) शिक्षण-सूत्रो के अनुकूल हो।

(ल) छात्रो की विषय के प्रति रुचि जाग्रत करे।

(व) छात्रो के मानसिक एव सावेगिक स्तर के अनुकूल हो।

(श) छात्रो के मानसिक विकास मे सहायक हो।

(७) लेखक—उसके विचारो की स्पष्टवादिता, मौलिकता एव निष्पक्षता, उसका अनुभव एव प्रसिद्धि, योग्यता तथा प्रकाशन और मनोविज्ञान का ज्ञान तथा प्रशिक्षण।

(८) पुस्तक का मूल्य।

अर्थशास्त्र की पाठ्य-पुस्तको के मूल्याकन के लिए मापदण्ड[1] (Scale for Evaluating Textbooks of Economics)

प्रकाशन सामग्री—(१) पुस्तक का नाम (Title of book)

(२) लेखक या लेखकगण

(३) प्रकाशक

(४) पृष्ठो की संख्या

(५) पुस्तक का मूल्य

(६) कॉपीराइट की तिथि

संख्यात्मक वर्ग क्रम (Numerical Rating)

१	२	३	४	५
बिल्कुल निकृष्ट	निकृष्ट	सामान्य	अच्छा	बहुत अच्छा

(अ) पुस्तकों के यात्रिक तत्व—(१) पुस्तक का आकार तथा साज-सज्जा

(२) जिल्द की सुदृढ़ता

(३) कागज

(४) छपाई

(५) मारजिन की चौडाई

(ब) सगठन—(१) पाठो का सगठन

(२) पाठो का तर्क-सम्मत विभाजन

(३) पाठो की सम्बद्धता

(४) क्रम-बद्धता

(५) साराश

(६) मौलिक एकता (Fundamental Unity

(स) प्रस्तुतीकरण—(१) शैली

(२) भाषा

(३) स्पष्टता

(४) निष्पक्षता

(५) प्रायोगिक शब्दावली

(६) आधुनिक तथा पूर्ण (Up-to date)

(द) उदाहरण—(१) शुद्धता

(२) वस्तु-निष्ठता

---

1. On the lines of a suggested ' Scale for Evaluating Textbooks in the social studies'
—Arthur C Bining and David H Bining in *Teaching the Social Studies in Secondary Schools*, pp. 80-81

(३) गुणात्मकता
(४) उपयुक्तता
(५) आर्थिक जीवन से सम्बन्ध
(६) अनुपात
(७) स्पष्टता
(च) मानचित्र, चार्ट तथा ग्राफ—(१) मुद्रन
(२) स्थूलता
(३) संख्या
(४) आकार
(५) उपयुक्तता
(६) अनुपात
(७) महत्त्व
(र) अभ्यासार्थ प्रश्न—(१) पाठ्य-वस्तु से सम्बन्ध
(२) उनकी व्यापकता
(३) शिक्षक तथा छात्रों की दृष्टि से उपयोगिता
(४) उनकी प्रेरणात्मक शक्ति
(५) उनका व्यवस्थापन
(६) उनकी वस्तु-निष्ठा (Objectivity)
(७) उनकी विश्वसनीयता (Validity)
(ल) निर्देशन एवं विशेष अध्ययन योग्य पुस्तकें—(References & Bibliography)—(१) व्यावहारिकता
(२) शिक्षक की दृष्टि से महत्त्व
(३) छात्रों की दृष्टि से महत्त्व
(४) विषय-सामग्री के प्रकार
(५) नवीन तथा पूर्ण
(व) परिशिष्ट तथा अनुक्रमणिका—(१) व्यवस्थापन
(२) विषय-सूची
(३) व्यावहारिकता
(४) पूर्णता
(५) महत्त्व

कुल योग ………… ——

अर्थशास्त्र की पाठ्य-पुस्तक कैसी हो ?

अर्थशास्त्र की पाठ्य-पुस्तक में अधोलिखित गुण होने आवश्यक हैं :

(१) पुस्तक की वाह्य आकृति सुन्दर, आकर्षक एवं सचित्र हो।

(२) पाठ्य-पुस्तक की जिल्द सुदृढ हो।

(३) पुस्तक म उत्तम प्रकार का कागज प्रयुक्त किया जाय। अर्थशास्त्र की पाठ्य पुस्तक मे आर्ट पेपर प्रयुक्त किया जाना चाहिए, क्योंकि इसम प्रदर्शनात्मक सामग्री का उपयोग आवश्यक है। पुस्तक का टाइप छात्रो की अवस्था क अनुकूल हो। छपाई साफ तथा शुद्ध होनी चाहिए।

(४) पाठ्य पुस्तको की रचना अधोलिखित बातो को ध्यान म रखकर की गई हो

(i) पाठ्य-पुस्तक की विषय वस्तु छात्रो की वयस्कता, रुचि तथा मानसिक स्तर के अनुसार होनी चाहिए।

(ii) मौलिक उदाहरण, उनके आर्थिक जीवन तथा उनकी आयु के अनुकूल होने चाहिए।

(iii) पाठ्य-पुस्तको मे प्रयुक्त प्रदर्शनात्मक सामग्री मे शुद्धता तथा उपयुक्तता होनी चाहिए।

(iv) पाठ्य पुस्तको म सारिणी, तालिका तथा आँकडो का विवरण उपयुक्त ढग से प्रस्तुत किया जाय।

(v) पाठो मे व्यवस्था स्थापित की जाय।

(vi) पाठ्य-पुस्तक म भाषा तथा शैली सरल एव छात्रो के अनुकूल हो।

(vii) अर्थशास्त्र के नियमो का स्पष्टीकरण ग्राफ, रेखाकृतियो एव रेखाचित्रो द्वारा किया जाय।

(viii) पाठ्य-पुस्तक म उद्धरणो तथा सदर्भों का उपयोग यथास्थान होना चाहिए।

(५) पुस्तक मे पाठ्य-वस्तु निर्धारित पाठ्य-क्रम के अनुसार पूर्ण हो।

(६) पाठ्य-पुस्तक का प्रस्तुतीकरण ऐसे ढग से किया जाय जिससे बालको मे योजनाओ, समस्याओ आदि को हल करने की योग्यता स्वत आ जाय तथा स्वाध्ययन की आदत का निर्माण हो।

(७) अर्थशास्त्र की पाठ्य पुस्तक अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्यों की पूर्ति मे सहायक हो।

(८) पुस्तक की प्रस्तावना ऐसी होनी चाहिए जिसे देखकर पाठक उसके गुणो तथा पाठ्य-विषय के विषय म सक्षिप्त ज्ञान प्राप्त कर सके।

(९) पाठ्य-पुस्तक मौलिक तथा प्रतिभा-सम्पन्न लेखक द्वारा लिखी गई हो।

(१०) उसमे सहायक तथा निर्देश पुस्तको की सूची दी गई हो।

(११) पाठ्य-पुस्तक का मूल्य भी यथोचित कम होना चाहिए।

प्रश्न

1 What factors whould you keep in mind while selecting a suitable text book of Economics for Higher Secondary stage ? (A U , B Γ, 1959)
उच्चतर माध्यमिक स्तर के लिए अर्थशास्त्र की उपयुक्त पाठ्य-पुस्तक का चयन करते समय आप किन सिद्धान्तो को अपने ध्यान मे रखेंगे ?

2 Discuss the value of text-books in Economics (A U , B. T , 1960)
अर्थशास्त्र मे पाठ्य-पुस्तको के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

3 Write a critical review of any text book in Economics that you may have used for teaching any class during the course of your teaching practice (A U , B T , 1961)
आपने अपने शिक्षण-व्यवहार के समय किसी कक्षा को पढाते समय अर्थशास्त्र की जिस किसी पाठ्य पुस्तक का प्रयोग किया हो, उसकी आलोचनात्मक विवेचना कीजिए।

4 Discuss the functions of text books in Economics what criteria should be satisfied by a good text-book ? In what ways do the prescribed text-books in this country fall short of the ideals ? (A U , B T , 1964)
अथशास्त्र म पाठ्य पुस्तको के कार्यों का उल्लेख कीजिए। एक उत्तम पाठ्य-पुस्तक मे कौन-कौन से गुण होने चाहिए ? हमारे देश की प्रस्तावित पाठ्य-पुस्तको मे किन आदर्शो की कमी पायी जाती है ?

5 Write short note on Text-books (A. U , B Ed , 1967)
पाठ्य-पुस्तको पर टिप्पणी लिखिए।

अध्याय ८

अर्थशास्त्र का शिक्षक
(Economics Teacher)

"Teaching is a progressive occupation and the teacher must ever be a student" —*Bining and Bining*

शिक्षा के बारे मे आधुनिकतम सिद्धान्त यह है कि शैक्षिक प्रक्रिया के तीन मुख्य बिन्दु होते हैं—शिक्षक, बालक तथा विषय-वस्तु। अध्यापन की सफलता इन तीनो की सुसम्बद्धता पर ही निर्भर होती है। इनमे शिक्षक एक चेतनशील तथा क्रियाशील बिन्दु है। इसका शैक्षिक प्रक्रिया मे बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। चाहे हमारा पाठ्य-क्रम, पाठशाला-भवन, फर्नीचर, प्रयोगशाला, सहायक सामग्री आदि कितनो ही अच्छी क्यो न हो, तब तक वे निरर्थक हैं जब तक एक योग्य शिक्षक द्वारा उन्हे सचालित न किया जाय। शिक्षा शास्त्रियो ने शिक्षण-प्रक्रिया मे विभिन्न तत्वो को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है, उदाहरणार्थ—सीखने के नियम, श्रव्य-दृश्य सामग्री, विषय-वस्तु, वैयक्तिक विभिन्नताओ, निदशन आन्दोलन, मूल्याकन, व्यक्तित्व विकास आदि। वस्तुत ये सब वस्तुएँ प्रभावोत्पादक हैं और इन्होने शिक्षा के क्षेत्र मे कुछ न कुछ योग-दान अवश्य किया है। परन्तु इनकी प्रभावोत्पादकता तभी है जब इनका सचालन योग्य शिक्षक के द्वारा किया जाय। इसके अतिरिक्त समाज की दृष्टि से भी उसका स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। अध्यापक आदिकाल से राष्ट्र का निर्माणकर्ता माना जाता रहा है। जॉन एडम्स ने शिक्षक को मनुष्य का निर्माणकर्ता कहा है। समाज की उन्नति का भार शिक्षक पर है। वह ही समाज की उन्नति एव प्रगति क लिए उत्तरदायी है। बाइनिंग तथा बाइनिंग ने शिक्षक को शिक्षालय की आत्मा कहा है। शिक्षक के महत्त्व को देखने के पश्चात् यह जानना आवश्यक है कि जब शिक्षक का इतना महत्त्वपूर्ण स्थान है तो उसमे कौन-कौन से गुण होने चाहिए, जिससे वह इस महत्वपूर्ण स्थान को ग्रहण कर सके। परन्तु यहाँ हमारा मन्तव्य अर्थशास्त्र के शिक्षक से है। हम उसी के गुणो का विवेचन

करेंगे। अर्थशास्त्र के शिक्षक मे हम किसी महान गुण की कल्पना नही करते हैं। उसे न विश्व कोष ही समझते हैं वरन् उससे हम इतना चाहते हैं कि वह अपने विषय का पूर्ण ज्ञान रखे तथा जो गुण अन्य विषयो के शिक्षको मे होते हैं उन गुणो का अर्थशास्त्र के शिक्षक मे होना आवश्यक है। वह अधोलिखित गुणो को अपने मे विकसित करने का प्रयत्न करे

(१) **व्यावसायिक निष्ठा**—बालक बहुत कुछ शिक्षक के कार्यों, दर्शन आदि से सीखता है। जैसा शिक्षक का दर्शन होगा वैसा ही बालक अपना जीवन-दर्शन बनाने की चेष्टा करता है। इसी कारण शिक्षक को आशावादी बनने के लिए कहा जाता है। शिक्षक का जो दृष्टिकोण शिक्षण-कार्य के प्रति होगा वैसा ही उसके छात्रो पर प्रभाव पडेगा। निष्ठा सीखने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करती है। इसलिए उसे अपने विषय एव व्यवसाय दोनो मे पूर्ण निष्ठा रखनी चाहिए। यदि वह ऐसा नही करेगा तो बालको के व्यक्तित्व को विकसित नही कर पायेगा जो कि शिक्षा का मुख्य ध्येय है। इसलिए अर्थशास्त्र के शिक्षक को अपने कार्य को उत्साह तथा तत्परता के साथ करना चाहिए। यदि वह ऐसा करेगा तो अपने छात्रो मे विद्या के लिए अनुराग उत्पन्न कर सकता है। परन्तु वर्तमान शिक्षको म इसी निष्ठा का अभाव है, तभी हमारी शिक्षा का स्तर प्रतिदिन अवनति की ओर जा रहा है। यह सत्य है कि हमारे शिक्षको को पेट भरने योग्य वेतन भी नही मिलता परन्तु फिर भी जब उन्होने इस व्यवसाय को ग्रहण कर लिया है तब उनके लिए यह अनिवार्य है कि वे सत्य निष्ठ होकर अपने काय को रुचि, तत्परता तथा उत्साह क साथ करें, क्योकि उनके ही ऊपर समाज एव राष्ट्र की उन्नति का दायित्व है। अर्थशास्त्र के शिक्षक की जब तक विषय एव व्यवसाय मे निष्ठा नही होगी तब तक वह समाज की आर्थिक समस्याओ का निदान नही कर पायेगा। इसलिए उसमे व्यावसायिक निष्ठा का होना अनिवार्य है।

(२) **विषय का ज्ञान**—अर्थशास्त्र के शिक्षक से जिस बात की अपेक्षा की जाती है, वह है विषय का ज्ञान। उसे अपने विषय का विद्यार्थी होना चाहिए। जब उसको अपने विषय का पूर्ण ज्ञान होगा तभी वह अपने छात्रो के साथ पूर्ण न्याय कर सकेगा। अर्थशास्त्र के शिक्षक का अपने विषय के ज्ञान के साथ ही साथ उन विषयो का भी पर्याप्त ज्ञान प्राप्त करना चाहिए जिनसे अर्थशास्त्र का घनिष्ठ सम्बन्ध है। अर्थशास्त्र के शिक्षक को भूगोल का ज्ञान अति आवश्यक है क्योकि इसके अभाव म वह आर्थिक भूगोल का शिक्षण ठीक प्रकार से नही कर सकेगा। इसके अतिरिक्त उसे आर्थिक सिद्धान्तो की ऐतिहासिक आधार पर विवेचना करनी चाहिए जिसके लिए उसे इतिहास से सुपरिचित होना आवश्यक है। अर्थशास्त्र के अध्यापक को कम से कम हाई स्कूल स्तर तक के विज्ञान, गणित, कृषि एव वाणिज्य शास्त्र का ज्ञान होना आवश्यक है।

इनके ज्ञान के अभाव में वह अर्थशास्त्र का अध्यापन उचित रूप से नही कर सकेगा। राजस्व के अध्यापन के लिए उसे राजनीतिक सिद्धान्तो का ज्ञान होना आवश्यक है। इस प्रकार अर्थशास्त्र के शिक्षक का अपने विषय के पूर्ण ज्ञान के साथ अन्य सम्बन्धित विषयो का पर्याप्त रूप से ज्ञान होना आवश्यक है। इसलिए उसे जीवन-पर्यन्त विद्यार्थी जीवन ही व्यतीत करना चाहिए। यदि वह इस जीवन का त्याग करता है तो राष्ट्र, छात्र तथा अपने स्वय के हित मे कुठाराघात करेगा। अन्त मे हम कह सकते हैं कि अर्थशास्त्र के शिक्षक को विषय के ज्ञान के साथ-साथ सफल सामाजिक जीवन व्यतीत करने मे जिन बातो की आवश्यकता है उनका भी ज्ञान होना चाहिये।

(३) **समसामयिक साहित्य का ज्ञान**—अर्थशास्त्र के शिक्षक को समसामयिक घटनाओ की जानकारी परम आवश्यक है। इनके ज्ञान के अभाव मे वर्तमान आर्थिक समस्याओ का हल निकालना कठिन है। इनकी जानकारी रखने के लिए उसे कोई न कोई दैनिक समाचारपत्र अवश्य पढना चाहिए। इसके अतिरिक्त उसे साप्ताहिक, मासिक, वार्षिक आदि आर्थिक पत्रिकाओ को भी अवश्य पढना चाहिए क्योकि इनके अभाव मे वह आर्थिक जगत से दूर रहेगा। इन पत्रिकाओ से उसे प्रचलित आँकड़ो का ज्ञान प्राप्त हो सकता है। आँकड़े परिवर्तित होते रहते हैं इसलिए इनकी जानकारी आवश्यक है। दूसरे इन्ही आँकड़ो के आधार पर समस्याओ का समाधान किया जाता है। इन पत्रिकाओ मे उसे Eastern Economics, Govt of India Reports आदि प्रमुख पत्रिकाओ का अध्ययन आवश्यक रूप से करना चाहिए। इसके अतिरिक्त उसे *विभिन्न आर्थिक समस्याओ पर होने वाले वाद-विवादो तथा सेमीनारो एव* विचार-गोष्ठियो मे सक्रिय भाग लेना चाहिए।

(४) **व्यावहारिकता**—अर्थशास्त्र के शिक्षक को व्यावहारिक होना आवश्यक है। व्यावहारिक होने का तात्पर्य यह है कि वह जिन आर्थिक सिद्धान्तो को छात्रो को पढाता है वह स्वय उनके अनुसार व्यवहार मे आचरण करे। उदाहरणार्थ—यदि वह छात्रो को पारिवारिक बजट बनाने की विधि सिखाता है तो स्वय उसको अपने आय-व्यय का चिट्ठा रखना चाहिए जिससे वे उसका अनुकरण करके अपने आय-व्यय का चिट्ठा रख सकें। इस प्रकार अर्थशास्त्र के शिक्षक का व्यावहारिक होना अति आवश्यक है।

(५) *आर्थिक समस्याओ का प्रत्यक्ष ज्ञान*—*अर्थशास्त्र एक व्यावहारिक* विषय है। इसका समाज के आर्थिक पक्ष से सम्बन्ध है। इसलिए अर्थशास्त्र के शिक्षक के लिए यह अति आवश्यक है कि वह स्वय आर्थिक समस्याओं की जानकारी प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त करे। यदि उसे ग्रामीण समस्याओ का करना है तो इसके लिए आवश्यक है कि उसको ग्रामीणो की

व्यावहारिक ज्ञान होना चाहिए। यह तभी हो सकता है जब वह स्वय ग्रामो मे जाकर उनकी समस्याओ का अध्ययन करे तथा उनके समाधान के लिए उपाय सोचे। इनके समाधान के लिए सैद्धान्तिक विवेचना तथा सरकारी रिपोर्टों का अध्ययन ही पर्याप्त नहीं है। जब तक शिक्षक उनके सम्पर्क मे नही आयेगा तब तक वह उनकी समस्याओ की वास्तविकता को नही समझ पायेगा। इसके अतिरिक्त प्रत्यक्ष ज्ञान के बिना वह अपने छात्रो को पर्यटन के लिए भी नही ले जा सकता। यदि वह ले भी गया तो वह उनके विषय मे पूर्ण ज्ञान देने मे असमर्थ रहेगा।

(६) वैज्ञानिक तथा उदार दृष्टिकोण—आधुनिक युग की वैज्ञानिक प्रवृत्ति का यह तकाजा है कि उसी तथ्य या बात को ग्रहण किया जाय जो प्रमाणयुक्त एव तर्कसम्मत है। इस कारण अर्थशास्त्र के शिक्षक मे वैज्ञानिक दृष्टिकोण का होना भी परम आवश्यक है। यदि उसका दृष्टिकोण वैज्ञानिक नहीं होगा तो वह अपने छात्रो मे इस दृष्टिकोण को विकसित नही कर सकेगा जो कि उनके लिए आवश्यक है। इसके द्वारा वे सत्य-असत्य का ज्ञान प्राप्त करने मे समर्थ होगे। इसके साथ ही उसका दृष्टिकोण उदार भी होना अनिवार्य है। इसी दृष्टिकोण से वह अपने छात्रो मे प्रेम, सहानुभूति, सत्यता, गुण ग्राहकता आदि गुणो का विकास कर सकता है। यदि उसमे इस दृष्टिकोण का अभाव रहेगा तो वह मानव समाज का कल्याण करने मे असमर्थ रहेगा तथा अपने छात्रो मे मानवता और विश्व-बन्धुत्व की भावना नहीं उत्पन्न कर सकेगा जो कि विश्व की एक प्रबल माँग है।

(७) शिक्षक का व्यक्तित्व—शिक्षक का व्यक्तित्व सफल शिक्षण की आधारशिला है। अर्थशास्त्र के शिक्षक के व्यक्तित्व मे अधोलिखित गुणो का होना आवश्यक है·

(१) जीवन शक्ति	(२) अच्छा स्वास्थ्य
(३) सत्य आचरण	(४) शुभ चिन्तन
(५) आशावादिता	(६) निष्पक्षता
(७) धैर्य	(८) मौलिकता
(६) सहयोग	(१०) सहनशीलता
(११) प्रेम	(१२) आत्म-नियन्त्रण
(१३) आर्थिक क्रियाओ के प्रयोग की शक्ति	(१४) विशाल हृदयता
	(१५) नेतृत्व क्षमता
(१६) उत्साह	(१७) तत्परता
(१८) निष्ठा तथा चातुर्य	

अर्थशास्त्र के शिक्षक म किसी वस्तु या तथ्य को रोचक ढग से वर्णन करने की शक्ति होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त उसे रेखाचित्र व रेखाकृतियाँ, मानचित्र आदि बनाने का अभ्यास करना चाहिए। इनके बिना वह अपने विषय को सुस्पष्ट, रोचक एव बोधगम्य नही बना सकेगा। आर्थिक नियमों के स्पष्टीकरण मे इनके प्रयोग की अत्यन्त आवश्यकता है। उसे शुद्धता एव शीघ्रता के साथ इनको बनाने की कला का जानना आवश्यक है। इसलिए उसे इसे अभ्यास करके सीख लेना चाहिए।

(८) अर्थशास्त्र के शिक्षण का ज्ञान—अर्थशास्त्र के अध्यापक के लिए प्रशिक्षित होना अत्यन्त आवश्यक है। यदि उसको प्रशिक्षण नही मिलेगा तो वह आधुनिक शैक्षिक विचारधारा तथा विविध नवीन शिक्षण विधियो से अपने को परिचित नही कर सकेगा। किस स्तर पर किस शिक्षण विधि का प्रयोग करना उचित होगा, ऐसी बातो का जानना, उसके लिए आवश्यक है। शिक्षण एक कला है। इसके सामान्य सिद्धान्त तथा नियम हैं, जिनको प्रत्येक शिक्षक को जानना आवश्यक है। सिद्धान्तो तथा नियमो का ज्ञान देने के लिए शिक्षक को प्रशिक्षित करना अनिवार्य है। अर्थशास्त्र के शिक्षक को अधोलिखित बातो मे प्रशिक्षण मिलना आवश्यक है

(१) *अर्थशास्त्र का व्यावहारिक शिक्षण।*

(२) *मुख्य तथा सामान्य शिक्षण विधियो का ज्ञान* (अर्थशास्त्र के शिक्षण मे प्रयुक्त होने वाली शिक्षण-विधियो के सिद्धान्तो एव प्रयोग का विशेष ज्ञान)।

(३) अधोलिखित व्यावसायिक विषयो का ज्ञान

(१) शिक्षा का इतिहास तथा उसकी समस्याएँ, (२) शिक्षा मनोविज्ञान (विशेषत. बालमनोविज्ञान एव बाल-विकास के सिद्धान्त), (३) शिक्षा के दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक एव सामाजिक आधार, (४) विद्यालय व्यवस्था, (५) *स्वास्थ्य शिक्षा*, (६) *शिक्षा मे मूल्याकन एव निदर्शन*, (७) *प्रारम्भिक शिक्षकों* की समस्याओं का ज्ञान।

उपर्युक्त बातो मे प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् उसको समय-समय पर अभिनवन (Refresher) पाठ्य-क्रम प्रदान किया जाय। इसके अतिरिक्त उसे व्यावसायिक साहित्य पढने के लिए प्रदान किया जाय जिससे वह अपने प्रशिक्षण को नवीन बनाता रहे तथा अपने शिक्षण को रोचक एव सजीव बना सके।

प्रश्न

1. Write a short essay on the qualities of Economics Teacher.
   अर्थशास्त्र के शिक्षक के गुणों पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिये।

2. 'Teacher is the maker of man.' In the light of this statement discuss the qualities of Economics teacher

'शिक्षक मनुष्य निर्माता है' इस कथन को ध्यान मे रखते हुए अर्थशास्त्र के शिक्षक के गुणो की विवेचना कीजिए ।

3 What qualities and qualifications should a good Economics teacher possess ?

अथशास्त्र के अच्छे शिक्षक मे कौन से गुण और योग्यताएँ होनी चाहिए ?

अध्याय ९

विद्यालय के विभिन्न स्तरों पर अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु का प्रस्तुतीकरण

(Presentation of Economics at Differnt Stages of School)

अर्थशास्त्र के तथ्यो के सकलन एव सगठन के पश्चात् यह प्रश्न उठता है कि इस पाठ्य वस्तु को किस ढग से प्रस्तुत किया जाय, क्योकि प्रस्तुतीकरण शिक्षण-प्रक्रिया का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अग है। कक्षा-शिक्षण मे पाठ्य-वस्तु का प्रस्तुतीकरण करते समय अधोलिखित सामान्य सिद्धान्तो को ध्यान मे रखना चाहिए :

(१) अर्थशास्त्र का जो भी तथ्य छात्रो के समक्ष प्रस्तुत किया जाय वह सुनिश्चित एव बोधगम्य होना चाहिए।

(२) अर्थशास्त्र की पाठ्य-वस्तु को प्रस्तुत करते समय शिक्षक को सदैव बालको की आयु, उनके मानसिक स्तर, विकास, आवश्यकताओ, उनकी सामर्थ्यों तथा रुचियो का ध्यान रखना चाहिए। यदि अध्यापक इनका ध्यान नही रखेगा तो वह सफलता के साथ विषय वस्तु को प्रस्तुत नही कर सकता। अर्थशास्त्र के प्रस्तुतीकरण मे मानसिक योग्यता का सिद्धान्त इसलिए भी आवश्यक है क्योकि छात्रो को जीवन के प्रारम्भिक काल मे जीवन की आर्थिक विषमताओ का कोई ज्ञान नही होता और न उनमे आर्थिक उत्तरदायित्वो को सम्हालने की क्षमता ही होती है। इसलिए अर्थशास्त्र का प्रस्तुतीकरण उनकी योग्यता, रुचियो तथा आवश्यकताओ के अनुरूप ही होना चाहिए।

(३) अर्थशास्त्र के जिन नियमो एव सिद्धान्तो को प्रस्तुत किया जाय उनकी व्यावहारिकता पर अधिक बल देना चाहिए। इसके अभाव मे उनका कोई मूल्य नहीं होता। स्वभावत छात्र अनुकरण के द्वारा बहुत कुछ सीखते हैं। अत. अर्थशास्त्र के शिक्षक का यह परम कर्तव्य है कि वह स्वय छात्रो के समक्ष इन नियमो को व्यावहारिक रूप मे रखे।

(४) अर्थशास्त्र की पाठ्य-वस्तु का जीवन की ठोस परिस्थितियो एव अन्य विषयो से सम्बन्ध होना चाहिए क्योकि इनसे पृथक अर्थशास्त्र के ज्ञान की कोई उपयोगिता नही है। इसलिए अर्थशास्त्र के शिक्षक का यह परम कर्त्तव्य है कि वह अर्थशास्त्र की पाठ्य-वस्तु का सानुबन्धित प्रस्तुतीकरण करे।

(५) उसकी पाठ्य-वस्तु का प्रस्तुतीकरण समाज की आवश्यकताओ के अनुसार किया जाना चाहिए।

माध्यमिक शिक्षा आयोग ने शिक्षा के विभिन्न स्तरो का अधोलिखित आदर्श प्रस्तुत किया है

(१) प्राइमरी स्तर—(६—११ वर्ष) इस स्तर मे ५ कक्षाएँ रखी हैं।

(२) जूनियर हाई स्कूल स्तर अथवा निम्न माध्यमिक स्तर—(११—१४ वर्ष) इस स्तर मे कक्षा ६, ७ तथा ८ आती है।

(३) उच्चतर माध्यमिक स्तर—(१४—१७ वर्ष) इस स्तर के अन्तर्गत ९, १० तथा ११ वी कक्षाएँ आती हैं।

(४) विश्वविद्यालय स्तरीय शिक्षा—इसमे प्रथम डिग्री कोर्स १२, १३ तथा १४ वीं कक्षाएँ) मास्टर डिग्री कोर्स तथा अनुसन्धान कार्य आते हैं।

परन्तु हमारे प्रदेश मे शिक्षा के परम्परागत स्तर ही प्रचलित हैं। वे इस प्रकार हैं

(१) प्राइमरी स्तर—इस स्तर मे ५ कक्षाएँ आती हैं।

(२) जूनियर हाई स्कूल स्तर—६, ७ तथा ८ वी कक्षाएँ।

(३) माध्यमिक स्तर—९ वी तथा १० वी कक्षाएँ।

(४) उच्चतर माध्यमिक स्तर ११ वी तथा १२ वीं कक्षाएँ।

(५) विश्वविद्यालय स्तरीय शिक्षा—प्रथम डिग्री कोर्स, मास्टर डिग्री कोर्स, अनुसन्धान कार्य आदि।

परन्तु अर्थशास्त्र का शिक्षण माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक एव उच्च स्तरो पर होता है। जूनियर हाई स्कूल स्तर पर सामाजिक अध्ययन नामक विषय के अन्तर्गत अर्थशास्त्र की पाठ्य-वस्तु का समावेश किया जाना चाहिए, इससे छात्रो मे अर्थशास्त्र के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए एक प्रकार से पृष्ठ-भूमि तैयार हो जायगी। इस प्रकार की पृष्ठ भूमि से वे उसकी पाठ्य वस्तु को समझने मे समर्थ होगे। इस स्तर के बालको का पर्याप्त मात्रा मे मानसिक विकास हो जाता है। यद्यपि वे सूक्ष्म चिन्तन के योग्य नही होते परन्तु सत्य को समझने तथा सामान्यीकरण करने के लिए तत्पर रहते हैं। दूसरे, इस सामग्री के समावेश के अभाव मे सामाजिक अध्ययन का शिक्षण भी निरर्थक है। अतः जूनियर स्तर पर अर्थशास्त्र की पाठ्य-वस्तु का समावेश अत्यन्त आवश्यक है, क्योकि इसके बिना वे मानवीय आर्थिक स्तर को समझने मे सफल नही हो सकेंगे।

जूनियर हाई स्कूल स्तर पर विषय का प्रस्तुतीकरण—इस स्तर के छात्र किशोरावस्था के निकट पहुँचने लगते हैं। उनकी स्मरण-शक्ति, अनुभव, तर्क तथा निर्णय-शक्तियो का पर्याप्त मात्रा मे विकास हो जाता है। इस स्तर के छात्र वास्तविकता मे अधिक आस्था रखते हैं। वे उसी बात को ग्रहण करते हैं जो *उपयोगी* होती हैं। इस स्तर के छात्रो का *व्यावहारिक ज्ञान भी बढ जाता* है। अत इन मानसिक विशिष्टताओ को ध्यान मे रखकर अर्थशास्त्र की पाठ्य-वस्तु का प्रस्तुतीकरण किया जाय, तभी लाभप्रद होगा। इस स्तर पर अर्थशास्त्र के प्रस्तुतीकरण के निम्नलिखित उद्देश्य होने चाहिए।

(१) *अर्थशास्त्र की पाठ्य-वस्तु का सूचनात्मक ज्ञान प्रदान करना।*

(२) छात्रो को स्थानीय आर्थिक जीवन की विशेषताओ से परिचित कराना।

(३) इसके ज्ञान से छात्रो को मानवीय सम्बन्धो या लगावो को समझने के लिए *प्रोत्साहित करना।*

(४) छात्रो को अपने स्वय के आर्थिक जीवन की आवश्यकताओ से परिचित कराना तथा उनकी प्राप्ति के साधनो का सक्षिप्त ज्ञान प्रदान करना।

(५) स्थानीय प्रादेशिक एव राष्ट्रीय आर्थिक समस्याओ का सक्षिप्त परिचय प्रदान करना।

जूनियर स्तर की पाठ्य-वस्तु

जैसा कि हम ऊपर वर्णन कर चुके हैं कि अर्थशास्त्र का इस स्तर पर एक पृथक विषय के रूप मे अध्ययन नही करना चाहिए, वरन् उसके आधारभूत सिद्धान्तो का सामाजिक अध्ययन नामक विषय के अन्तर्गत समावेश होना चाहिए। इस स्तर पर निम्नलिखित बातो का शिक्षण होना चाहिए :

(१) अर्थशास्त्र का अर्थ।

(२) स्थानीय आर्थिक समस्याओ का व्यावहारिक ज्ञान।

(३) राष्ट्रीय आर्थिक समस्याओ का सूचनात्मक ज्ञान।

(४) कृषि।

(५) घरेलू उद्योग-धन्धे।

(६) सहकारी क्रियाएँ।

(७) डाक व्यवस्था का ज्ञान।

(८) मनोरजन के साधन।

(९) आवागमन के साधनो की जानकारी।

(१०) श्रमिको एव किसानो की समस्याओ का प्रारम्भिक ज्ञान।

(११) प्रायोगिक कार्य—वन-महोत्सव, विभिन्न योजनाएँ—हमारा ग्राम, भोजन आदि।

इस स्तर के लिए अर्थशास्त्र की पृथक पाठय-पुस्तकें नही होगी वरन् सामाजिक अध्ययन की पुस्तको मे इनका विवरण दिया जायगा। इस स्तर पर अथशास्त्र की शिक्षा विभिन्न क्रियाओ के द्वारा प्रदान की जानी चाहिए। अर्थशास्त्र का शिक्षक इसके प्रस्तुतीकरण के लिए निम्नलिखित शिक्षण-पद्धतियो का प्रयोग कर सकता है

(१) योजना पद्धति
(२) समस्या पद्धति
(३) पाठ्य-पुस्तक पद्धति

शिक्षण रीतियां तथा सहायक सामग्री—अर्थशास्त्र का शिक्षक अधोलिखित रीतियो एव साधनो का प्रयोग कर सकता है

(१) चित्र
(२) मानचित्र
(३) चार्ट
(४) रेडियो
(५) नाटकीय रीति
(६) प्रश्न रीति
(७) कथन रीति
(८) चल-चित्र

माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र का प्रतिपादन—इस स्तर पर बालक किशोरावस्था मे पदार्पण करता है। उसमे समस्त दृष्टिकोणो से पर्याप्त परिवर्तन आ जाता है। उसका मानसिक, शारीरिक, सामाजिक, नैतिक, शब्द-ज्ञान आदि सभी का विकास होता है। इस स्तर का बालक स्वय क्रिया करके किसी निर्णय पर पहुँचना चाहता है। इस स्तर के छात्रो का मानसिक स्तर परिपक्वता की दृष्टि से अर्थशास्त्र-अध्ययन के लिए उपयुक्त हो जाता है। इस स्तर पर धारणाएँ बनाने के लिए उसमे तत्परता की भावना आ जाती है। इस कारण इस स्तर को नियमीकरण की अवस्था भी कहते हैं। वह अपने व्यक्तित्व को प्रदर्शित करना चाहता है, इसके लिए समाज से वह अपनी स्वीकृति करवाना चाहता है। इन समस्त तथ्यो को ध्यान मे रखकर हो हमे अर्थशास्त्र *का प्रस्तुतीकरण करना चाहिए। इस स्तर पर अर्थशास्त्र का अस्तित्व एक* पृथक विषय के रूप मे होना है। इसके प्रस्तुतीकरण के निम्नलिखित उद्देश्य होने चाहिए ·

(१) छात्रो को आर्थिक पदो, सिद्धान्तो, नियमो, प्रवृत्तियो आदि से अभिहित कराना।

(२) बालको को आर्थिक जीवन के विकास से परिचित कराना।

(३) बालको को भारतीय आर्थिक जीवन की विशेषताओ एव विषमताओ की जानकारी कराना ।

(४) बालको मे अर्थशास्त्र के अध्ययन के लिए रुचि उत्पन्न करना तथा उनकी चिन्तन, तर्क, स्मरण एवं निर्णय शक्तियो का विकास करना ।

(५) बालको को दैनिक जीवन मे अर्थशास्त्र के महत्त्व से परिचित कराना ।

(६) राष्ट्र एव मानव समाज के प्रति निष्ठा का भाव उत्पन्न करना ।

(७) छात्रो को भारतीय उत्पादन, वितरण, उपभोग एव विनिमय की वधियो से परिचित कराना ।

(८) आर्थिक जीवन के व्यावहारिक पक्ष की शिक्षा प्रदान करके उनको व्यावहारिक जीवन की आर्थिक समस्याओ के समाधान-हेतु योग्य बनाना ।

(९) छात्रो मे वैज्ञानिक एव उदार दृष्टिकोण उत्पन्न करना जिससे वे सजग नागरिक की भाँति राष्ट्र की समस्याओ, नव-निर्माण योजनाओ आदि का विवेचन कर सकें तथा उनके समाधान एव उन्नति के लिए अपने को सहायक के रूप मे प्रस्तुत कर सके ।

(१०) छात्रो मे कुशल उपभोक्ता के गुणा का विकास करना ।

(११) छात्रो को अर्थशास्त्र के अध्ययन के द्वारा इस योग्य बनाना जिससे वे अपने राष्ट्र की आय एव रहन-सहन के स्तर मे वृद्धि कर सकें ।

(१२) छात्रो मे सानुबन्धित अध्ययन करने की योग्यता उत्पन्न करना ।

पाठ्य-पुस्तकें—इस स्तर पर पाठ्य-पुस्तको का प्रयोग करना चाहिए । इसके लिए जो पाठ्य-पुस्तकें निर्धारित की जाएँ उनको रचना एव चयन के सिद्धान्तो की कसौटी पर परखने के पश्चात् निर्धारित करना चाहिए । इस स्तर पर बहु पाठ्य-पुस्तको का प्रयोग लाभकारी सिद्ध होगा । किन्तु इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इन पुस्तको मे अमूर्त विचारों का बाहुल्य न हो ।

शिक्षण पद्धतियाँ—अध्याय ४ मे अर्थशास्त्र-शिक्षण की शिक्षण-पद्धतियो का विस्तृत विवेचन किया गया है । उनमे से कुछ पद्धतियाँ इस स्तर के लिए बहुत उपयोगी हैं, जिनकी सूची नीचे दी जा रही है :

(१) योजना-पद्धति
(२) समस्या-पद्धति
(३) व्याप्तिमूलक-निगमन पद्धति
(४) विश्लेषण-सश्लेषण पद्धति
(५) प्रयोगशाला-पद्धति
(६) समाजीकृत अभिव्यक्ति पद्धति
(७) निरीक्षित अध्ययन पद्धति
(८) पाठ्य-पुस्तक पद्धति

शिक्षण-रीतियां एवं सहायक-सामग्री—अध्याय ५ तथा ६ मे जितनी रीतियां तथा साधनो का विवेचन किया गया है वे इस स्तर के लिए बहुत उपयुक्त हैं । उनकी उपयुक्तता एव महत्ता के अनुसार उनकी सूची नीचे दी जा रही हैं .

(१) प्रश्न रीति
(२) कथन रीति
(३) उदाहरण रीति
(४) निरीक्षण रीति
(५) परीक्षा रीति
(६) कार्य निर्धारण रीति
(७) अभ्यास रीति
(८) कहानी कथन रीति
(९) नाटकीय रीति

साहायक सामग्री—

(१) चित्र
(२) रेखाचित्र एव रेखाकृतियाँ
(३) मानचित्र
(४) ग्राफ
(५) चार्ट
(६) रेडियो
(७) चल-चित्र
(८) समाचार-सम्बन्धी फिल्म
(९) समाचार पत्र एव अन्य पत्रिकाएँ
(१०) मॉडल ।

इस स्तर पर सानुबन्धित रूप से पाठ्य-वस्तु का प्रस्तुतीकरण किया जाना चाहिए । अर्थशास्त्र के शिक्षक को सामाजिक तथा भौतिक विज्ञानो से अर्थशास्त्र का समन्वय स्थापित करना चाहिए । यह समन्वय किस प्रकार स्थापित किया जाय, इसके विषय मे अगले अध्याय मे विस्तृत विवेचन किया जायगा ।

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र का प्रतिपादन—इस स्तर में परम्परागत प्रणालो के अनुकूल ११वी तथा १२वी कक्षाएँ आती हैं । इन छात्रों का मानसिक स्तर परिपक्व होता है । वे आर्थिक नियमो का सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवेचन एव उनके अनुकूल आचरण करने योग्य होते हैं । वे प्रत्येक तथ्य को क्यो, कब, कैसे आदि प्रश्नो के आधार पर ग्रहण करना चाहते हैं । उनका मानसिक एवं सावेगिक विकास पर्याप्त माता मे उच्च होता है । वे राष्ट्र एव

मानव समाज की आर्थिक समस्याओ, विषमताओ, योजनाओ आदि मे पूर्ण सक्रिय रहकर भाग लेना चाहते हैं। इन सब तथ्यो को ध्यान मे रखकर अर्थशास्त्र का प्रतिपादन किया जाना चाहिए, तभी वह लाभप्रद होगा।

उद्देश्य—इस स्तर पर अर्थशास्त्र का प्रस्तुतीकरण अधोलिखित उद्देश्यो के अनुसार किया जाना चाहिए

(१) छात्रो को अर्थशास्त्र के विभिन्न नियमो एव सिद्धान्तो की सैद्धान्तिक एव व्यावहारिक विवेचना करने योग्य बनाना।

(२) छात्रो को कुशल उत्पादक एव उपभोक्ता बनाना।

(३) व्यावहारिक जीवन की आर्थिक समस्याओ के हल करने के योग्य बनाना।

(४) उनका आर्थिक दृष्टिकोण व्यापक बनाना जिससे वे मानव-समाज के कल्याण के लिए चिन्तन एव कार्य कर सकें।

(५) भारतीय आर्थिक जीवन की समस्याओ एव विषमताओ को दूर कर सकने की क्षमता उत्पन्न करना।

(६) अर्थशास्त्र के सिद्धान्तो को व्यवहार रूप मे लाने की क्षमता उत्पन्न करना।

शिक्षण पद्धतियाँ एव रीतियाँ—इस स्तर के प्रस्तुतीकरण के लिए अर्थशास्त्र के शिक्षक को अधोलिखित पद्धतियो एव रीतियो का प्रयोग करना चाहिए :

(१) व्याख्यान पद्धति
(२) समाजीकृत अभिव्यक्ति पद्धति
(३) निरीक्षित अध्ययन पद्धति
(४) समस्या पद्धति
(५) आगमन-निगमन पद्धति
(६) विश्लेषण-संश्लेषण पद्धति

रीतियाँ—

(१) प्रश्न रीति
(२) कथन-रीति
(३) निरीक्षण रीति
(४) कार्य-निर्धारण रीति
(५) परीक्षण रीति
(६) उदाहरण रीति

इस स्तर पर पाठ्य-पुस्तको का प्रयोग किया जाना आवश्यक है। ये पुस्तकें समीक्षात्मक ढग से लिखी हुई होनी चाहिए जिससे उनके अध्ययन करने से छात्रो की आलोचनात्मक प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिल सके।

(१) मानचित्र
(२) रेखाचित्र तथा रेखाकृतियाँ
(३) ग्राफ
(४) चार्ट
(५) पत्र तथा पत्रिकाएँ (Journals and Periodicals)
(६) समाचार सम्बन्धी फिल्म
(७) चल चित्र
(८) तालिकाएँ एवं सारिणी।

इस स्तर पर भी विषय का प्रस्तुतीकरण सानुबन्धित रूप से किया जाएगा। इस स्तर का समन्वय माध्यमिक कक्षाओं की अपेक्षा अधिक होगा।

प्रश्न

1 What principles would you bear in mind in the presentation of Economics at different stages ? Discuss
विभिन्न स्तरों पर अर्थशास्त्र का प्रस्तुतीकरण करते समय आप किन सिद्धान्तों को ध्यान में रखेंगे ? उल्लेख कीजिए।

2 What are the aims of teaching Economics at various stages of the school ?
विद्यालय के विभिन्न स्तरों पर अर्थशास्त्र शिक्षण के क्या उद्देश्य हैं ?

अध्याय १०

अर्थशास्त्र का अन्य विषयों से सह-सम्बन्ध

(Correlation of Economics with other Subjects)

सह-सम्बन्ध की आवश्यकता—समस्त ज्ञान अखण्ड है। उसको पृथक-पृथक भागो मे विभाजित नही किया जा सकता, परन्तु पठन-पाठन की सुविधा के लिए मानव ने उसका वर्गीकरण कर लिया है और प्रत्येक वर्ग को एक विषय कहा है। परन्तु विषय ज्ञान का विभाजन नहीं है, वरन् ज्ञान के अध्ययन के दृष्टिकोण का अन्तर-मात्र है। फिर भी विषय का अपना एक उद्देश्य तथा एक विशिष्ट दृष्टिकोण होता है। उसके उच्च आदर्श होते हैं, जिनको प्राप्त करने के लिए वह प्रयत्नशील रहता है तथा उसकी एक श्रेष्ठ परम्परा है जिसका वह आदर करता है। अतएव किसी विषय को पढाने मे ज्ञान के अतिरिक्त जब तक छात्र इन बातो को ग्रहण नही करता तब तक उस विषय का शिक्षण अपूर्ण रहता है।

बालक का मस्तिष्क पृथक-पृथक विभागो का मिश्रण नही है, वरन् अविभाज्य इकाई है। समस्त विषयो की सामग्री उसी एक मस्तिष्क द्वारा ग्रहण की जाती है। अतएव मस्तिष्क भिन्न-भिन्न अनुभवो का पारस्परिक सम्बन्ध, तुलना तथा मिश्रण आदि करके उन्हे ग्रहण करता है। अनुभव करने के साथ ही यह सम्बन्धी-करण-क्रिया प्रारम्भ हो जाती है, और जो भी ज्ञान हमारे मस्तिष्क मे सचित होता है, वह इन्ही सम्बन्धो का ज्ञान है। हमारा मस्तिष्क कुछ ऐसे तत्वों से निर्मित है जो बिना इस सम्बन्ध-स्थापना के रह ही नही सकते। अत मानव मस्तिष्क स्वभावत. एक विषय के अनुभवो को दूसरे विषय के अनुभवो के साथ सम्बन्ध स्थापित करने मे लगा रहता है। इस प्रकार ज्ञान की अखण्डता, मस्तिष्क की अविभाज्यता एव सम्बन्धी-करण-क्रिया को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि एक विषय का दूसरे विषयो से सम्बन्ध स्थापित करना अत्यन्त आवश्यक है। गुयाट के शब्दो मे "घटनाओ तथा विचारो का मानस-पटल पर स्थायी एव उपयोगी प्रभाव तभी पड़ता है जब

मस्तिष्क उन्हे अन्य आगन्तुक घटनाओ एव विचारो के साथ व्यवस्थित एव सम्बद्ध करता है।' अतएव यदि अध्यापक स्वय इन सम्बन्धो का ध्यान रखे तो बालको को विषयो के समझने म बडी सुगमता एव सरलता हो जाती है।

शिक्षा मे सह-सम्बन्धो ऐतिहासिक पृष्ठभूमि—शिक्षा म समन्वय प्राचीन काल से चला आ रहा है। प्राचीन काल मे शिक्षा जीवन केन्द्रित थी परन्तु सह सम्बन्ध का आधुनिक रूप १५० वर्ष पूर्व यूरोप म विकसित हुआ। यह रूप प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री हरबार्ट के दार्शनिक सिद्धान्तो से प्रारम्भ हुआ। हरबार्ट महोदय के अनुसार शिक्षा का मुख्य ध्येय चरित्र निर्माण करना है। उसने कहा कि यह उद्देश्य निर्देशात्मक शिक्षण के माध्यम स प्राप्त किया जा सकता है। निर्देश के द्वारा विचार-चक्र निर्मित किया जायगा और शिक्षा चरित्र का निर्माण करेगी। वह शिक्षा द्वारा रुचियो की वृद्धि विकास तथा प्रयोग पर बल देता है। रुचियो का विकास ज्ञान के द्वारा किया जा सकता है। इसलिए उसने ज्ञान की प्राप्ति पर अधिक बल दिया। इसके लिए उसने विभिन्न विषयो का ज्ञान देने के लिए कहा, जिससे छात्रो के विचारो म वृद्धि हो। जैसे हमारे विचार होते हैं वैसे ही हमारे काय होते हैं। इस प्रकार उसका विचार चक्र पूण होता है जो कि चरित्र निमाण करने मे सहायक है। हरबाट ने सर्वप्रथम स्कूल के पाठ्य विषयो मे सह-सम्बन्ध स्थापित करन के लिए कहा। उसका कथन है कि पाठ्यक्रम म विषयो को इस प्रकार व्यवस्थित करना चाहिए जिससे एक विषय के शिक्षण मे दूसरे विषयो का ज्ञान सहायक हो सके। इसको उसने सह सम्बन्ध के सिद्धान्त (Principle of Correlation) के नाम से पुकारा। इसका आधार उसका पूर्वानुवर्ती ज्ञान का सिद्धान्त (Doctrine of Apperception) था। इस सिद्धान्त के अनुसार समस्त नवीन विचार तभी ग्राह्य हो सकते हैं, जब उनका सम्बन्ध हमारी चेतना म विद्यमान विचारो स स्थापित किया जाता है, अर्थात् हम दूसरे शब्दो म कह सकते हैं कि जब हमारे पूर्वानुवर्ती विचारो से नवीन विचारो को सम्बन्धित कर दिया जायगा तभी नवीन ज्ञान की प्राप्ति होगी। इसी पूर्व ज्ञान के सहारे शिक्षक को नवीन ज्ञान म छात्रो की रुचि तथा ध्यान को केन्द्रित करना चाहिए, तभी नवीन ज्ञान स्थायी हो सकेगा। उसकी पंच-पद प्रणाली म प्रथम पद प्रस्तावना है जो पूर्व ज्ञान पर आधारित होता है तथा जिसका मुख्य उद्देश्य नवीन ज्ञान के लिए छात्रो को उनके पूर्व ज्ञान के आधार पर तैयार करना है। उनका कथन है कि पाठ्य-क्रम के विभिन्न विषयो को इस प्रकार सम्बन्धित करके पढाया जाय जिससे बालको के मस्तिष्क पर उनका समवेत प्रभाव पड।

हरबाट के शिष्य जिलर (Ziller) न इस सिद्धान्त को और अधिक विस्तृत करके केन्द्रीकरण का सिद्धान्त निरूपित किया। इस सिद्धान्त के अनुसार किसी एक विषय को शिक्षा का केन्द्र बिन्दु बनाकर अन्य विषयो को उसी के आधार

पर शिक्षण दिया जाय। उसने समस्त विषयो की शिक्षा देने के लिए 'इतिहास' को केन्द्रीय विषय माना। परन्तु कर्नल पार्कर ने 'प्राकृतिक विज्ञान अध्ययन' को केन्द्रीय विषय बनाया जिसके माध्यम से अन्य विषयो का ज्ञान प्रदान करना चाहिए। डी० गार्मो ने शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यावहारिक कुशलता बताया। इसको प्राप्त करन के उद्देश्य से उन्होने 'भूगोल तथा अर्थशास्त्र' को केन्द्रीय विषय माना। ड्यू्वी के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य सामाजिक कुशलता प्राप्त करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उसने शिक्षालय को जीवन की ठोस परिस्थितियो से सम्बन्धित करने के लिए कहा अर्थात् शिक्षालय मे उन क्रियाओ को व्यवस्थित किया जो जीवन से सम्बन्धित हैं। हम दूसरे शब्दो मे कह सकते हैं कि उसके द्वारा 'शिक्षालय व समाज के जीवन' को केन्द्रीय विषय माना गया है। गाधी जी की बेसिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास तथा आत्म निर्भरता का विकास करना था। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उन्होने 'हस्तकला (Craft) को केन्द्रीय विषय माना।

ड्यू्वी ने इस प्रकार की सम्बद्धता को सामजस्यीकरण (Integration) के नाम से पुकारा। ड्यू्वी के सामजस्यीकरण मे बालक स्वय अनुभवो म सम्बन्ध स्थापित करता है। परन्तु हरबार्ट के सह सम्बन्ध के सिद्धान्त म शिक्षक द्वारा सम्बन्ध स्थापित किया जाता है।

सह सम्बन्ध के उद्देश्य—अर्थशास्त्र की शिक्षा मे सह-सम्बन्ध अधोलिखित उद्देश्यो से स्थापित किया जाता है

(१) सह-सम्बन्ध का प्रमुख उद्देश्य यह है कि इसके स्थापन से पाठ्य-क्रम के भार को कम किया जाता है' सभ्यता एव सस्कृति के विकास ने विभिन्न विषयो को जन्म दिया है। इसलिए स्कूल म पाठय क्रम म पढाये जाने वाले विषयो की सख्या बहुत बढ गई है, जिनका अध्यापन समन्वित शिक्षा के अभाव मे बहुत कठिन है इसलिए पाठ्य-क्रम को सरल बनाने के लिए विभिन्न विषयो का दूसरे से सह-सम्बन्ध स्थापित करना आवश्यक हो गया है। अत अर्थशास्त्र का शिक्षण दूसरे विषयों के सह-सम्बन्ध से किया जाना चाहिए।

(२) *समन्वित शिक्षा का दूसरा उद्देश्य पाठ म रुचि जाग्रत करना है।* अत पाठ म रोचकता उत्पन्न करने के लिए अर्थशास्त्र का दूसरे विषयो से सह-सम्बन्ध स्थापित करना अति आवश्यक है। इस प्रकार सम्बन्ध स्थापित करने से बालक अपनी रुचियो के अनुसार शिक्षा ग्रहण करने म समर्थ होगा और प्राप्त किया हुआ ज्ञान उसके लिए स्थायी एव उपयोगी सिद्ध होगा।

(३) सह-सम्बन्ध का उद्देश्य यह भी है कि इसके द्वारा छात्रो एव शिक्षको के समय की बचत की जाती है, क्योंकि छात्र तो समन्वित शिक्षा द्वारा कम स कम समय म अधिक से अधिक तथ्यो का ज्ञान प्राप्त कर लेता है। दूसरे

शिक्षक को यह लाभ है कि बहुत से विषयो मे एक से प्रकरण होते हैं, वह उनको पृथक-पृथक विषयो के अन्तर्गत न पढाकर समन्वित रूप से पढा सकता है। इस प्रकार उसके समय की भी बचत हो जाती है। उदाहरणार्थ—भूगोल, इतिहास, नागरिकशास्त्र, कृषिशास्त्र, भौतिकशास्त्र एव रसायनशास्त्र से सम्बन्धित पाठ्य-विषयो की जानकारी अर्थशास्त्र के बहुत से प्रकरणो मे अनिवार्य है। जैसे, अर्थशास्त्र तथा नागरिकशास्त्र मे बालक ग्राम-पंचायत, ग्रामीण समस्याएँ आदि का अध्ययन करते हैं। यदि शिक्षक इनको एक विषय पढाते समय दूसरे विषयो के अनुसार उनके महत्व को स्पष्ट कर दे तो पर्याप्त समय की बचत कर सकता है।

(४) समन्वय के द्वारा ज्ञान की अखण्डता का ज्ञान कराया जा सकता है। जिस प्रकार प्राकृतिक दशाओ मे विभिन्नता होते हुए भी उनमें एकता पाई जाती है, उसी प्रकार ज्ञान-राशि मे अनेकत्व मे एकता का सिद्धान्त छिपा हुआ है। इस एकता के ज्ञान का बोध कराने के लिए समन्वित शिक्षा आवश्यक है। इस सिद्धान्त को ध्यान मे रखकर अर्थशास्त्र का शिक्षण दूसरे विषयो की शिक्षा से पृथक न करके समन्वित रूप से करना चाहिए।

(५) सह-सम्बन्ध का एक मुख्य उद्देश्य यह है कि इसके द्वारा छात्रो को व्यावहारिक बनाया जाना है। यदि अर्थशास्त्र की शिक्षा का अन्य विषयो के साथ सम्बन्ध स्थापित नही किया गया तो उसकी शिक्षा का व्यावहारिक पक्ष अछूता ही रह जायगा। इसलिए अर्थशास्त्र-शिक्षण का अन्य विषयो के साथ समन्वय स्थापित करना अति आवश्यक है। ड्यूवी का मत है कि शिक्षा ही जीवन है। जब शिक्षा जीवन है तो उसको जीवन की ठोस परिस्थितियो से सम्बन्धित करना चाहिए। इसलिए उसने शिक्षालय मे जीवन की ठोस परिस्थितियो को शिक्षा प्रदान करने के लिए आधार बनाया था। इन्ही के द्वारा समस्त विषयो की शिक्षा प्रदान करने के लिए कहा। अत अर्थशास्त्र-शिक्षण का जीवन की व्यावहारिक स्थितियो से सम्बन्धित होना अत्यन्त आवश्यक है।

(६) सह-सम्बन्ध के द्वारा छात्रो मे सामाजिक गुणो अर्थात् सहयोग, सहकारिता, उदारता, सहिष्णुता, सत्य तथा असत्य की पहिचान, प्रेम, सहानुभूति, नेतृत्व आदि का विकास किया जाता है। इसलिए अर्थशास्त्र का अन्य विषयो से समन्वय स्थापित किया जाय, जिससे छात्रो मे उपर्युक्त गुणो का विकास हो सके और उनमे आर्थिक नागरिकता के गुण उत्पन्न किए जा सकें।

(७) समन्वय के द्वारा सकीर्ण विशिष्टता से छात्रो को बचाया जा सकता है। विशिष्ट अध्यापक प्रणाली मे प्रत्येक अध्यापक अपने-अपने विषय को उच्च एव महत्त्वपूर्ण बताता है और उसके अध्ययन पर अधिक बल देता है। इससे

ज्ञान की एकता का नाश होता है तथा छात्र भी भूल मे पड जाते हैं कि किस विषय को अधिक महत्त्व दिया जाय। इन दोषो से बचने के लिए समन्वय का होना परम आवश्यक है। *अतः अर्थशास्त्र-शिक्षण मे सदैव दूसरे विषयो से* सानुबन्ध स्थापित करना चाहिए।

(८) सह-सम्बन्ध छात्रो को मानवीय सम्बन्धो के समझने मे बहुत सहायता पहुँचाता है। अर्थशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है। यदि इसका दूसरे सामाजिक विज्ञानो से सम्बन्ध स्थापित नही किया गया तो वह अकेला मानवीय सम्बन्धो को स्पष्ट नही कर सकता। इसलिए उसका अन्य विषयो से सम्बन्ध स्थापित करना आवश्यक है। जब तक छात्रो को यह ज्ञात नही होगा कि विज्ञान ने किस प्रकार आर्थिक जीवन को प्रभावित किया है, तब तक वे मानवीय सम्बन्धो को ठीक प्रकार से नही समझ पायेंगे। इसको स्पष्ट करने के लिए हमे प्राकृतिक विज्ञानो से अर्थशास्त्र का सम्बन्ध स्थापित करना चाहिए।

सह-सम्बन्ध के प्रकार—(१) शीर्षात्मक सह-सम्बन्ध (Vertical Correlation)।

(२) अनुप्रस्थीय सह-सम्बन्ध (Horizontal Correlation)।

(३) जीवन से सह-सम्बन्ध (Correlation with Life)।

(१) शीर्षात्मक सह-सम्बन्ध—इसके अन्तर्गत एक ही विषय के विभिन्न अंगो मे समन्वय स्थापित किया जाता है। *उदाहरणार्थ—अर्थशास्त्र के विभिन्न अंगो जैसे, उत्पत्ति, उपभोग, वितरण, विनिमय तथा राजस्व आदि मे सम्बन्ध* स्थापित किया जाय। यदि शिक्षक किसी वस्तु की उत्पत्ति के विषय मे अध्यापन कर रहा है तो वह उसके वितरण एव उपभोग के विषय मे बताकर पाठ को रोचक बना सकता है। इस प्रकार वह छात्रो की रुचि उत्पन्न करके पाठ को सरल बना सकता है।

(२) अनुप्रस्थीय सह-सम्बन्ध—इसके अनुसार पाठ्य-क्रम के विभिन्न विषयो का एक-दूसरे से सम्बन्ध स्थापित किया जाता है। इस प्रकार का सह-सम्बन्ध दो रीतियों से स्थापित किया जा सकता है। वे इस प्रकार हैं—

(अ) आकस्मिक सह-सम्बन्ध (Incidental Correlation)।

(ब) व्यवस्थित सह सम्बन्ध (Planned Correlation)।

(अ) आकस्मिक सह-सम्बन्ध—इस प्रकार के समन्वय मे दैनिक शिक्षण को रोचक तथा व्यापक बनाने के लिए आवश्यक्तानुसार अन्य विषयो मे पठित सामग्री का प्रयोग किया जाता है जिससे पाठ को समझने मे विशेष सहायता मिलती है और समस्त ज्ञान की एकता का बोध होता है। इसके लिए अध्यापक कोई पूर्व-व्यवस्था नहीं करता, वरन् पढाते समय किसी बिन्दु या प्रकरण को अधिक व्यापक दृष्टि से सरल बनाने के लिए दूसरे विषयो की सामग्री का

प्रयोग कर लेता है । अर्थशास्त्र पढाते समय यदि भूगोल का आकस्मिक प्रसंग आ जाता है और यह आवश्यकता प्रतीत होती है कि भूगोल के उस अंश का ज्ञान कराया जा सकता तो भूगोल के उस अंश का ज्ञान कराना आकस्मिक समन्वय कहलायेगा । उदाहरणार्थ—यदि शिक्षक चीनी के उत्पादन के विषय मे अध्यापन कर रहा है तो वह इसके लिए आवश्यक कच्चे माल जैसे गन्ने का भौगोलिक विवरण प्रस्तुत कर सकता है—गन्ने के लिए मिट्टी, जलवायु वर्षा या पानी आदि ।

(ब) व्यवस्थित सह-सम्बन्ध—इसमे विभिन्न विषयो की सामग्री को ऐसे क्रम से चुना जाता है कि एक विषय के शिक्षण से अन्य विषयो का निकट सम्बन्ध रहे, जो सामग्री एक विषय मे पढाई जाती है उसी का न्यूनाधिक अन्य विषयो म प्रयोग हो, परन्तु दृष्टिकोण की भिन्नता के साथ । ऐसे सम्बन्ध को आयोजित या व्यवस्थित सह-सम्बन्ध कहते हैं । जिस शिक्षालय मे कक्षाध्यापक-प्रणाली प्रचलित है वहाँ इस प्रकार के समन्वय के स्थापित करने मे कोई कठिनाई नही होती । परन्तु जहाँ विशेषज्ञ-शिक्षण-प्रणाली है वहाँ इसके स्थापित करने मे असुविधा उत्पन्न होती है । वर्तमान शिक्षा जगत मे व्यवस्थित सह-सम्बन्ध का प्रयोग अधिक उपयोगी माना जाता है ।

(स) जीवन से सह-सम्बन्ध—हर्बर्ट स्पेन्सर महोदय के अनुसार शिक्षा का मुख्य अभिप्राय छात्रो को भावी जीवन के लिए तैयार करना है । अत. इस उद्देश्य की प्राप्ति हम तभी कर सकते है जब शिक्षालय की शिक्षा का बाह्य-जगत् के क्रिया-कलापो से सम्बन्ध स्थापित किया जायगा । अर्थशास्त्र को जीवन से सम्बन्धित करने का मुख्य अभिप्राय यह है कि उसके नियमो, सिद्धान्तो एव प्रवृत्तियो की शिक्षा बाह्य जगत् के प्रसगो के द्वारा दी जाय जिससे वे उनका प्रयोग व्यावहारिक जीवन मे कर सकें ।

अर्थशास्त्र का अन्य विषयो से सह-सम्बन्ध—अर्थशास्त्र के तथ्यो का सगठन इस प्रकार किया जाय कि उनमे शीर्षात्मक एव अनुप्रस्थीय सम्बन्ध स्थापित हो सके । अर्थशास्त्र का विद्यालय के अन्य विषयो के साथ का क्या सम्बन्ध है, इसी को देखना हमारा यहाँ मुख्य उद्देश्य है ।

अर्थशास्त्र तथा नागरिक शास्त्र
(Economics and Civics)

नागरिक शास्त्र सुखद सामाजिक जीवन की कला तथा नागरिको के कर्त्तव्यो व अधिकारो का ज्ञान प्रदान करता है जबकि अर्थशास्त्र मनुष्य की आर्थिक क्रियाओ का अध्ययन करता है। यह शास्त्र समाज के उस अग का वर्णन करता है जिसमे धन की उत्पत्ति, वितरण, उपभोग, विनिमय तथा राजस्व सम्बन्धी क्रियाएँ निहित रहती हैं । इस प्रकार दोनो ही शास्त्र मानव

का अध्ययन करते है ; परन्तु उनके क्षेत्र भिन्न-भिन्न हैं। एक नागरिकता से सम्बन्धित विषयो तथा दूसरा मनुष्य के अर्थ-सम्बन्धी क्रिया कलापो की व्याख्या करता है। इस विभिन्नता के होते हुए भी दोनो शास्त्र एक दूसरे के सहयोगी हैं। जब अर्थशास्त्र धन की उत्पत्ति तथा वितरण का विवेचन करता है तो उसे नागरिक शास्त्र की आवश्यकता पडती है। नागरिक शास्त्र इस बात के लिए कानून बनाता है कि नागरिक पर कौन कौन से कर लगाए जायँ तथा उनको किस विधि से वसूल किया जाय ? दूसरी तरफ अर्थशास्त्र यह बताता है कि मनुष्य की कुछ मौलिक आवश्यकताएँ होती हैं। उनकी पूर्ति होना परम आवश्यक है। जिस समाज मे इन आवश्यकताओ की पूर्ति नही की जाती वहाँ सफल नागरिकता असम्भव है। इस प्रकार दोना शास्त्र एक दूसरे की न्यूनता के पूरक है। अर्थशास्त्र नागरिकता को सफल बनाने के लिए वितरण तथा उत्पादन का उपयोग उपयुक्त ढग से करने पर बल देता है और उसको समाजवादी अर्थव्यवस्था के रूप मे परिवर्तित करता है जिससे समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता एव क्षमता के अनुसार उत्पादन एव उपभोग कर सके। इसके साथ ही वह यह भी बताता है कि उत्पादन, वितरण एव उपभोग मानव-हित को ध्यान मे रखकर किया जाना चाहिए। यदि अर्थशास्त्र का शिक्षक इन दोनो शास्त्रो का शिक्षण समन्वित रूप से करे तो वह छात्रो मे सफल नागरिकता के गुणो का विकास कर सकता है। इसके साथ ही वह अपने राष्ट्र की आर्थिक उन्नति के लिए छात्रो को सजग एव तत्पर नागरिक के रूप मे परिवर्तित कर सकता है, जिसमे राष्ट्र को आर्थिक दृष्टि से पर्याप्त लाभ होगा। अर्थशास्त्र का नागरिक शास्त्र के साथ दोनो प्रकार की विधियो से सह-सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है। नीचे कुछ प्रकरण दिए जा रहे हैं जिनमे अर्थशास्त्र का शिक्षक नागरिक शास्त्र से समन्वय स्थापित कर सकता है :

(१) आर्थिक विकास योजनाएँ
(२) वितरण की समस्या
(३) ब्याज
(४) लगान
(५) मजदूरी
(६) उपभोग

अर्थशास्त्र तथा भूगोल
(Economics and Geography)

भूगोल मे पृथ्वी का अध्ययन किया जाता है अर्थात् विश्व की प्राकृतिक दशाओ, उपज आदि का वर्णन किया जाता है। प्रत्येक राष्ट्र की आर्थिक स्थिति उसकी भौगोलिक स्थितियो पर निर्भर होती है, उदाहरणार्थ—इङ्गलैण्ड को

उसकी भौगोलिक स्थितियो ने एक व्यापारिक राष्ट्र बनाया। इसके अतिरिक्त आधुनिक काल के भूगोल-शास्त्री इस बात पर बल देते हैं कि भूगोल मानव का अध्ययन करना है। इस प्रकार हम कह सकते हैं भूगोल मनुष्य तथा उसकी प्राकृतिक परिस्थितियो का अध्ययन करता है। प्राकृतिक दशा, जलवायु, वन, जीव-जन्तु खनिज-पदार्थ आदि भूगोल मे प्राकृतिक परिस्थितियो के अन्तर्गत गिने जाते हैं, परन्तु अर्थशास्त्र मे इन्ही को भूमि के अन्तर्गत रखा जाता है। अर्थशास्त्र मे इन वस्तुओ के वितरण के विषय मे जानकारी प्राप्त की जाती है। इस प्रकार भूगोल तथा अर्थशास्त्र की विषय-वस्तु मे पर्याप्त साम्य पाया जाता है। इसके अतिरिक्त भूगोल अर्थशास्त्र की शिक्षा के लिए पृष्ठभूमि का काय करता है। उदाहरणार्थ—यदि कोई व्यक्ति किसी स्थान पर कारखाना खोलना चाहता है तो उसे सवप्रथम उस स्थान की भौगोलिक परिस्थितियो का ज्ञान आवश्यक है। इसके अभाव मे वह अपने कार्य को पूर्ण नही कर सकता। इस प्रकार अर्थशास्त्र के शिक्षक का यह परम कर्तव्य है कि वह अर्थशास्त्र का भूगोल के साथ प्रसङ्गानुसार सह-सम्बन्ध स्थापित करे। यदि वह ऐसा नही करेगा तो वह अपने विषय को छात्रो के लिए रोचक एव ग्राह्य नही बना सकता। अर्थशास्त्र का प्रस्तुतीकरण करते समय शिक्षक भूगोल के साथ आकस्मिक एव व्यवस्थित दोनो प्रकार से सह-सम्बन्ध स्थापित कर सकता है। नीचे कुछ प्रकरण प्रस्तुत किए जा रहे हैं जिनमे अर्थशास्त्र का भूगोल से सह-सम्बन्ध स्थापित करना आवश्यक हो जाता है :

(१) भारतीय खनिज पदार्थ
(२) भारतीय वन सम्पत्ति
(३) उद्योग-धन्धो का स्थानीयकरण
(४) भारतीय व्यापार
(५) शक्ति के साधन
(६) आर्थिक जीवन का विकास
(७) उत्पत्ति के साधन—भूमि, श्रम एव पूँजी
(८) भारतीय कृषि
(९) भारतीय पशु-सम्पत्ति
(१०) सिचाई के साधन
(११) यातायात के साधन
(१२) फसलें
(१३) घरेलू उद्योग-धन्धे
(१४) आर्थिक विकास योजनाएँ

अर्थशास्त्र तथा वाणिज्य शास्त्र
(Economics and Commerce)

वाणिज्य शास्त्र मे उद्योग, व्यापार तथा सगठन आदि का अध्ययन किया जाता है। दूसरे शब्दो मे हम कह सकते हैं कि उसके अन्तर्गत उत्पादन से लेकर वितरण तक की समस्त क्रियायें आती हैं। इसके अतिरिक्त इसकी परिधि मे इन क्रियाओ से सम्बन्धित व्यक्ति एव सस्थाओ की कार्य-प्रणाली भी आती हैं। इस प्रकार वाणिज्य शास्त्र का बहुत व्यापक क्षेत्र है। इसमे अर्थशास्त्र की बहुत सी विषय-वस्तु का अध्यापन किया जाता है। इसके अध्यापन का मुख्य उद्देश्य छात्रो को व्यापार, उद्योग, बैंक-व्यवस्था, डाक-व्यवस्था, आयात-निर्यात, लेखा कार्य आदि का ज्ञान प्रदान करना है जिससे वे अपने व्यावहारिक जीवन मे सफलतापूर्वक अपने राष्ट्र की उन्नति मे सहयोग दे सकें, क्योकि राष्ट्र की आर्थिक स्थिति पर ही इनकी उन्नति निर्भर होती है। अत अर्थशास्त्र के शिक्षक का यह परम कर्तव्य है कि वह अपने छात्रो को राष्ट्र की आर्थिक स्थिति से परिचित कराये और अपने विषय का वाणिज्य शास्त्र से समन्वय स्थापित करे जिससे छात्र यह समझने म समर्थ हो सकें कि इन आर्थिक स्थितियो में कौन-सा उद्योग या व्यापार सफलतापूर्वक सचालित किया जा सकता है। दूसरे, अर्थशास्त्र-शिक्षण का भी मुख्य ध्येय राष्ट्र की आर्थिक उन्नति अर्थात् कृषि उद्योग एव व्यापार आदि की उन्नति एव विकास करना है। इस प्रकार ये दोनों शास्त्र एक दूसरे के सहयोगी हैं। अतः अर्थशास्त्र का अध्यापन करते समय शिक्षक का यह परम कर्तव्य है कि वह आवश्यकतानुसार इन दोनो का समन्वय करता चले। अर्थशास्त्र का वाणिज्य शास्त्र के साथ दोनो प्रकार से समन्वय स्थापित किया जा सकता है। नीचे अर्थशास्त्र के कुछ प्रकरण दिए जा रहे हैं जिनमे वाणिज्य शास्त्र के साथ सह-सम्बन्ध स्थापित करना अवश्यक है .

(१) भारतीय व्यापार
(२) मुद्रा
(३) ग्रेशम का नियम
(४) बैंक-व्यवस्था
(५) साख तथा साख-पत्र
(६) द्रव्य
(७) व्यावसायिक सगठन के स्वरूप
(८) उद्योगो का विकास

अर्थशास्त्र तथा इतिहास
(Economics and History)

इतिहास को मानव सभ्यता का कोष कहा गया है, जिसमे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा सास्कृतिक उन्नति का विश्लेषण प्राप्त होता है। इतिहास भूतकाल का विश्लेषण करके वर्तमान को स्पष्ट करता है तथा इसके साथ ही भविष्य के लिए मार्ग प्रदर्शित करता है। प्रो० जोन्स (Jones) के शब्दो मे "इतिहास जीवन के अनुभवो का वास्तविक भण्डार है और आज का युवक इतिहास का अध्ययन इसलिए करता है जिससे वह मानव-जाति के अनुभवो से लाभ प्राप्त कर सके।" दूसरी ओर अर्थशास्त्र मानव की आर्थिक क्रियाओ पर बल देता है। परन्तु इन प्रयत्नो एव क्रियाओ का बालक को महत्व तभी प्राप्त हो सकता है जब वह इनके भूतकालीन इतिहास का ज्ञान प्राप्त कर ले। इसलिए अर्थशास्त्र के सिद्धान्तो एव प्रवृत्तियो का प्रस्तुतीकरण करने के लिए उनको ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का ज्ञान देना अति आवश्यक है। अतः हम कह सकते हैं कि इतिहास भी भूगोल की भाँति अर्थशास्त्र-शिक्षण के लिए पृष्ठभूमि का कार्य करता है। इस प्रकार दोनो शास्त्रो मे सह-सम्बन्ध स्थापित करना आवश्यक हो जाता है। उदाहरणार्थ—नीचे अर्थशास्त्र के कुछ प्रकरण दिये जा रहे हैं जिनमे अर्थशास्त्र का इतिहास के साथ समन्वय स्थापित किया जा सकता है ·

(१) माल्थस का जनसंख्या का सिद्धान्त
(२) भारतीय व्यापार
(३) आर्थिक जीवन का विकास
(४) विनिमय के स्वरूप
(५) भारत की मुद्राएँ
(६) भारत के यातायात के साधन
(७) भारतीय उद्योग

अर्थशास्त्र तथा कृषि-विज्ञान
(Economics and Agriculture)

भारत की अधिकाश जनता ग्रामो मे रहती है। उसका मुख्य पेशा खेती है। इस प्रकार उसका आर्थिक जीवन मुख्यतः कृषि उद्योग पर ही निर्भर होता है। इसकी उन्नति पर ही राष्ट्र की उन्नति तथा जनता का रहन-सहन का उच्च स्तर निर्भर है। कृषि विज्ञान छात्रो को मिट्टी, अच्छे बीज, खाद, पानी, यन्त्र आदि का समुचित उपयोग करना सिखाता है। अर्थशास्त्र के ज्ञान के द्वारा छात्र अपने आर्थिक जीवन को समझने में समर्थ हो सकते हैं तथा इसका कृषि-

विज्ञान से सम्बन्ध स्थापित करके अपने आर्थिक जीवन को उन्नतिशील बनाने मे सफल हो सकते हैं। अत. इन दोनो विज्ञानो मे समन्वय स्थापित करना अत्यन्त आवश्यक है। अर्थशास्त्र के निम्नलिखित प्रकरणो मे कृषि विज्ञान से सह-सम्बन्ध स्थापित करना आवश्यक है :

(१) भारतीय सिंचाई के साधन
(२) भारतीय ऋण-ग्रस्तता एव उसका समाधान
(३) कृषि की उन्नति की समस्या
(४) पशुपालन की समस्या
(५) सघन खेती
(६) फसलो को कीटाणुओ के बचाने के साधन

अर्थशास्त्र तथा गणित एवं अकशास्त्र
(Economics and Mathematics and Statistics)

अर्थशास्त्र के नियमो, सिद्धान्तो एव प्रवृत्तियो का निर्धारण मुख्यतः प्राप्त आँकडो के आधार पर किया जाता है। अकशास्त्र का सम्बन्ध इन्ही आँकडो के एकीकरण एव उनके आधार पर तथ्यो की पुष्टि करने से है। 'माल्थस' का जनसख्या सम्बन्धी सिद्धान्त, द्रव्य परिमाण का सिद्धान्त, मजदूरी कोष सिद्धान्त आदि अकशास्त्र एव गणित की देन हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अर्थशास्त्र की नीव अकशास्त्र एव गणित की आधार-शिला पर अवलम्बित है। इसलिए इन दोनो शास्त्रो मे समन्वय स्थापित करना सरल एवं सुगम है। अर्थशास्त्र का अध्यापक आर्थिक नियमो का स्पष्टीकरण करते समय गणित से समन्वय कर सकता है। वह छात्रो से ग्राफ तथा रेखाचित्र आदि बनवाते समय गणित एवं अर्थशास्त्र की उपयोगिता पर प्रकाश डाल सकता है। अर्थशास्त्र के अघोलिखित प्रकरणो मे अकशास्त्र तथा गणित से सह-सम्बन्ध स्थापित करना आवश्यक है

(१) माल्थस का जनसख्या सिद्धान्त
(२) द्रव्य परिमाण का सिद्धान्त
(३) मजदूरी कोष सिद्धान्त
(४) उत्पत्ति नियम
(५) उपभोग नियम
(६) माँग तथा पूर्ति का नियम
(७) बैंक व्यवस्था
(८) व्यापार
(९) बैंक
(१०) बैंक ड्राफ्ट

अर्थशास्त्र तथा भौतिक विज्ञान
(Economics and Physical Science)

अर्थशास्त्र तथा भौतिक विज्ञान का घनिष्ठ सम्बन्ध है। भौतिक विज्ञान का अर्थशास्त्र पर बहुत गहरा प्रभाव पडता है। इस विज्ञान के आधार पर अर्थशास्त्र के बहुत से नियमो एव सिद्धान्तो का निर्माण एव उनकी परिभाषाएँ दी गई हैं। उत्पत्ति तथा उपभोग की परिभाषाएँ भौतिक विज्ञान के इस सत्य पर आधारित हैं कि न तो पदार्थ का उत्पादन किया जा सकता है और न उसको पूर्णतया नष्ट ही किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त रसायन शास्त्र ने उद्योगो के विकास मे पर्याप्त सहायता प्रदान की है। विज्ञान के आविष्कारो ने मानव की आर्थिक समृद्धि मे चार चाँद लगा दिये हैं। इन आविष्कारो ने आर्थिक समृद्धि मे किस प्रकार सहायता प्रदान की है, इस प्रश्न का उत्तर अर्थशास्त्र का विद्यार्थी भौतिक विज्ञान की जानकारी के अभाव मे नही दे सकता। इसलिए अर्थशास्त्र का इन भौतिक विज्ञानो से सह-सम्बन्ध स्थापित करना आवश्यक है। सह सम्बन्ध स्थापित करने के योग्य प्रकरण नीचे दिये जा रहे हैं :

(१) खनिज पदार्थ
(२) वन-सम्पत्ति
(३) व्यापार
(४) विभिन्न उद्योग धन्धे
(५) यातायात के साधन
(६) सदेशवाहन के साधन।

अर्थशास्त्र तथा मनोविज्ञान
(Economics and Psychology)

मनोविज्ञान मानव के मन तथा आचरण का अध्ययन करता है। इसके अन्तर्गत क्रिया, इच्छा, सन्तोष सुख-दुख, त्याग आदि भावो की विवेचना की जाती है। इन्ही मनोवैज्ञानिक तथ्यो के आधार पर अर्थशास्त्र मे बहुत से नियमों एव सिद्धान्तो का प्रतिस्थापन किया गया है। इस प्रकार मनोविज्ञान ने अर्थशास्त्र को बहुत प्रभावित किया है। मनोविज्ञान ने मानव-जीवन की समस्त क्रियाओं को प्रभावित किया है। इसके प्रभाव के कारण अथशास्त्र के क्षेत्र मे औद्योगिक मनोविज्ञान (*Industrial Psychology*) मनोविज्ञान की एक पृथक शाखा के रूप मे विकसित हुआ। इसके द्वारा कारखानो के मजदूरो की मनोदशाओ का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। अथशास्त्र के साथ मनोविज्ञान का समन्वय इसलिए भी आवश्यक है कि मनुष्य के विचारो का स्वरूप मुख्यत आर्थिक स्थितियो पर

निर्भर रहता है। इसलिए अर्थशास्त्र के शिक्षक का परम कर्त्तव्य हो जाता है कि वह इन दोनो शास्त्रो मे सह-सम्बन्ध स्थापित करे। नीचे कुछ प्रकरण दिये जा रहे हैं जिनमे अर्थशास्त्र के साथ मनोविज्ञान का सह-सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है :

(१) माँग तथा पूर्ति का नियम
(२) ग्रेशम का नियम
(३) सम-सीमान्त उपयोगिता का नियम
(४) मजदूरो की कार्य-क्षमता की वृद्धि का सिद्धान्त
(५) क्रमागत उपयोगिता ह्रास नियम
(६) श्रमिको की समस्याएँ एव उनका समाधान।

प्रश्न

1. How would you correlate the teaching of Economics with other branches of Social Studies ? Discuss limitaion and possibilities in bringing out integration among these subjects (A U, B T, 1955)
आप अथशास्त्र-शिक्षण का सामाजिक अध्ययन की अन्य शाखाओ से किस प्रकार सह-सम्बन्ध स्थापित करोगे ? इन विषयो के बीच एकीकरण स्थापित करने मे जो सम्भावनाएँ एव सीमाएँ आयें उनकी विवेचना कीजिए।

2. How would you correlate the teaching of Economics with the other subjects of the School Curriculum ? Illustrate your answer with suitable examples
—(A U, B. T, 1959)
आप विद्यालय-पाठ्य-क्रम के अन्य विषयो से अर्थशास्त्र का समन्वय किस प्रकार करोगे ? उदाहरण सहित विवेचना कीजिए।

3. Show how would you correlate the teaching of Economics with Geography, Commerce and Civics Illustrate your *answer with examples* —*(A. U, B T., 1960)*
आप अर्थशास्त्र का भूगोल, वाणिज्यशास्त्र तथा नागरिकशास्त्र से किस प्रकार समन्वय स्थापित करोगे ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

4. How would you correlate the teaching of Economics with that of Commerce or Geography ? Illustrate your answer with examples. —(A U, B T, 1961)

आप अर्थशास्त्र-शिक्षण का वाणिज्यशास्त्र या भूगोल से किस प्रकार समन्वय स्थापित करोगे ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

5 What do you understand by Correlation ? Indicate the ways in which economics may be profitably linked with other subjects ? what will be the advantages of such an approach ? Give illustrations ? —(A U, B T, 1963)
सह-सम्बन्ध से आप क्या समझते हैं ? अर्थशास्त्र को अन्य विषयों से किन ढंगों से लाभप्रद रूप से सम्बन्धित किया जा सकता है ? इस प्रकार के सम्बन्ध के क्या लाभ होंगे ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

6. Write a short note on the 'Correlation of Economics with other school subjects —(A U, B Ed, 1966)
अर्थशास्त्र का विद्यालय के अन्य विषयों से समन्वय' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

7 What is the advantage of the Correlation of Economics with other subjects ? Illustrate your answer with suitable examples —(A U, B Ed, 1967)
अर्थशास्त्र का सह सम्बन्ध अन्य विषयों से स्थापित करने के क्या लाभ हैं ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

8. What is meant by correlation ? How can Economics be correlated with other school subjects ? Give examples —(Udaipur, B Ed, 1967)
सह-सम्बन्ध का क्या अर्थ है ? अर्थशास्त्र का स्कूल के अन्य विषयों से किस प्रकार सह सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

अध्याय ११

अर्थशास्त्र में वस्तुनिष्ठ जाँच
(Objective Test in Economics)

विषय-प्रवेश

व्यक्ति के ज्ञान, गुण एव उपलब्धि आदि का पता लगाने मे अत्यन्त प्राचीन काल से ही किसी न किसी प्रकार की जाँच एव मापन विधियो का प्रयोग होता रहा है। परन्तु आधुनिक काल मे जाँच शैक्षिक प्रक्रिया का एक अभिन्न अग हो गया है। केवल शैक्षिक प्रक्रिया का ही नही वरन् जीवन की प्रत्येक क्रिया की जाँच एक महत्वपूर्ण एव अविच्छिन्न अग है क्योकि इसके द्वारा हमे बालक के गुणो, ज्ञान आदि की उपलब्धियो का परिचय प्राप्त होता है। इसलिए शिक्षक का यह परम कर्तव्य है कि वह मूल्याकन के कार्य-क्रम की पूर्ण जानकारी रखे। यदि शिक्षक सफल शिक्षक बनना चाहता है तो उसे मूल्याकन के सम्पूर्ण कार्यक्रम की ओर समुचित रूप से ध्यान तथा समय देना पडेगा। यहाँ स्वत प्रश्न उठता है कि मूल्याकन का क्या अर्थ है। इस सम्बन्ध मे क्विलेन तथा हन्ना (Quillen and Hanna) का मत है कि "शिक्षालय द्वारा लाये गए बालक के व्यवहार परिवर्तनो के विषय मे प्रमाणो के सकलन एव उनकी व्याख्या करने की प्रक्रिया ही मूल्याकन है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मूल्याकन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमे अध्यापक, बालक तथा शिक्षा के अन्य सभी तथ्यो की पारस्परिक निर्भरता एव उनकी उपयोगिता की परीक्षा होती है। मूल्याकन का अर्थ देखने के पश्चात स्वत यह प्रश्न उठता है कि यह किसलिए आवश्यक है। इसके उत्तर में हम कह सकते हैं कि इसके द्वारा यह पता लगाया जाता है कि शिक्षा के उद्देश्यो को किस सीमा तक प्राप्त किया जा चुका है। कक्षा-शिक्षण मे जो अनुभव एव ज्ञान प्रदान किया गया है, उनका प्रभाव इसके द्वारा पता लगाया जाता है। शिक्षण पद्धति की सफलता का ज्ञान करने लिए यह आवश्यक है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इसका मुख्य ध्येय शिक्षण के अन्तिम परिणामो

अथवा निष्कर्षों की जाँच करना है। स्वतः यहाँ यह प्रश्न उठता है कि हम परीक्षण द्वारा उपलब्धि, बुद्धि, विशेष अभिरुचियो, रुचियो, चरित्र एवं व्यक्तित्व आदि की माप कर सकते हैं। जब परीक्षणो के द्वारा उपलब्धियो को जाना जाता है तो अर्थशास्त्र-शिक्षण मे बालको की निष्पत्तियो को जानने तथा लक्ष्यो की प्राप्ति का पता लगाने के लिए परीक्षणो का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

अर्थशास्त्र में वस्तु-निष्ठ जाँच

विभिन्न विषयो मे प्राप्त किए हुए ज्ञान की जाँच करने के विभिन्न प्रकार के परीक्षणो (Tests) का प्रयोग किया जाता है। उनमे से कुछ इस प्रकार है

(१) मौखिक जाँच (Oral Tests)

(२) *निबन्धात्मक जाँच (Essay Type Tests)*

(३) वस्तुनिष्ठ जाँच (Objective Tests)

(४) क्रियात्मक जाँच (Performance Tests)

अर्थशास्त्र मे अर्जित ज्ञान की माप करने के लिए जिन जाँचो का प्रयोग किया जा सकता है उनका विस्तृत विवेचन नीचे दिया जा रहा है।

(१) **मौखिक जाँच**—यह परीक्षण चारित्रिक रूप से वैयक्तिक होता है। इसमे बालको को मौखिक प्रश्न दिये जाते हैं और इन प्रश्नो के द्वारा यह जानने का प्रयत्न किया जाता है कि बालको ने पाठ को सीखा है या नहीं। इसमे छात्र परीक्षक के समक्ष उसके प्रश्नो का उत्तर देते हैं जिससे परीक्षक उनके गुणो जैसे—*अभिव्यञ्जना, आत्मविश्वास आदि की जाँच कर लेता है।* अर्थशास्त्र का शिक्षक इनका प्रयोग कक्षा-शिक्षण मे किसी भी समय कर सकता है। इस प्रकार वह पढाये हुए पाठ की सफलता का ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

(२) **निबन्धात्मक जाँच**—इस प्रकार की परीक्षा मे प्रश्नो का उत्तर निबन्ध के रूप मे देना पडता है अर्थात् हम कह सकते है कि प्रश्नो का उत्तर विस्तारपूर्वक निश्चत समय मे देना पडता है। हमारे शिक्षालयो मे अर्थशास्त्र की निष्पत्तियो का ज्ञान प्राप्त करने के लिए इसी परीक्षा का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार की परीक्षा के प्रति *अर्थशास्त्र मे उपयोगिता तथा सार्थकता के प्रश्न पर* विवाद उठ गया है। कतिपय विद्वानो का मत है कि अर्थशास्त्र की परीक्षा के लिए यह उपयोगी नही है, क्यकि इसमे अधीकरण सम्बन्ध तत्त्व (Subjective element) अधिक है। इसके विपक्ष मे अधोलिखित बातें कही जाती हैं :

(१) ऐसा विश्वास है कि निबन्धात्मक परीक्षा स्मरण-शक्ति की ही जाँच करती है अर्थात् यह स्मरण-शक्ति की ही परीक्षा है।

(२) यह रटने की प्रक्रिया पर अधिक बल देती है जो मनोवैज्ञानिक रूप से दोषपूर्ण है ।

(३) इसमे भाषा का प्राधान्य है । जिस विद्यार्थी का भाषा पर अधिकार है वह इसमे अधिक सफलता प्राप्त कर सकता है । इसमे सुलेख, भाषा, स्पष्टीकरण एव प्रस्तुतीकरण का ढग आदि बातें अधिक कार्य करती हैं ।

(४) इसके द्वारा छात्रो के ज्ञान की वास्तविक जाँच नही हो पाती है । इसमे अवसर की प्रधानता रहती है ।

(५) इसमे वस्तुनिष्ठता एव पूर्णता की कमी है ।

निबन्धात्मक परीक्षा के पक्ष मे अधोलिखित तर्क उपस्थित किए जाते हैं :

(१) यह सत्य है कि रटने की क्रिया अति हानिकारक है परन्तु एक राजनीतिज्ञ, सम्वाददाता तथा सुवक्ता के लिए रटना परम उपयोगी है ।

(२) जॉन ड्यूवी ने बालक की चार स्वाभाविक शक्तियो का उल्लेख किया है, जिनमे एक शक्ति प्रदर्शन भी है । प्रदर्शन के लिए निबन्धात्मक परीक्षा विशेष लाभदायक है । ड्यूवी इसको सन्तुष्ट करने के लिए भाषा पर अधिकार करने के हेतु कहता है । भाषा के द्वारा बालक अपनी बात का आदान-प्रदान कर सकता है ।

(३) इसके द्वारा छात्र किसी वस्तु को क्रम मे रखना सीख जाते हैं । प्रश्न का ठीक प्रकार से क्रम-बद्ध करना एक कला है ।

(४) इसके द्वारा छात्र व्याख्या, वैयक्तिक सम्मति एव विभिन्न तथ्यो मे सम्बन्ध स्थापित करना सीख जाते हैं ।

(३) **नवीन प्रणाली या वस्तुनिष्ठ जाँच**—मनोविज्ञान ने शिक्षा को महत्त्वपूर्ण योग प्रदान किया है । मनोवैज्ञानिकों ने परीक्षा की कुछ नवीन विधियो का प्रयोग समस्त विषयो मे किया है । इन प्रणालियो का उपयोग आजकल लोकप्रिय हो गया है । वस्तुनिष्ठ जाँच द्वारा किसी विषय या कार्य की वस्तुनिष्ठता की जाँच की जाती है । इसमे छोटे-छोटे प्रश्न रखे जाते हैं और उनके उत्तर भी छोटे-छोटे होते हैं । इस प्रकार की परीक्षा मे लिखना भी कम पड़ता है । अर्थशास्त्र-शिक्षण मे वस्तुनिष्ठ जाँचो का प्रयोग निबन्धात्मक परीक्षा के साथ-साथ प्रचुरता से किया जाना चाहिए, क्योकि इन जाँचो के द्वारा सत्यासत्य, तथ्य-ज्ञान, विचार-ज्ञान, तथा निर्णय शक्ति की परख की जा सकती है । इस प्रणाली मे वे सब गुण विद्यमान हैं जो एक उत्तम परीक्षा मे होने चाहिए । वस्तुनिष्ठ जाँच के अधोलिखित गुण हैं

(१) वस्तुनिष्ठता (Objectivity)—नवीन प्रणाली की जाँचो मे यह गुण पाया जाता है । वस्तुनिष्ठता से तात्पर्य है वैयक्तिक तत्त्वो का निष्कासन । प्रश्न के उत्तर को चाहे एक ही परीक्षक जाँचे अथवा अनेक, उनके माप मे भिन्नता

न हो। प्रश्न ऐसे होने चाहिये जिनके उत्तर एक ही हो, जिससे परीक्षक का व्यक्तिगत पक्षपात, उसकी मनोदशा, छात्रो की भाषा, शैली आदि का प्रभाव उसके निर्णय पर न पड सके।

(२) पुष्टता (Validity)—जिस वस्तु का माप हम परीक्षा रूपी इस कसौटी से करना चाहते हैं, उसका हम किसी सीमा तक माप कर सकते हैं, अर्थात् हम दूसरे शब्दो मे कह सकते हैं कि जिस वस्तु-विशेष की जाँच करना हमरा मुख्य ध्यय है उसकी जाँच किस सीमा तक इसके द्वारा हुई, अर्थात् उसी की जाँच की गई, अथवा किसी अन्य वस्तु की। इसका पुष्टीकरण इस प्रणाली की जाँच का मुख्य गुण है। अर्थशास्त्र शिक्षण म इसका प्रयोग तभी वैध कहा जा सकता है जब इसके द्वारा उसके शिक्षण के उद्देश्यो की परख की जाय।

(३) विश्वसतता (Reliability)—परीक्षा के द्वारा हम जिस वस्तु को मापना चाहते हैं, वह किस सीमा तक शुद्ध एव सम्यक् रूप से मापी जा सकती है, जिससे हम उसके ऊपर विश्वास कर सकें। वस्तुनिष्ठ जाँच मे यह गुण पाया जाता है, उदाहरणार्थ—यदि विश्वसनीय परख के द्वारा किसी बालक की परीक्षा ली जाती है तो उसके प्राप्त अङ्को म कोई वृद्धि या ह्रास नहो होना चाहिए, यदि कुछ समय के बाद उसी परख द्वारा बालक की जाँच की जाती है। उसके प्राप्ताङ्को मे जो अन्तर आयेगा वह नगण्य होगा, क्योकि यह अन्तर उसके मानसिक विचारो की परिपक्वता के कारण आयेगा।

(४) ये जाँच परीक्षण एव अकन मे बहुत सरल हैं। इनके प्रयोग से कम से कम समय मे अधिकाधिक उत्तर पुस्तिकाओ का अकन किया जा सकता है।

(५) वस्तुनिष्ठ परख प्रयोग की दृष्टि से भी सुविधाजनक है। इनका प्रयोग प्रत्येक शिक्षक सरलता एव सफलता के साथ कर सकता है। इनका प्रयोग निबन्धात्मक परीक्षाओ की भाँति एक साथ हजारो छात्रो के परीक्षण के लिए किया जा सकता है।

वस्तुनिष्ठ जाँच के प्रकार—यह जाँच निम्न दो प्रकार की होती है :

(१) औपचारिक वस्तुनिष्ठ जाँच या प्रमापीकृत वस्तुनिष्ठ जाँच (Formal Objective Tests or Standardized Objective Tests)

(२) अनौपचारिक वस्तुनिष्ठ जाँच या अध्यापक निर्मित वस्तुनिष्ठ जाँच (Informal Objective Tests or Teacher-made Objective Tests)

औपचारिक वस्तुनिष्ठ जाँच तथा अनौपचारिक वस्तुनिष्ठ जाँचो मे अन्तर केवल इतना है कि प्रथम को प्रमापीकरण (Standardization) करके दिया जाता है और इसका प्रयोग सामान्य रूप से किया जा सकता है। इनका निर्माण विशेषज्ञो के द्वारा होता है। परन्तु अनौपचारिक वस्तुनिष्ठ जाँचो का

प्रयोग सामान्य रूप से नही किया जा सकता। इनका प्रयोग विशेष स्थानो पर विशेष स्थितियो मे ही हो सकता है। ये दोनो परीक्षण एक-दूसरे के पूरक हैं।

वस्तुनिष्ठ जाँच के प्रश्न

वस्तुनिष्ट जाँच के प्रश्नो के अधोलिखित रूप हैं :

(१) अभिस्वीकारात्मक या अभिज्ञान रूप (Recognition type)

(२) प्रत्यास्मरण रूप (Recall Type)

(१) अभिज्ञान रूप—इस प्रकार के प्रश्नो के द्वारा पहचानने की शक्ति की जाँच की जाती है। इस रूप के प्रश्नो के कई उपभेद हैं जो इस प्रकार हैं।

(i) सत्यासत्य या एकान्तर प्रत्युत्तर रूप (True-false or Alternate Response Type)

(ii) बहुविकल्प या अपवर्त्य चयन रूप (Multiple Choice Type)

(iii) मिलान या तुलनात्मक या प्रतिद्वन्दात्मक रूप (Matching Type)

(iv) वर्गीकरण रूप (Classification Type)

(२) प्रत्यास्मरण रूप—इसके द्वारा बालको के प्रत्यास्मरण की जाँच होती है। इस रूप के प्रश्नो के दो उपभेद हैं.

(i) सरल प्रत्यास्मरण रूप (Simple Recall Type)

(ii) रिक्त स्थान पूर्ति रूप (Completion Type)

इनका उदाहरणो सहित विवेचन नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

(१) अभिज्ञान रूप के प्रश्न

(i) सत्यासत्य—इनमे दो विकल्पा मे से एक को चयन करने के लिए कहा जाता है। इस प्रणाली की जाँचो म 'सत्य' व 'असत्य' कथन दिये जाते हैं। बालको को उनके आगे सत्य या असत्य, अथवा R या W शब्द लिखने के लिए आदेश दिया जाता है।

उदाहरण—

निर्देश—निम्नलिखि। कथनो को पढो और सत्य कथन के समक्ष R तथा असत्य कथन के आगे W लिखो

(१) अर्थशास्त्र की भाषा म कृषक उत्पादक है। ....

(२) साधारण बालचाल म डाक्टर एक उत्पादक है। ....

(३) अर्थशास्त्र की भाषा मे चर्मकार उत्पादक है।

(४) अर्थशास्त्र मे बढई उत्पादक नही है। ....

(५) अर्थशास्त्र एक भौतिक विज्ञान है। ....

(६) आगमन रीति म सामान्य म विशिष्ट की ओर जाते हैं। ....

(७) श्रम नाशवान नही है ! ....

(८) श्रम गतिशील होता है । ....

(९) भूमि उत्पत्ति का निश्चेष्ट साधन है । ....

(१०) भूमि म स्थान-गतिशीलता होती है । ....

(ii) बहु विकल्प या अपवर्त्य-चयन रूप—इसमे एक कथन के उत्तर के रूप मे कई विकल्प दिये रहते है, जिनमे से छात्रो को अधिक उपयुक्त उत्तर छाँटने के लिए कहा जाता है ।

उदाहरण—

निर्देश—निम्नलिखित प्रश्नो के साथ दिए हुए कई विकल्पो मे से जो सत्य हो, उनके सम्मुख √चिन्ह लगाओ .

(i) मेज बन जाने पर लकडी की उपयोगिता बढ गई, क्योकि अब लकडी का

(अ) समय परिवर्तन हो गया,

(ब) स्थान परिवर्तन हो गया,

(स) रूप परिवर्तन हो गया,

(द) अधिकार परिवर्तन हो गया ।

(ii) भाखडा-नांगल बाँध किस प्रदेश मे बनाया गया है—

(अ) उत्तरप्रदेश,

(ब) बिहार,

(स) पूर्वी पजाब,

(द) राजस्थान ?

(iii) भारत मे सदाबहार वन कहाँ पाए जाते हैं :

(अ) दक्षिणी पजाब,

(ब) राजस्थान,

(स) मध्यभारत,

(द) उपहिमालय प्रदेश,

(य) पेनिनसुला के पश्चिमी तट मे ?

(iii) तुलनात्मक या प्रतिद्वन्द्वात्मक रूप—इनमे छात्रो को दो सूचियो के विषयो की समानता या सम्बन्ध स्थापित करने के लिए कहा जाता है । इसमे पूर्ण तथ्यो को दो भागो मे विभक्त करके भी रखा जा सकता है और उनको छात्रो द्वारा पूर्ण करवाया जा सकता है । ये विषय या विभक्त कथन बिना किसी क्रम के अनुसार दिये जा सकते हैं ।

उदाहरण—

निर्देश—नीचे कुछ शहरो के नाम दिये हुए हैं। उनके समक्ष अव्यवस्थित रूप मे उनकी प्रसिद्ध वस्तुएँ लिखी गयी हैं। उनसे सम्बन्धित प्रसिद्ध वस्तु का उनके समक्ष क्रमाक लिखो :

शहर	प्रसिद्ध वस्तुएं
बम्बई	लोहे के उद्योग
आगरा	कैंचियाँ
जमशेदपुर	रुई
रानीगंज	साड़ियाँ
बड़ौदा	कलई के बर्तन
मेरठ	सूती वस्त्र के उद्योग
मुरादाबाद	कच्चे लोहे
कानपुर	चूड़ियाँ
जगाधरी	फर्श-दरी, संगमरमर पर खुदाई का कार्य
फीरोजाबाद	चमड़े का काम
बनारस	पेपर का मिल

(iv) वर्गीकरण रूप—यह 'तुलनात्मक' प्रश्नो का एक अन्य रूप माना जा सकता है क्योकि वर्गीकरण रूप के प्रश्नो के वही गुण एवं सीमाएँ हैं जो तुलनात्मक रूप के प्रश्नो के हैं। इनमे अन्तर केवल स्वरूप की दृष्टि से है। 'वर्गीकरण रूप' प्रश्नो मे अन्तगत कुछ ऐसे शब्दो का समूह छात्रो के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है जिनमे से एक शब्द बेमेल होता है। छात्रो से उसी शब्द को छाँटने के लिए कहा जाता है।

उदाहरण—

निर्देश—प्रत्येक प्रश्न मे चार शब्द दिए गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के इन शब्दो मे एक शब्द ऐसा है जो अन्य शब्दो की श्रेणी मे नहीं आता है। प्रत्येक प्रश्न मे ऐसे शब्दो पर √ का चिन्ह लगाओ

(१) उपयोगिता ह्रास नियम, माँग-पूर्ति का नियम, बटाई प्रथा, ग्रेशम का नियम।

(२) मार्शल, पीगू, रॉबिन्स, नेहरू।

(२) प्रत्यास्मरण रूप

(i) सरल प्रत्यास्मरण रूप—इस प्रकार के प्रश्नो के द्वारा छात्रो को प्रत्यास्मरण शक्ति की जाँच की जाती है। छात्र विषय से सम्बन्धित घटनाओ, तथ्यो आदि को किस प्रकार पुन स्मरण कर सकते हैं, इसी को इस प्रकार के प्रश्नो द्वारा मालूम किया जाता है।

उदाहरण—

निर्देश—अधोलिखित प्रश्नो का उत्तर उनके सामने दिये स्थान पर लिखो—

(१) भिलाई का कारखाना किस देश की सहायता से स्थापित किया गया ? (……)

(२) भारत का सबसे बडा बाँध कौनसा है ? (……)

(३) भारत मे सबसे अधिक लोहा किस क्षेत्र से प्राप्त होता है ? (… …)

(४) भारत मे सदाबहार वन कहाँ पाये जाते हैं ? (… …)

(ii) रिक्त-स्थान पूर्ति रूप—इस प्रकार के कथन अधूरे कथनो अथवा वाक्यो के रूप मे दिये जाते हैं। छात्रो को रिक्त स्थान की उपयुक्त शब्दो द्वारा पूर्ति करनी पडती है :—

उदाहरण—

(१) प्रसिद्ध अर्थशास्त्री ……के अनुसार अर्थशास्त्र धन का विज्ञान है।

(२) आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए… चाहिए।

(३) 'निकृष्ट मुद्रा परिचलन नियम' को……ने प्रतिपादन किया था।

(४) फीरोजाबाद……के लिए प्रसिद्ध है।

(५) भारत के वित्तमन्त्री……हैं।

(६) हीराकुड बाँध………मे स्थित है।

(७) बढई ने मेज बनाकर लकडी का …… …परिवर्तित कर दिया।

(८) उपभोक्ता की बचत=कुल उपयोगिता—………।

नवीन प्रणाली या वस्तुनिष्ठ जाँच के दोष
(Defects of New Type or Objective Tests)

सामाजिक विषयो की जाँच के लिए जब इस प्रणाली का प्रयोग किया गया तब निम्नलिखित दोष दृष्टिगोचर हुए :

(१) इन प्रश्नो के बनाने मे अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है, सबसे अधिक कठिनाई अपवर्त्य-चयन जाँच के प्रश्नो के बनाने मे होती है, क्योकि सभी मनुष्यो की विचारधाराएँ एक समान नही होती हैं।

(२) यह जाँच कल्पित कार्यों (Guess work) के लिए छात्रो को प्रोत्साहित करती है। यह केवल छात्रो को इधर-उधर चिन्ह लगाने के अतिरिक्त अन्य कुछ नही सिखाती है। इनके प्रयोग से छात्रो को अभिव्यजना शक्ति का विकास नही हो पाता। इससे छात्रो मे प्रश्नो का उत्तर लिखने का ढग विकसित नही किया जा सकता।

(३) इसके विरुद्ध तीसरा प्रबल आरोप यह है कि इन के प्रयोग से छात्रो के चिन्तन, तर्क आदि शक्तियो का विकास नही होता। इनके द्वारा किसी

प्रकार की शृङ्खला अथवा क्रमबद्धता नही स्थापित की जा सकती। बालको मे चिन्तन तथा तकशक्ति का विकास निबन्धात्मक परीक्षा द्वारा ही किया जा सकता है।

उपर्युक्त दोषो क देखने के पश्चात् हम कह सकते हैं कि अर्थशास्त्र मे छात्रो की ज्ञानोत्पत्तियो का परिचय प्राप्त करने के लिए निबन्धात्मक एव वस्तुनिष्ठ जाँच दोनो का ही प्रयोग किया जाना चाहिए।

प्रश्न

1 What are the Objective tests so called ? In what ways are the new types tests in Economics better than those of the old essay type ? (A U, B T, 1961)
'वस्तुनिष्ठ जाच' क्या हैं ? अथशास्त्र मे नवीन प्रकार के प्रश्न प्राचीन निबन्धात्मक प्रश्नो से किस प्रकार उत्तम हैं ?

2 Write a short note on 'Objective tests' (A U B Ed, 1966,67)
'वस्तुनिष्ठ परीक्षणो' पर सक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।

3 (a) Prepare seven Objective-based items on any one of the following teaching units
(i) Capital
(ii) Planning in India—Objectives and achievements
(iii) Meaning of Economics.
(b) State the advantages of objective-based evaluation —(Udaipur, B Ed, 1967)
(अ) निम्नलिखित मे से एक यूनिट (दीपक) छाँट कर सात उद्देश्यनिष्ठ प्रश्नो को तैयार कीजिए—
(i) पूँजी
(ii) भारत मे योजनाएँ—उद्देश्य और उपलब्धियाँ
(iii) अथशास्त्र का अथ।
(आ) उद्देश्यनिष्ठ मूल्याकन पद्धति के लाभो का वर्णन कीजिए।

अध्याय १२

पाठ-योजना
(Lesson Plan)

पाठ-योजना के आधारों के लिए विश्व को हरबार्ट की सामान्य विधि का सहारा लेना पड़ता है। हरबार्ट एक आदर्शवादी दार्शनिक था, उसके मतानुसार शिक्षा का मुख्य ध्येय चरित्र-निर्माण करना है। उसने इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए शिक्षक को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया। उसने शिक्षक को शिक्षा प्रदान करने के लिए सामान्य विधि प्रदान की। इस विधि के द्वारा वह शिक्षण करके इस उद्देश्य की प्राप्ति करे। उसने इस सामान्य विधि मे चार सोपान अर्थात् 'स्पष्टता' (Clearness), 'सम्बन्ध' (Association), 'व्यवस्था' (System) तथा 'प्रयोग' (Method) रखे। उसके शिष्य जिलर न 'स्पष्टता' नामक सोपान को दो भागो मे विभाजित किया—प्रथम 'प्रस्तावना' (Introduction) तथा द्वितीय 'प्रस्तुतीकरण' अथवा 'विषय-प्रवेश' (Presentation)। हरबार्ट के नाम से ही यह पच पद-प्रणाली प्रसिद्ध है। वस्तुतः ये पचपद विज्ञान तथा गणित के शिक्षण के लिए बहुत ही उपयोगी हैं। परन्तु इनका उपयोग ज्ञानात्मक पाठो मे थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ किया जा सकता है। नीचे हम 'अर्थशास्त्र के पाठ-सूत्र को किस प्रकार लिखा जाता है', इसके विषय मे कुछ सकेत प्रस्तुत कर रहे हैं।

सर्वप्रथम पाठ-सूत्र पुस्तिका मे अधोलिखित बातो को लिखना चाहिए :

पाठ-सूत्र संख्या

दिनाङ्क	कक्षा
विषय	कालाश
प्रकरण	अवधि
विद्यालय का नाम	औसत आयु

छात्राध्यापक का नाम

इन सबको लिखने के पश्चात् सामान्य उद्देश्य लिखे जाने चाहिए। ये

उद्देश्य सभी पाठो मे एक से रहते हैं। इनको विषय के शिक्षण द्वारा प्राप्त करना अर्थशास्त्र के शिक्षक का मुख्य ध्येय है। ये सामान्य उद्देश्य इस प्रकार हैं :

सामान्य उद्देश्य—(१) छात्रों को अर्थशास्त्र के प्रारम्भिक सिद्धान्तो से परिचित कराना तथा उन्हे इस योग्य बनाना कि वे आने वाली अवधि में जीवनगत व्यावहारिक एव अर्थ-सम्बन्धी समस्याओ को सुलझाने मे समथ हो सकें।

(२) छात्रो को समाज के आर्थिक पक्ष तथा राष्ट्र की समस्याओ को सुलझाने के ढङ्गो से अवगत कराना।

(३) छात्रो को अर्थशास्त्र के व्यावहारिक महत्त्व का ज्ञान कराना।

(४) छात्रो को कल्याणकारी राज्य की स्थापना के लिए सरकार द्वारा किए गये प्रयत्नो की समीक्षा करने की योग्यता प्रदान करना।

(५) अर्थशास्त्र के अध्ययन द्वारा छात्रो के मस्तिष्क को तार्किक बनाना तथा विचार-शक्ति एव ज्ञान-शक्ति को वस्तुओ की उत्पत्ति, उपभोग, विनिमय तथा वितरण के सम्बन्ध मे अनुशासित करना।

(६) छात्रो मे उदारता की भावना का विकास करना एव अन्य देशो की आर्थिक समस्याओ को समझते हुए, उनके साथ सहानुभूति रखने के लिए प्रेरित करना।

(७) विश्व की आर्थिक प्रगति के साथ अपने देश की प्रगति की तुलना करने की योग्यता प्रदान करना।

(८) अर्थशास्त्र के द्वारा छात्रो को राष्ट्र की आर्थिक स्थिति सुधारने एव समृद्धिशाली बनाने के लिए प्रोत्साहित करना।

(९) छात्रो मे आर्थिक नागरिकता के गुणो का विकास करना।

(१०) छात्रो की अवलोकन शक्ति को विकसित करना।

प्रमुख उद्देश्य—*यह प्रकरण से सम्बन्धित होता है। यह सरल तथा सक्षिप्त रूप म प्रस्तुत किया जाना चाहिए।*

सहायक-सामग्री—यह वह साधन है जिसके द्वारा पाठ के शिक्षण मे प्रभावोत्पादकता उत्पन्न की जा सकती है। इसका प्रत्येक पाठ मे उपयोग करना आवश्यक नहीं हैं। जहाँ इसके उपयोग की आवश्यकता हो वहाँ हीं इसका प्रयोग करना चाहिए। दूसरे, एक पाठ मे अधिक सहायक सामग्री प्रयुक्त नही करनी चाहिए। तीसरे, यह अधिक व्ययी न हो। इसको ठीक स्थल पर ही प्रयुक्त करना चाहिए, तभी इसके प्रयोग से मनोवाछित उद्देश्यों की प्राप्ति हो सकती है।

पूर्व ज्ञान—यह प्रस्तावना की आधार शिला है। इसके निर्धारण मे शिक्षक को सतर्कता बरतनी चाहिए। इसी क आधार पर पाठ का प्रारम्भ होता है।

प्रस्तावना—इससे हमारा पाठ प्रारम्भ होता है। इसके मुख्य उद्देश्य नीचे दिये जा रहे हैं

(१) पूव ज्ञान की जाँच करना।

(२) नवीन ज्ञान के लिए प्रभावोत्पादक वातावरण उत्पन्न करना।

(३) नवीन ज्ञान को ग्रहण करने के लिए छात्रो को तत्पर बनाना।

प्रस्तावना के लिए कोई निश्चित नियम नही है कि वह प्रश्नो के द्वारा ही प्रस्तावित की जाय। शिक्षक कोई चित्र, मानचित्र, चार्ट तथा कहानी सुनाकर भी अपने पाठ को प्रारम्भ कर सकता है। यदि प्रश्नो को प्रस्तावना मे स्थान दिया गया तो उस समय शिक्षक को यह ध्यान रखना चाहिए कि उनमे मनोवैज्ञानिक क्रम स्थापित हो गया है या नही। वे एक दूसरे से पृथक नही होने चाहिए, बल्कि उनमे एक प्रकार का सम्बन्ध हो। वे प्रश्न निर्धारित पूर्व ज्ञान पर आधारित होने चाहिए। परन्तु इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि प्रस्तावना अधिक लम्बी न हो जाय।

उद्देश्य कथन—प्रस्तावना के उपरान्त शिक्षक अपने पाठ के विशिष्ट उद्देश्य को छात्रो क समक्ष प्रस्तुत करे। यह सरल भाषा मे सक्षिप्त रूप स प्रस्तुत किया जाना चाहिए। इसके द्वारा 'हम' की भावना उत्पन्न की जानी चाहिए।

प्रस्तुतीकरण—इस पद मे नवीन पाठ को प्रस्तुत किया जाता है। इसमे पाठ का दूसरे विषयो से यथास्थान समन्वय स्थापित करना चाहिए। पाठ को प्रस्तुत करने के लिए छात्राध्यापक को पाठ के अनुसार शिक्षण-पद्धतियो का प्रयोग करना चाहिए। इस स्तर पर ही सहायक सामग्री का उपयोग किया जाता है।

श्यामपट सारांश—पाठ को सुविधानुसार दो या तीन अन्वितियो मे विभाजित किया जा सकता है। प्रत्येक अन्विति की समाप्ति पर श्यामपट साराश दिया जाना चाहिए। श्यामपट साराश के विषय मे विभिन्न प्रशिक्षण महाविद्यालयो मे विभिन्न रीतियाँ प्रचलित हैं। कुछ तो पुनरावृत्ति के प्रश्नो के उत्तरो को ही श्यामपट साराश के रूप मे दे देते हैं। कुछ विद्यालयो मे श्यामपट साराश पाठ के विकास के साथ-साथ विकसित किया जाता है। उसको छात्रो को साथ-साथ नहीं लिखने देना चाहिए, बल्कि प्रस्तुतीकरण के बाद मे उनको लिखने का आदेश दिया जाना चाहिए। इस प्रकार कार्य करने से शिक्षक के निरीक्षण के लिए भी अवसर प्राप्त हो सकता है। यह दूसरे प्रकार की रीति ही उपयुक्त प्रतीत होती है।

पुनरावृत्ति—इसका मुख्य ध्येय छात्रो द्वारा अर्जित किए हुए ज्ञान की जाँच करना है। यह स्तर शिक्षक कार्य की भी परीक्षा लेता है। इसमे अधिक समय नही लगाना चाहिए।

गृह कार्य—गृह कार्य का मुख्य उद्देश्य छात्रो मे स्वाध्ययन की आदत का निर्माण करना है तथा अर्जित किये हुए ज्ञान को स्थिर एव विस्तृत भी बनाना है। इसको निर्धारित करते समय शिक्षक को छात्रो की रुचि, योग्यता, वैयक्तिक विभिन्नताओ आदि का ध्यान रखना चाहिए। शिक्षक को दिए हुए गृह कार्य को प्रतिदिन जाँचना चाहिए।

इन सकेतो को और अधिक सरल एव स्पष्ट बनाने के हेतु कुछ पाठ्य-सूत्र अगले पृष्ठो मे दिए जा रहे हैं।

पाठ-योजना (1)

दिनाङ्क—१४–२–६७	समय चक्र—प्रथम
विषय—अर्थशास्त्र	समय—४० मिनट
प्रकरण—उत्पत्ति और उसके ढङ्ग	औसत आयु—१५ वर्ष
कक्षा—	विद्यालय—आर० ई० आई० हाईस्कूल, दयालबाग

सामान्य उद्देश्य—१. छात्रों को विचार-शक्ति एव ज्ञान की वृद्धि करना।

२. जीवन मे सहयोग एव आदान-प्रदान का महत्व बताना।

३. अर्थशास्त्र के परिज्ञान द्वारा छात्रो के अन्त:करण मे देश-प्रेम का अंकुर प्रस्फुटित करना एव देश की आर्थिक परिस्थितियो को सुधारने के लिए प्रेरित करना।

४. छात्रो को धनोपार्जन एव उचित रूप से धन व्यय करने की क्रियाओ का अध्ययन कराना।

५. छात्रो को उत्पत्ति, उपभोग, विनिमय एव वितरण का अर्थ समझाना।

६ छात्रो को अर्थशास्त्र के सरल सिद्धान्तो से अवगत कराना।

मुख्य उद्देश्य— छात्रो को उत्पत्ति और उसके ढंग का ज्ञान कराना।

पूर्व ज्ञान— छात्र "आवश्यकताओ" तथा "उपयोगिता" के विषय मे ज्ञान प्राप्त कर चुके हैं।

सहायक सामग्री— कक्षा-कक्ष को सहायक सामग्री, कार्य करते हुए चमार का चित्र तथा आगरा बुक स्टोर का चित्र।

प्रस्तावना— प्रश्न—मनुष्य की मुख्य मुख्य आवश्यकताएँ कौन-कौन सी हैं ?

प्रश्न—इन आवश्यकताओ की पूर्ति किस साधन के द्वारा की जाती है ?

प्रश्न—धन किस प्रकार कमाया जाता है ?

उद्देश्य कथन— आज हम अर्थशास्त्र मे उत्पत्ति और उसके ढग के विषय मे पढेगे ।

प्रस्तुतीकरण— प्रश्न—किसान किस वस्तु की उत्पत्ति करता है ?

प्रश्न—हम किसान को क्या कहेगे ?

प्रश्न—कुम्हार क्या कार्य करता है ?

प्रश्न—कुम्हार किस वस्तु की उत्पत्ति करता है ?

प्रश्न—हम कुम्हार को क्या कहेंगे ?

प्रश्न—डाक्टर क्या काय करता है ?

प्रश्न—डाक्टर को हम किस श्रेणी मे रखेंगे ?

प्रश्न—डाक्टर को उत्पादक क्यो नही कहते हैं ?

स्पष्टीकरण— इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जो लोग भौतिक पदार्थों की उत्पत्ति नही करते हैं उन्हे हम साधारण भाषा मे उत्पादक नही कहते हैं ?

प्रश्न—कुम्हार मिट्टी कहाँ से प्राप्त करता है ?

प्रश्न—मिट्टी किसकी देन है ?

प्रश्न—कुम्हार मिट्टी से क्या बनाता है ?

प्रश्न—कुम्हार ने मिट्टी से बतन बनाने मे क्या किया है ?

प्रश्न—इस बदले हुए स्वरूप से पहले हमारे लिए मिट्टी की उपयोगिता कैसी थी ?

प्रश्न—बतन बनने से मिट्टी की उपयोगिता मे क्या प्रभाव पडा ?

प्रश्न—कुम्हार ने इसमे क्या नवीन उत्पत्ति की है ?

प्रश्न—लकडी किसकी देन है ?

प्रश्न—बढई लकडी की मेज किस प्रकार बनाता है ?

प्रश्न—बढई ने इसम किस नवीन पदाथ की उत्पत्ति की है ?

प्रश्न—बढई ने लकडी को मेज बनाकर क्या किया है ?

प्रश्न—इससे तुम किस निष्कर्ष पर पहुँचते हो ?

स्पष्टीकरण— इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि मनुष्य कोई ऐसा

पदार्थ नही बना सकता है जो बिलकुल नया हो। वह केवल विद्यमान पदार्थ की उपयोगिता मे वृद्धि कर सकता है। इसी उपयोगिता-वृद्धि को अर्थशास्त्र मे उत्पत्ति कहते हैं।

(चित्र दिखाकर, अध्यापक निम्नलिखित प्रश्न करेगा)—

प्रश्न—इस चित्र मे तुम क्या देखते हो ?

प्रश्न—चमार जूता बनाने के लिए चमडा कहाँ से प्राप्त करता है ?

प्रश्न—चमार चमडे को क्या रूप दे रहा है ?

प्रश्न—जूता बनने से पहले चमडे की क्या उपयोगिता थी ?

प्रश्न—जूता बनने के पश्चात् चमडे की उपयोगिता पर क्या प्रभाव पडा ?

प्रश्न—उपयोगिता बढाने के इस ढग को क्या कहेंगे ?

स्पष्टीकरण— इससे स्पष्ट है कि वस्तु के रूप को बदल कर उसको दूसरा रूप दिया जाता है तो इसको 'रूप-परिवर्तन' उपयोगिता वृद्धि कहते हैं।

प्रश्न—लकडी कहाँ से प्राप्त होती है ?

प्रश्न—जगल मे लकडी की उपयोगिता कैसी होती है ?

प्रश्न—उपयोगिता मे वृद्धि करने के लिए लकडी को कहाँ ले जाते हैं ?

प्रश्न—लकडी की उपयोगिता मे किस प्रकार वृद्धि की गई है ?

प्रश्न—इससे तुम क्या निष्कर्ष निकालते हो ?

स्पष्टीकरण— इससे स्पष्ट है कि वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाकर उसकी उपयोगिता मे वृद्धि की जाती है। इसको 'स्थान-परिवर्तन' उपयोगिता वृद्धि कहते हैं।

प्रश्न—फसल के समय अनाज क्यो मन्दा रहता है ?

प्रश्न—अनाज अधिक होने से इसके भाव पर क्या प्रभाव पडता है ?

प्रश्न—माँग बढने पर मूल्य पर क्या प्रभाव पडता है ?

प्रश्न—अनाज सस्ता होने पर दुकानदार लोग इस अनाज का क्या करते हैं ?

प्रश्न—अनाज को भरकर रखने से क्या लाभ होता है ?

प्रश्न—इस प्रकार अनाज को रखकर क्या किया गया ?

प्रश्न—इससे तुम क्या निष्कर्ष निकालते हो ?

स्पष्टीकरण— कुछ पदार्थ हो ऐसे होते हैं जिनको जितने समय तक रखा जाये उनकी उपयोगिता बढ़ती जाती है, जैसे चावल, शराब।

चित्र दिखाते हुए अध्यापक निम्नलिखित प्रश्न करेगा—

प्रश्न—इस चित्र मे तुम क्या देखते हो ?

प्रश्न—यह आदमी क्या कर रहा है ?

प्रश्न—पुस्त पर अधिकार किसका है ?

प्रश्न—जब यह व्यक्ति पुस्तक खरीद लेगा तो अधिकार किसका हो जायेगा ?

प्रश्न—पुस्तक की उपयोगिता मे वृद्धि किस प्रकार से हुई ?

प्रश्न—इससे तुम क्या निष्कर्ष निकालते हो ?

स्पष्टीकरण— इससे स्पष्ट है कि हम अधिकार परिवर्तन के द्वारा वस्तु की उपयोगिता मे वृद्धि कर सकते हैं।

प्रश्न—अध्यापक का क्या कार्य है ?

प्रश्न—अध्यापक को अपने विषय का कैसा ज्ञान होता है ?

प्रश्न—अपने ज्ञान की उपयोगिता शिक्षक को स्वय के लिए कैसी होनी है ?

प्रश्न—एक विद्यार्थी क लिए अध्यापक के ज्ञान की उपयोगिता कैसी है ?

प्रश्न—विद्यार्थी को पढाकर शिक्षक ने क्या किया है ?

प्रश्न—अध्यापक ने विद्यार्थी की उपयोगिता को किस प्रकार बढाया ?

प्रश्न—इससे तुम क्या निष्कर्ष निकालते हो ?

स्पष्टीकरण— अपनी सेवाओ से दूसरो की उपयोगिता बढाने को सेवा द्वारा उपयोगिता वृद्धि कहते हैं। अत गायक, वकील, डाक्टर, रेलवे अधिकारी सभी

उपयोगिता मे वृद्धि करते हैं, इसलिए वे उत्पादक हैं।

प्रश्न—नवीन दवा का विज्ञापन क्यो किया जाता है ?

प्रश्न—जनता मे जानकारी के बिना दवा की उपयोगिता कैसी थी ?

प्रश्न—जनता मे दवा के ज्ञान से दवा की उपयोगिता मे क्या परिवर्तन हो गया ?

प्रश्न—इससे तुम क्या निष्कर्ष निकालते हो ?

स्पष्टीकरण— जो उपयोगिता ज्ञान का प्रसार करके सृजित की जाती है, वह 'ज्ञान उपयोगिता' कहलाती है।

पुनरावृत्ति— **लपेट श्यामपट पर**

निम्नलिखित कथनो को पढो और असत्य कथन के सम्मुख *W* तथा सत्य के सम्मुख *R* लिखो।

अर्थशास्त्र की भाषा म कृषक उत्पादक है। [ ]

साधारण बोलचाल मे डाक्टर एक उत्पादक है। [ ]

अर्थशास्त्र की भाषा मे बढई उत्पादक नहीं है। [ ]

अर्थशास्त्र की भाषा म चमार उत्पादक है। [ ]

निम्नलिखित कथनो के कई उत्तर दिए हुए हैं। जो उपयुक्त हो उस स्थान के सम्मुख √ चिन्ह लगाओ :

(१) बढई के द्वारा लकडी से मेज बनाए जाने पर लकडी की उपयोगिता बढ़ गई क्योकि अब लकडी का

(अ) समय परिवर्तन हो गया। ....

(ब) स्थान परिवर्तन हो गया। ....

(स) रूप परिवर्तन हो गया। ....

(द) अधिकार परिवतन हो गया। ....

(२) लकडी को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले आने से लकडी की उपयोगिता मे वृद्धि हो गई क्योकि अब लकडी का

(अ) रूप परिवर्तन हो गया। ....

(ब) स्थान परिवर्तन हो गया। ....

(स) समय परिवतन हो गया। ....

(३) चावलो को कुछ समय रखने से चावलो की उपयोगिता म वृद्धि हो गई क्योकि अब चावलो का

(अ) स्थान परिवर्तन हो गया। ....

(ब) अधिकार परिवर्तन हो गया। ....
(स) समय परिवर्तन हो गया। ....

श्यामपट सारांश

(१) उपयोगिता वृद्धि को अर्थशास्त्र मे उत्पत्ति कहते हैं।
उपयोगिता वृद्धि के ढग—
(अ) रूप परिवर्तन उपयोगिता।
(ब) स्थान परिवर्तन उपयोगिता।
(स) समय परिवर्तन उपयोगिता।
(द) अधिकार परिवर्तन उपयोगिता।
(इ) सेवा द्वारा उपयोगिता।
(फ) ज्ञान द्वारा उपयोगिता।

[redacted] कार्य— उत्पत्ति किसे कहते हैं? उपयोगिता वृद्धि के ढगो पर उदाहरण सहित एक लेख लिखो।

पाठ-योजना (२)

दिनाङ्क—२४-२-६७ समय चक्र—६
विषय—अर्थशास्त्र समय—४० मिनट
प्रकरण—माँग की लोच औसत आयु—१५ वर्ष
कक्षा—९ विद्यालय—एम० ए० हाई० स्कूल, आगरा।

सामान्य उद्देश्य—
१. छात्रो को अर्थशास्त्र के प्रारम्भिक सिद्धान्तो से अवगत कराना।
२. छात्रों की कल्पना-शक्ति का विकास करना।
३. छात्रो का राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण प्रदान करना।
४. छात्रो मे स्वतन्त्र अध्ययन विधि का जागरण करना।
५ छात्रो को यह ज्ञान कराना कि अर्थशास्त्र का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना ही नहीं अपितु व्यावहारिक प्रश्नो पर प्रकाश डालना भी है।
६. छात्रो को आर्थिक समस्याओ ज्ञान कराना।
७. छात्रो को यह ज्ञान कराना कि अर्थशास्त्र के अध्ययन स किस प्रकार मानव समाज को अधिक सुखी बनाया जा सकता है।

विशिष्ट उद्देश्य— छात्रों को माँग की लोच से परिचित कराना।

पूर्व ज्ञान— छात्रों को माँग का अर्थ तथा मूल्य एवं माँग का सम्बन्ध ज्ञान है।

सहायक सामग्री— लपेट श्यामपट पर लिखी समस्याएँ।

प्रस्तावना— प्रश्न—किसी वस्तु के मूल्य में वृद्धि का उसकी माँग पर क्या प्रभाव होता है ?

प्रश्न—वस्तु के मूल्य में कमी होने पर उसकी माँग कैसी हो जायेगी ?

प्रश्न—वस्तु के मूल्य में परिवर्तन का उसकी माँग पर क्या प्रभाव होता है ?

प्रश्न—वस्तु के मूल्य परिवर्तन के साथ जब उसकी माँग में परिवर्तन होता है, तो इस क्रिया को क्या कहते हैं ?

उद्देश्य कथन— वस्तु के मूल्य परिवर्तन से जब उसकी माँग में भी परिवर्तन होता है तो इस क्रिया को ही माँग की लोच कहते हैं, आज हम इसी का अध्ययन करेंगे।

प्रस्तुतीकरण— छात्राध्यापक, छात्रों के सम्मुख निम्नलिखित समस्या प्रस्तुत करके प्रश्न करेगा .

समस्या—' कमीज के रेशमी कपड़े का मूल्य ८ रुपया प्रति गज है तथा राम इस मूल्य पर एक कमीज का कपड़ा खरीदता है। जब कपड़े का भाव ६ रुपया प्रति गज हो जाता है तो वह दो कमीज का कपड़ा खरीदने लगता है किन्तु जब कपड़े का मूल्य १० रुपया प्रति गज हो जाता है तो वह एक भी कमीज का कपड़ा नहीं खरीदता।'

प्रश्न—८ रुपया प्रति गज के भाव पर राम कितनी कमीज का कपड़ा खरीदता है ?

प्रश्न—६ रुपया प्रति गज हो जाने पर कितनी कमीज का कपड़ा लेने लगता है ?

प्रश्न—कपड़े के भाव में कितने रुपए प्रति गज की कमी होती है ?

प्रश्न—यह कमी कितने प्रतिशत है ?

प्रश्न—राम मूल्य म कमी होने पर कितनी कमीज का कपड़ा खरीदता है ?

प्रश्न—राम की कपडे को माँग मे कितनी वृद्धि हो जाती है ?

प्रश्न—राम की कपडे की माँग मे कितने प्रतिशत वृद्धि हो जाती है ?

प्रश्न—इस प्रकार कपडे के मूल्य तथा माँग मे से किसमे अधिक परिवर्तन होता है ?

प्रश्न—१० रुपया प्रति गज के भाव पर राम कितने कमीज का कपडा खरीदता है ?

प्रश्न—तब राम की कपडे की माँग मे कितनी कमी हो जाती है ?

प्रश्न—इस बार कपड के मूल्य तथा माँग मे से किसमे अधिक परिवर्तन हुआ है ?

अध्यापक कथन— जब किसी वस्तु के मूल्य मे कम परिवर्तन होने पर उसकी माँग मे अधिक परिवर्तन होता है तो वस्तु की माँग अधिक लोचदार कहलाती है ।

प्रस्तुतीकरण— अब छात्राध्यापक, छात्रो के सम्मुख दूसरी समस्या प्रस्तुत करके प्रश्न करेगा ।

समस्या—"दूध का भाव ५० पैसे लिटर है तब श्याम २ लिटर दूध लेता है । जब दूध का भाव २५ पैसे लिटर हो जाता है तो वह ४ लिटर दूध खरीदने लगता है । किन्तु जब दूध का भाव १ रुपया लिटर हो जाता है तो वह केवल १ लिटर दूध ही खरीदता है ।"

प्रश्न—श्याम ५० पैसे लिटर पर कितना दूध खरीदता है ?

प्रश्न—श्याम ५० पैसे लिटर पर कुल कितने का दूध खरीदता है ?

प्रश्न—२५ पैसे लिटर पर श्याम कितना दूध खरीदता है ?

प्रश्न—इस मूल्य पर कुल कितन का दूध लेता है ?

प्रश्न—दूध की आधी कीमत हो जाने पर श्याम दूध की कितनी मात्रा अधिक खरीदने लगता है ?

प्रश्न—जब दूध १ रुपय लिटर बिकने लगता है तब श्याम कितना दूध लेने लगता है ?

प्रश्न—दूध का मूल्य ५० पैसे से १ रुपया लिटर अर्थात् दुना हो जाने पर श्याम दूध की कितनी मात्रा कम कर देता है ?

प्रश्न—दूध के मूल्य तथा माँग दोनो की घटा बढी मे क्या अनुपात है ?

अध्यापक कथन— हम देखते हैं कि दूध की माँग तथा मूल्य के परिवर्तन मे समान अनुपात है—इसी प्रकार जब *किसी वस्तु के मूल्य के अनुपात मे ही उसकी माँग में परिवर्तन होता है तो ऐसी दशा मे उस वस्तु की माँग लोचदार कहलाती है।*

प्रस्तुतीकरण— *अब छात्राध्यापक, छात्रो के सम्मुख तीसरी समस्या प्रस्तुत करेगा तथा प्रश्न पूछेगा।*

समस्या—"गेहूँ का भाव २० रुपया प्रति मन है तो एक परिवार मे ३ मन गेहूँ लगता है। जब गेहूँ का भाव २५ रुपया प्रति मन हो जाता है तो परिवार मे २½ मन गेहूँ लगने लगता है, और इसी प्रकार जब गेहूँ का भाव १५ रुपया प्रति मन हो जाता है तो परिवार मे ३½ मन गेहूँ लगने लगता है।

प्रश्न—२० रुपया प्रति मन पर परिवार मे कितना गेहूँ लगता है ?

प्रश्न—२५ रुपया प्रति मन पर परिवार मे कितना गेहूँ प्रयोग किया जाता है ?

प्रश्न—१५ रुपये पर परिवार मे कितना गेहूँ लगने लगता है ?

प्रश्न—२० रुपये से २५ रुपये प्रति मन का भाव होने पर गेहूँ की मात्रा कितनी कम परिवार मे लगती है ?

प्रश्न—अब गेहूँ के मूल्य तथा माँग मे से किसमे कम परिवर्तन होता है ?

प्रश्न—गेहूँ का मूल्य जब २० रुपये से १५ रुपये प्रति मन होता है तो परिवार मे कितना गेहूँ अधिक प्रयोग होने लगता है ?

प्रश्न—इस दशा मे भी गेहूँ के मूल्य तथा माँग मे से किसमे कम परिवर्तन होता है ?

प्रश्न—गेहूँ के मूल्य की तुलना मे माँग मे कैसा परिवर्तन हो रहा है ?

अध्यापक कथन— इस उदाहरण मे हम देखते हैं कि गेहूँ के मूल्य की तुलना मे उसकी माँग मे कम परिवर्तन हो रहा है। इसी प्रकार जब किसी वस्तु के मूल्य की तुलना मे उसकी माँग मे कम परिवर्तन होता है तो उस वस्तु की माँग को कम लोचदार कहते हैं।

प्रस्तुतीकरण— अब छात्राध्यापक, छात्रो के सम्मुख चौथी समस्या प्रस्तुत करेगा तथा प्रश्न पूछेगा।

समस्या—"चीनी का भाव १ रुपया किलो है तब एक अध्यापक के परिवार मे ७ किलो चीनी प्रति माह लगती है किन्तु कुछ समय पश्चात् उसी भाव पर ६ किलो चीनी लगने लगती है तथा इसी प्रकार कुछ समय के लिए ५ किलो प्रति माह लगने लगती है।"

प्रश्न—चीनी का भाव क्या है ?

प्रश्न—पहिले अध्यापक के परिवार मे कितनी चीनी लगती है ?

प्रश्न—कुछ समय पश्चात् कितनी चीनी का प्रयोग होने लगता है ?

प्रश्न—अन्त मे अध्यापक के परिवार मे कितनी चीनी लगती है ?

प्रश्न—चीनी के भाव मे तीनो दशाओ म क्या परिवतन होता है ?

प्रश्न—चीनी के मूल्य तथा माँग मे से किसमे परिवर्तन होता है ?

अध्यापक कथन— *किसी वस्तु के मूल्य के स्थिर रहने पर भी जब* उसकी माँग म परिवर्तन होता रहता है तो उस वस्तु को माँग पूर्णत लोचदार कहलाती है। किन्तु यह अवस्था काल्पनिक है।

प्रस्तुतीकरण— छात्राध्यापक, छात्रो के सम्मुख अब पाँचवी *समस्या प्रस्तुत करके प्रश्न करेगा।*

समस्या—"नमक का मूल्य ६ पैसे किलो है, इस मूल्य पर एक परिवार मे दो किलो नमक

लगता है। किन्तु जब नमक का मूल्य १२ पैसे किलो हो जाता है तो भी परिवार मे २ किलो नमक ही प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार नमक का मूल्य ३ पैसे किलो होने पर भी परिवार मे २ किलो नमक का ही प्रयोग होता है।"

प्रश्न—६ पैसे किलो के भाव पर परिवार मे कितना नमक लगता है ?

प्रश्न—नमक का भाव १२ पैसे किलो हो जाने पर परिवार मे कितना नमक प्रयोग होने लगता है ?

प्रश्न—नमक के मूल्य मे वृद्धि का उसकी प्रयोग की मात्रा पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

प्रश्न—३ पैसे किलो के भाव पर परिवार कितना नमक प्रयोग करता है ?

प्रश्न—नमक के मूल्य मे कमी का उसकी प्रयोग की मात्रा पर क्या प्रभाव होता है ?

प्रश्न—मूल्य के उतार-चढाव का उसकी माँग पर क्या प्रभाव होता है ?

कथन— जब किसी वस्तु के मूल्य मे परिवर्तन होने पर भी उसकी माँग मे कोई परिवर्तन नही होता है तो उस वस्तु की माँग पूर्णतः बेलोच कहलाती है।

पुनरावृत्ति— प्रश्न—जब किसी वस्तु के मूल्य मे थोड़ा परिवर्तन होने पर उसकी माँग मे अधिक परिवर्तन होता है तब उस वस्तु की माँग की लोच कैसी होती है ?

प्रश्न—यदि मूल्य के अनुपात मे ही वस्तु की माँग मे परिवर्तन हो तो माँग की लोच कैसी होगी ?

प्रश्न—मूल्य मे अधिक परिवर्तन होने पर भी माँग मे कम परिवर्तन हो तब माँग की लोच कैसी होगी ?

प्रश्न—वस्तु के मूल्य मे स्थिरता रहने पर भी यदि उसकी माँग मे परिवर्तन हो तो उसकी माँग की लोच कैसी होगी ?

प्रश्न—वस्तु के मूल्य मे परिवर्तन होने पर भी यदि उसका माँग मे कोई परिवर्तन न हो तो उसकी माँग की लोच क्या कहलाएगी ?

श्यामपट सारांश

१. वस्तु के मूल्य मे कम परिवर्तन स्वरूप यदि उसकी माँग मे अधिक परिवर्तन होता है तो उसकी माँग अधिक लोचदार कहलाती है।
२. मूल्य के अनुपात मे ही यदि माँग मे परिवर्तन होता है तो वस्तु की माँग लोचदार कहलाती है।
३. मूल्य मे परिवर्तन होने पर भी उसकी माँग मे कम परिवर्तन होता है तो वस्तु की माँग कम लोचदार कहलाती है।
४. मूल्य के स्थिर रहने पर भी यदि वस्तु की माँग मे परिवर्तन होता रहता है तो वस्तु की माँग पूर्णत लोचदार कहलाती है।
५. मूल्य मे परिवर्तन होने पर भी यदि माँग मे कोई परिवर्तन न हो तो वस्तु की माँग बेलोचदार कहलाती है।

गृह-कार्य— "माँग की लोच एव उसके प्रकार" पर उदाहरण द्वारा स्पष्ट करते हुए एक लेख लिखो।

पाठ-योजना (३)

दिनाङ्क—२३-२-६७ समय चक्र—६
विषय—अर्थशास्त्र समय—४० मिनट
प्रकरण—*माँग का नियम* *औसत आयु*—१८ वर्ष
कक्षा—११ वाणिज्य विद्यालय—आर० ई० आई० इण्टर कालिज, दयालबाग।

सामान्य उद्देश्य—१. छात्रो को दैनिक जीवन के आर्थिक पक्ष के विषय मे सोचने के लिए प्रेरित करना।
२. छात्रो को अपने देश के आर्थिक ढाँचे से परिचित कराना।
३. वस्तुओ के उत्पादन, वितरण, विनिमय, उपभोग आदि का सामान्य ज्ञान कराना।
४ अर्थशास्त्र के सरल सिद्धान्तो एव नियमो से परिचित कराते हुए दैनिक जीवन मे उनका उपयोग बताना।

५. जीवन मे सहयोग, आदान-प्रदान एवं विनिमय का महत्त्व बताना ।

६. किसानो, मजदूरो की समस्याओ से परिचित कर कर उनके प्रति सहानुभूति उत्पन्न करना ।

विशिष्ट उद्देश्य— छात्रो को माँग के नियम का ज्ञान कराना ।

सहायक सामग्री—
१. माँग के नियम की लपेट श्यामपट पर तालिका ।
२ माँग के नियम का रेखाचित्र द्वारा प्रदर्शन ।
३. माँगो के नियम को समझाता हुआ मॉडल ।
४. माँग के नियम की लपेट श्यामपट पर मार्शल की परिभाषा ।

पूर्व ज्ञान— छात्र आवश्यकता तथा साधारण बोलचाल की भाषा मे माँग के अर्थ से परिचित हैं ।

प्रस्तावना— प्रश्न—माँग शब्द से क्या तात्पर्य है ?

प्रश्न—आप अपने दैनिक जीवन की आवश्यक वस्तुओ को कहाँ से लाते हैं ?

प्रश्न—यदि इन वस्तुओ का मूल्य घट जाए तो माँग पर क्या प्रभाव पडेगा ?

उद्देश्य कथन— आज हम इसी मूल्य परिवर्तन से सम्बन्धित माँग के नियम का अध्ययन करेंगे ।

प्रस्तुतीकरण— छात्राध्यापक छात्रो के समक्ष एक समस्या रख कर निम्नलिखित प्रश्न करेगा .

समस्या—मान लीजिए कि नारंगियो का मौसम अभी-अभी शुरू हुआ है और इनका भाव भी बाजार मे काफी अधिक है तो—

प्रश्न—इस समय कितने व्यक्ति नारंगियाँ खरीदेंगे ?

प्रश्न—यदि बाद मे नारंगियो का भाव कुछ गिर जाये तो नारंगियो की माँग मे क्या परिवर्तन होगा ?

प्रश्न—यदि नारंगियो का भाव बढ जाए तो नारंगियो की माँग मे क्या परिवर्तन होगा ?

प्रश्न—नारंगियो के भाव के घटने और बढने से नारंगियो की माँग पर क्या प्रभाव पडता है ?

प्रश्न—इससे तुम क्या निष्कर्ष निकालते हो ?

स्पष्टीकरण— इससे स्पष्ट है कि भाव के घटने पर अधिक व्यक्ति नारंगियो को खरीदते हैं और भाव के बढ़ने पर कम व्यक्ति नारंगियाँ खरीदते हैं ।

छात्राध्यापक मूल्य के परिवर्तन द्वारा माँग पर पड़े प्रभाव को एक तालिका द्वारा प्रदर्शित करेगा और निम्नलिखित प्रश्न पूछेगा—

नारंगियों की माँग तालिका

नारंगियो का मूल्य (रुपयो मे)	नारंगियो की माँग (किलो मे)
६	२
५	३
४	५
३	६
२	७

प्रश्न—प्रस्तुत तालिका पर सबसे ऊपर क्या लिखा हुआ है ?

प्रश्न—तालिका के प्रथम कोष्ट मे क्या प्रदर्शित किया गया है ?

प्रश्न—तालिका के द्वितीय कोष्ट मे क्या प्रदर्शित किया गया है ?

प्रश्न—६ रु० मूल्य होने पर नारंगियो की कितनी माँग है ?

प्रश्न—५ रु० मूल्य होने पर नारंगियो की कितनी माँग है ?

प्रश्न—४ रु० मूल्य होने पर नारंगियो की कितनी माँग है ?

प्रश्न—३ रु० मूल्य होने पर नारंगियो की कितनी माँग है ?

प्रश्न—२ रु० मूल्य होने पर नारंगियो की कितनी माँग है ?

प्रश्न—६ रु० और २ रु० मूल्य से प्राप्त होने वाली नारंगियो की माँग से क्या परिणाम निकलता है ?

स्पष्टीकरण— इससे स्पष्ट है कि लगातार मूल्य के घटने पर नारंगियो की माँग बढ़ती जाती है और मूल्य के बढ़ने पर नारंगियो की माँग घटती जाती है ।

छात्राध्यापक छात्रों की सहायता से माँग के नियम का रेखाचित्र बनायेगा तथा निम्नलिखित प्रश्न करेगा—

प्रश्न—ox—axis पर क्या प्रदर्शित किया गया है ?

प्रश्न—oy—axis पर क्या प्रदर्शित किया गया है ?

प्रश्न—६ रु० कीमत होने पर नारंगियों की माँग कितनी है ?

प्रश्न—प्राप्त अंकों को रेखाचित्र पर किस प्रकार अंकित किया जायगा ?

प्रश्न—जब नारंगियों की कीमत ५ रु० है तो माँग कितनी है ?

प्रश्न—इसको रेखाचित्र पर किस प्रकार प्रदर्शित करेंगे ?

प्रश्न—४ रु० मूल्य पर नारंगियों की माँग कितनी है ?

प्रश्न—इसे रेखाचित्र पर किस प्रकार अंकित करेंगे ?

प्रश्न—३ रु० मूल्य पर नारंगियों की माँग कितनी है ?

प्रश्न—इसे रेखाचित्र पर किस प्रकार अंकित करेंगे ?

प्रश्न—जब नारंगियों की कीमत २ रु० है तो माँग कितनी है ?

प्रश्न—इसे रेखाचित्र पर किस प्रकार प्रदर्शित करेंगे ?

प्रश्न—इन अंकित बिन्दुओं का क्या करेंगे ?

प्रश्न—इस प्रकार यह बनी हुई रेखा कौन सी रेखा कहलाएगी ?

प्रश्न—यह रेखा किस प्रवृत्ति को प्रकट कर रही है ?

प्रश्न—आप इससे माँग का क्या नियम निकालते हैं ?

स्पष्टीकरण— इससे स्पष्ट है कि जब किसी वस्तु का मूल्य घट आता है तो उसकी माँग बढ़ जाती है और जब किसी वस्तु का मूल्य बढ़ जाता है तो उसकी माँग घट जाती है।

छात्राध्यापक छात्रों को माँग का बना हुआ मॉडल दिखाकर निम्नलिखित प्रश्न करेगा—

प्रश्न—प्रस्तुत मॉडल पर क्या लिखा हुआ है ?

प्रश्न—जब मूल्य कम है तो माँग कैसी है ?

प्रश्न—जब मूल्य अधिक है तो माँग कैसी है ?

प्रश्न—इस प्रकार मूल्य और माँग के विपरीत सम्बन्ध से क्या प्रकट होता है ?

स्पष्टीकरण— इससे स्पष्ट है कि जब मूल्य कम है तो माँग अधिक है परन्तु इसके विपरीत जब मूल्य अधिक है तो माँग कम है।

प्रश्न—इस प्रकार मूल्य और माँग मे कैसा सम्बन्ध है ?

स्पष्टीकरण— अत माँग और मूल्य मे एक प्रकार का विपरीत सम्बन्ध है।

छात्राध्यापक लपेट श्यामपट पर लिखी हुई मार्शल की परिभाषा को पढवा कर निम्नलिखित प्रश्न करेगा—

"यदि अन्य बातें समान रहें तो मूल्य के कम होने पर माँग मे वृद्धि और बढ़ने पर माँग मे कमी हो जाती है।" —मार्शल

प्रश्न—मार्शल की परिभाषा की क्या विशेषता है ?

स्पष्टीकरण— उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है, *"कीमत घटते ही वस्तु की माँग बढ जाती है और इसके विपरीत कीमत बढने ही वस्तु की माँग घट जाती है।" यही माँग का नियम है।*

पुनरावृत्ति— प्रश्न—माँग का नियम क्या है ?

प्रश्न—माँग और मूल्य मे कैसा सम्बन्ध है ?

प्रश्न—माँग की रेखा किस प्रवृत्ति को प्रकट करती है ?

श्यामपट सारांश

१. कीमत घटते ही वस्तु की माँग बढ जाती है और कीमत बढते ही वस्तु की माँग घट जाती है।
२. माँग और मूल्य मे विपरीत सम्बन्ध है।
३. माँग की रेखा वक्र-स्थिति को प्रकट करती है।

गृह कार्य— माँग के नियम का रेखाचित्र द्वारा स्पष्टीकरण करो।

पाठ-योजना (४)

दिनाङ्क—१६-२-६७
विषय—अर्थशास्त्र
प्रकरण—क्रमागत उपयोगिता ह्रास नियम
कक्षा—११ वाणिज्य

समय चक्र—५
समय—४० मिनट
औसत आयु—१८ वर्ष
विद्यालय—आर० ई०आई० इण्टर कालिज, दयालबाग।

सामान्य उद्देश्य—
१. छात्रों को अर्थशास्त्र का सामान्य ज्ञान कराना।
२. उन्हें अपने देश के आर्थिक ढाँचे एवं उसकी समस्याओं को सुलझाने के ढंगों से परिचित कराना।
३. छात्रों को दैनिक जीवन के आर्थिक पक्ष के विषय में सोचने को प्रेरित करना।
४. वस्तुओं के उत्पादन, वितरण, उपभोग इत्यादि का ज्ञान प्रदान करना।
५. जीवन में सहयोग, आदान-प्रदान एवं विनिमय का महत्त्व बताना।
६. छात्रों की बौद्धिक, तार्किक, वैचारिक एवं मानसिक शक्तियों का विकास करना।
७. उनमें आत्म-निर्भरता, सदाचार एवं मौलिकता का विकास करना।
८. किसानों, मजदूरों की समस्याओं से परिचित कराकर उनके प्रति सहानुभूति उत्पन्न करना।

विशिष्ट उद्देश्य— छात्रों को क्रमागत-उपयोगिता-ह्रास नियम का ज्ञान कराना।

सहायक सामग्री—
१. ग्राफ बोर्ड और
२. ग्राफ पेपर्स।

पूर्व ज्ञान— छात्र उपभोग तथा उपयोगिता के विषय में जानते हैं।

प्रस्तावना—
प्रश्न—उपयोगिता किसे कहते हैं?
प्रश्न—उपयोगिता कितने प्रकार की होती है?
प्रश्न—सीमान्त उपयोगिता से आप क्या समझते हैं?
प्रश्न—उपभोग की जाने वाली वस्तु की अन्तिम इकाइयों से कैसी उपयोगिता प्राप्त होती है?

प्रश्न—इस घटती हुई उपयोगिता के नियम को अर्थ-शास्त्र मे क्या कहते हैं ?

उद्देश्य कथन — आज हम क्रमागत-उपयोगिता-ह्रास नियम के विषय में अध्ययन करेंगे।

प्रस्तुतीकरण— छात्राध्यापक छात्रों के सम्मुख पानी का प्रयोग करके क्रमागत-उपयोगिता-ह्रास नियम को सिद्ध करेगा। वह रमेश को एक गिलास पानी पीने के लिए देकर निम्नलिखित प्रश्न करेगा—

प्रश्न—पानी के गिलास से तुमको कितनी उपयोगिता मिली ?

छात्राध्यापक पानी का दूसरा गिलास देकर पूछेगा—

प्रश्न—पानी के इस गिलास से तुमको कितनी उपयोगिता प्राप्त हुई ?

छात्राध्यापक पानी का तीसरा गिलास देकर प्रश्न करेगा—

प्रश्न—पानी के इस गिलास से तुमको कितनी उपयोगिता मिली ?

छात्राध्यापक पानी का चौथा गिलास देकर पूछेगा—

प्रश्न—इस गिलास से तुमको कितनी उपयोगिता प्राप्त हुई ?

छात्राध्यापक पानी का पाँचवाँ गिलास देगा जिसे रमेश पीने से मना कर देगा, तब छात्राध्यापक प्रश्न करेगा—

प्रश्न—पानी के इस प्रयोग से तुम क्या निष्कर्ष निकालते हो ?

स्पष्टीकरण— इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जैसे-जैसे हमारे पास किसी वस्तु की मात्रा बढ़ती जाती है वैसे-वैसे अन्य बातें समान रहने पर, उस वस्तु की प्रत्येक अगली इकाई की उपयोगिता घटती जाती है। इसी को अर्थशास्त्र मे क्रमागत-उपयोगिता-ह्रास नियम कहते हैं।

उदाहरण— छात्राध्यापक इस नियम का एक उदाहरण द्वारा स्पष्टीकरण करेगा। मान लीजिए तुम बहुत भूखे हो—

प्रश्न—जब तुम पहली रोटी खाओगे तो उससे तुम्हे कितनी उपयोगिता मिलेगी ?

अध्यापक कथन— माना पहली रोटी से मिलने वाली उपयोगिता १०० है।

प्रश्न—जब तुम दूसरी रोटी खाओगे तो तुम्हे उससे कितनी उपयोगिता प्राप्त होगी ?

अध्यापक कथन— माना दूसरी रोटी से ८० के बराबर उपयोगिता मिलती है।

प्रश्न—तीसरी रोटी के खाने से तुम्हे कितनी उपयोगिता मिलेगी ?

अध्यापक कथन— मान लिया तीसरी रोटी से ६० उपयोगिता मिलती है।

प्रश्न—चौथी रोटी खाने पर तुम्हे कितनी उपयोगिता प्राप्त होगी ?

अध्यापक कथन— माना चौथी रोटी से मिलने वाली उपयोगिता ३० है।

प्रश्न—जब तुम पाँचवी रोटी खाओगे तो तुम्हें उस रोटी से कितना उपयोगिता मिलेगी ?

अध्यापक कथन— माना पाचवी रोटी से १० के बराबर उपयोगिता मिलती है।

प्रश्न—छठी रोटी के खाने से तुमको कितनी उपयोगिता प्राप्त होगी ?

अध्यापक कथन— मान लिया छठी रोटी से मिलने वाली उपयोगिता ० है।

प्रश्न—यदि तुम्हे सातवी रोटी और खाने को दी जाये तो उससे तुमको कैसी उपयोगिता मिलेगी ?

अध्यापक कथन— माना सातवी रोटी से—१० उपयोगिता मिलती है।

तालिका द्वारा प्रदर्शन

उपर्युक्त उदाहरण को तालिका द्वारा भी प्रदर्शित कर सकते हैं।

प्रश्न—इन इकाइयो से कितने खाने वाली तालिका बनाई जा सकती है ?

प्रश्न—पहले खाने मे क्या लिखा जाएगा ?

प्रश्न—दूसरे खाने मे क्या लिखेंगे ?

प्रश्न—*पहली रोटी से कितनी उपयोगिता मिलती है ?*

प्रश्न—दूसरी रोटी से कितनी उपयोगिता प्राप्त होती है ?

प्रश्न—तीसरी रोटी कितनी उपयोगिता प्रदान करती है ?

प्रश्न—चौथी रोटी से कितनी उपयोगिता मिलती है ?

प्रश्न—पाँचवी रोटी कितनी उपयोगिता देती है ?

प्रश्न—छठी रोटी से कितनी उपयोगिता प्राप्त होती है ?

प्रश्न—सातवी रोटी से कितनी उपयोगिता मिलती है ?

क्रमागत-उपयोगिता-ह्रास-नियम की तालिका

रोटी की इकाइयाँ	प्राप्त उपयोगिता
१	१००
२	८०
३	६०
४	३०
५	१०
६	०
७	—१०

रेखाचित्र द्वारा निरूपण

उपयु क्त तालिका से छात्राध्यापक छात्रो की *सहायता से ग्राफ बोर्ड पर क्रमागत-उपयोगिता-ह्रास नियम का रेखाचित्र बनाएगा और छात्रो को स्वयं बनाने का भी आदेश देगा ।*

छात्राध्यापक छात्रो से निम्नलिखित प्रश्न करेगा

प्रश्न—रोटी की इकाई किस रेखा पर दिखाई जाएगी ?

प्रश्न—प्राप्त उपयोगिता को किस रेखा पर दिखाया जाएगा ?

प्रश्न—रोटी को एक इकाई कितने छोटे खाने के बराबर मानी जाएगी ?

प्रश्न—उपयोगिता की १० मात्रा कितने छोटे खाने के बराबर मानी गई है ?

प्रश्न—रोटी की पहली इकाई से कितनी उपयोगिता प्राप्त होती है ?

प्रश्न—इसको हम रेखाचित्र मे कहाँ अङ्कित करेंगे ?

प्रश्न—दूसरी इकाई से कितनी उपयोगिता मिलती है ?

प्रश्न—इसको रेखाचित्र मे कहाँ पर अङ्कित किया जाय ?

प्रश्न—तीसरी रोटी की इकाई से कितनी उपयोगिता प्राप्त होती है ?

प्रश्न—इस प्राप्त उपयोगिता को रेखाचित्र मे कहाँ अङ्कित किया जाएगा ?

प्रश्न—पाँचवी रोटी कितनी उपयोगिता प्रदान करती है ?

प्रश्न—इसको रेखाचित्र मे कहाँ पर अङ्कित करेंगे ?

प्रश्न—रोटी की छठी इकाई से कितनी उपयोगिता प्राप्त होती है ?

प्रश्न—इस उपयोगिता को रेखाचित्र मे कहाँ अङ्कित किया जाएगा ?

प्रश्न—सातवी रोटी से कितनी उपयोगिता मिलती है ?

प्रश्न— – १० उपयोगिता को किस प्रकार प्रदर्शित किया जाएगा ?

प्रश्न—प्राप्त समस्त बिन्दुओ का क्या किया जाएगा ?

प्रश्न—इन समस्त बिन्दुओ के मिलाने से क्या बन जाता है ?

प्रश्न—यह वक्र रेखा क्या प्रदर्शित करती है ?

पुनरावृत्ति—प्रश्न—क्रमागत-उपयोगिता-ह्रास नियम से आप क्या समझते हैं ?

प्रश्न—ऋणात्मक उपयोगिता किसे कहते हैं ?

प्रश्न—अर्थशास्त्र मे कुल उपयोगिता का क्या अर्थ है ?

श्यामपट सारांश

१. जैसे-जैसे हमारे पास किसी वस्तु की मात्रा बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे अन्य बातें समान रहने पर उस वस्तु की प्रत्येक अगली इकाई की उपयोगिता घटती जाती है।

२. ऋणात्मक उपयोगिता उसे कहते हैं जिससे उपभोक्ता को अनुपयोगिता प्राप्त होती है।

३. समस्त इकाइयों के उपभोग से मिलने वाली उपयोगिता के योग को कुल उपयोगिता कहते हैं।

गृह कार्य—क्रमागत-उपयोगिता-ह्रास नियम को रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट कीजिए।

विशेष अध्ययन योग्य पुस्तकें

लेखक	पुस्तक	प्रकाशक
Bining & Bining	"Teaching the Social Studies in Secondary Schools"	Mc Graw Hill Book Co, New York, Toronto
Hemming	'The Teaching of Social Studies in Secondary School"	Longmans Green & Co, London New York
Highet G	"The Art of Teaching'	Methuen & Co Ltd, London, 1951
Hamley, H R	: 'The Teacher's Lesson Book'	• MacMillan & Co Ltd Bombay, Madras, London, 1931
Michaelis John, U	"Social Studies for Children in a Democracy"	Prentice-Hall Inc Englewood Cliffs, N Y 1965
Moffat, M P	"Social Studies Instruction'	Prentice-Hall Inc New York
Nesiah, K	"Social Studies in the School'	Geoffrey Cumberlege Oxford University Press, 1954
Wesley, E B	"Teaching Social Studies in Elementary Schools"	D C Heath and Company, Boston, 1952
Wesley, E B	"Teaching Social Studies in High Schools"	D C Heath and Company, Boston
Govt of India	"The Secondary Education Commission Report'	Ministry of Education, Publications Division, Delhi, 1953